केंद्रीय विद्यालय संगठन , क्षेत्रीय कार्यालय , मुम्बई संभाग

अध्ययन सामग्री

हिंदी (आधार)

कक्षा – बारहवीं

सत्र – 2023-24

अपठित गद्यांश एवं पद्यांश पर आधारित अध्ययन सामग्री

अपठित गद्यांश

1) टेलीविजन मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम है। दिन प्रतिदिन विश्व में घटने वाली घटनाओं का दर्पण है। ज्ञान वर्धन का सशक्त माध्यम है। विद्यार्थियों को सचित्र शिक्षा देने वाला श्रेष्ठ शिक्षक है। विज्ञापन द्वारा प्रचारित वस्तु की बिक्री वृद्धि का प्रभावकारी ढ़ंग है। दिन भर के परिश्रम के पश्चात् थका-हारा मानव घर पहुंचकर टेलीविजन का स्विच ऑन करता है, तो अज्ञात स्फूर्ति और उल्लास उसके मन मस्तिष्क पर उतर आता है, मानो टेलीविजन के नाम को ही वह मनोरंजन की संज्ञा देने लगा हो। पिक्चर, नाटक, हास्य-व्यंग्य एकांकी आदि देखने के लिए सिनेमाघर, नाटक-भवन या सांस्कृतिक केंद्रों में जाने की जरूरत नहीं। वाहनों के धक्के खाने, टिकट घर की खिड़की की भीड़-भाड़ में पिसने और जेब खाली करने की आवश्यकता नहीं। समय पर पहुंच पाने का झंझट नहीं, टिकट मिल भी सकेगा या नहीं का मानसिक द्वंद्व नहीं।
विश्व में कहीं भी कुछ हुआ, उसकी खबर तो आप अखबारों में पढ़ लेते हैं, किंतु उसकी हू-बहू घटित घटना को देखकर आपका मन भाव-विभोर हो जाता है। वर्ल्ड ट्रेड टावर पर हमला हुआ अमेरिका में, उसका पूरा का पूरा ज्यों का त्यों चित्र आप देख रहे हैं, अपने टेलीविजन पर। ओलंपिक खेल हुए मास्को में, उसका जीवंत चित्र देख रहे हैं, भारत में। इसी प्रकार क्रिकेट मैच हॉकी मैच, 26 जनवरी की परेड, 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री का संदेश आदि सब कुछ आप आंखों से साक्षात् देख रहे हैं। टेलीविजन ज्ञानवर्धन का अतुलनीय साधन है। पढ़ने सुनने में जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह भूला भी जा सकता है किंतु जो दृश्य देखा जाता है, वह शीघ्र भूल पाना सहज नहीं होता।

1) प्रस्तुत गद्यांश..... उपयोगिता को उद्घाटित करता है-

(क) बीट (ख) दृश्य माध्यम

(ग) श्रव्य माध्यम (घ) इनमें से कोई नहीं।

2) ज्ञान वर्धन का अतुलनीय साधन कहा गया है-

(क) अखबार (ख) टेलीविजन

(ग) मोबाइल (घ) लैपटॉप

3) टेलीविजन विश्व में घटने वाली घटनाओं का है-

(क) सशक्त माध्यम (ख) दर्पण

(ग) इतिहास (घ) सूत्रधार

4) 'सशक्त' शब्द में उपसर्ग है-

(क) स (ख) अक्त

(ग) सह (घ) इनमें से कोई नहीं

5) सांस्कृतिक में प्रत्यय है।

(क) ईय (ख) इक

(ग) अंक (घ) इनमें से कोई नहीं

6) गद्यांश में शिक्षक के समान सचित्र शिक्षा देने वाला किसको बताया है?

(क) परंपरागत ज्ञान को (ख) चित्रों को

(ग) टेलीविजन को (घ) रेडियो को

7) सिनेमाघरों में जाने के लिए मनुष्य को कौन सी कठिनाई का सामना करना पड़ता था?

(क) वाहनों के धक्के खाना (ख) खिड़की की भीड़भाड़

(ग) समय पर पहुँचने का झंझट (घ) उपर्युक्त सभी

8) टेलीविजन से प्राप्त ज्ञान स्थायी क्यों हो जाता है?

(क) सुनने के कारण (ख) पढ़ने के कारण

(ग) सुनने व देखने के कारण (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

9) थके-हारे मनुष्य पर टेलीविजन क्या प्रभाव डालता है?

(क) मनुष्य सो जाता है

(ख) अज्ञात स्फूर्ति और उल्लास का अनुभव करता है

(ग) दुखी हो जाता है

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

10) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(क)मानव जीवन (ख) टेलीविजन का महत्त्व

(ग) मनोरंजन के कारण (घ) भाग दौड़ भरा जीवन

उत्तर:

1.(ख) 2.(ख) 3.(ख) 4.(क) 5.(ख)
6.(ग) 7.(घ) 8.(ग) 9.(ख) 10.(ख)

2**)** अवकाश से तात्पर्य है छुट्टी का समय। उस समय व्यक्ति इस बात के लिए स्वतंत्र होता है कि वह कोई काम करे या न करे। यह समय दैनिक कामों और उत्तरदायित्वों से मुक्ति का समय होता है। आमतौर पर व्यक्ति अवकाश का समय शौक शुगल के कार्यों मे बिताता है। लोग सैर के लिए बाहर जाते हैं, बागवानी आदि करते है अथवा ताश खेलते है या घर में खेले जाने वाले खेल खेलते हैं। कुछ लोग अपने खाली समय मे कुछ नहीं करते, वे पूरा आराम करते हैं। यह ऐसे लोगों के लिए आवश्यक होता है जो शारीरिक एव मानसिक परिश्रम के कार्य करते हैं। आराम करना इसलिए अच्छा होता है जिससे व्यक्ति कुछ समय के बाद फिर से अपना काम करने के लिए तैयार हो सके। खाली समय के उपयोग के अन्य तरीके भी हैं। उदाहरण के रूप मे कई लोग ऐसे परिश्रम वाले काम भी अपने अवकाश के समय में करते हैं जो उनके काम से बिलकुल भिन्न हों। ऐसे लोग काम मे परिवर्तन लाने के लिए दूसरे प्रकार का काम करते हैं। यह वास्तव मे अपने अवकाश का सर्वोत्तम उपयोग है। आराम का यह अर्थ नहीं है कि हम सभी क्रियाकलापों को छोड़ दें। यह केवल काम का परिवर्तन है जिससे काफी राहत मिलती है जो शरीर,मस्तिष्क और मानसिक स्थिति के लिए अच्छी है। यह अवकाश का रचनात्मक उपयोग है। अत अपने शौक को पूरा करना अपने अवकाश का सबसे अच्छा उपयोग होता है। दुर्भाग्य की बात यह है कि लोग अवकाश का ठीक प्रयोग करना नहीं जानते। हममें से अधिकांश लोग अपने खाली समय को व्यर्थ गवां देते हैं। हम समझते हैं कि कुछ न करना हमारे खाली समय का सबसे अच्छा उपयोग है। परंतु इससे हमारी बेचैनी बढ़ती है। ऐसा कहा जाता है कि बेकार आदमी का मस्तिष्क भूत का बंगला होता है, सर्वथा सत्य है। यदि हम खाली बैठते हैं तो हमारी इच्छाएं और कल्पनायेँ अपना कार्य शुरू कर देती हैं। उनको नियंत्रित करने का एकमात्र उपाय यह है कि उन्हे किसी न किसी प्रकार के श्रम द्वारा नियंत्रित किया जाए। इसलिए यह आवश्यक है कि जो समय हमे खाली मिले हमे चुपचाप अथवा बेकार बैठकर नहीं गवाना चाहिए।अवकाश के समय को गुजारने के लोकप्रिय तरीके उपन्यास पढ़ना, सिनेमा देखना व शिकार खेलना आदि हैं। यदि ये सब काम केवल समय काटने के लिए किए जाएँ तो अच्छे हैं। परंतु भय यह है कि हम इनके दास बन जाते हैं। हमारे शौक केवल अवकाश के समय को बिताने का एक उपाय मात्र नहीं होने चाहिए बल्कि ये ऐसे होने चाहिए कि जिससे समय उपयोगी ढंग से बीते ।ऐसा कहा जाता है कि विश्व के पूर्वी देशों का जीवन आराम का है। यह बात सच है। पश्चिम मे समय ही पैसा है और समय का हिसाब मिनटों और सेकेंडों मे रखा जाता है। संभवत येही कारण है कि कई क्षेत्रों मे पश्चिम बहुत आगे है। भारत के लोगों ने हाल ही मे समय के मूल्य को पहचानना शुरू किया है। यदि हम एक प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं तो हमे अपने समय का, इस समय की अपेक्षा अधिक युक्ति संगत रूप से प्रयोग करना होगा। यदि प्रत्येक नागरिक राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में अपना अवकाश का समय लगाए, चाहे उसका योगदान कितना ही कम क्यों न हो, तो इसमे संदेह नहीं कि हमारी योजनाओं के सफल होने की संभावनाएं अधिक हैं।

1. **अवकाश में आराम करने का क्या लाभ होता है?**

(क) कर्तव्य से विमुख होकर पथ-विमुख हो जाता है

(ख) कुछ समय के बाद फिर से अपना काम करने के लिए तैयार हो जाता है

(ग) अवकाश जीवन के लिए आराम हेतु अपेक्षित है

(घ) आराम काम का परिणाम है

2. बिना कुछ किए खाली बैठने का क्या परिणाम होता है?

(क) हम भविष्य के लिए तैयार होते हैं

(ख) जीवन में खाली कभी-कभी बैठना आवश्यक है

(ग) इससे हमारी बेचैनी बढ़ती है

(घ) मन कर्तव्य की ओर उन्मुख होकर लक्ष्य को प्राप्त करता है

3. 'भूत का बंगला' किसे कहा गया है?

(क) खाली बैठे हुए मनुष्य का मस्तिष्क

(ख) कर्तव्यशील पथ

(ग) भूतों के रहने का स्थान

(घ) भूत के बंगले में बैठे खाली मनुष्य को

4. पश्चिमी देशों ने किस प्रकार प्रगति की है?

(क) विज्ञान और नई तकनीकी के आधार पर

(ख) आपसी सहयोग और एकता से

(ग) आधुनिक विकासवादी सोच से

(घ) समय के महत्व को पहचानकर

5. राष्ट्र निर्माण के लिए क्या आवश्यक है?

(क) राष्ट्र में धर्म और जाति की स्थापना

(ख) राष्ट्र को विभाज्य बनाए रखने की मानसिकता

(ग) राष्ट्र-धर्म निर्वहन आर राष्ट्रीयता की भावना

(घ) राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों मे नागरिकों की सफल भागीदारी व समय का सदुपयोग

6. 'उनको नियंत्रित करने का एकमात्र उपाय यह है कि उन्हे किसी न किसी प्रकार के श्रम द्वारा नियंत्रित किया जाए?'- इस पंक्ति में उन्हें का प्रयोग किसके लिए हुआ है?

(क) भाव और विचार

(ख) इच्छाओं और कल्पनाओं

(ग) शरीर और राष्ट्र

(घ) कर्तव्य और आलस्य

7. अवकाश के समय को गुजारने के लोकप्रिय तरीके हैं-

(क) दोस्तों से मिलना

(ख) सैर पर जाना

(ग) सोना और नहाना

(घ) उपन्यास पढ़ना, सिनेमा देखना व शिकार खेलना

8. 'मानसिक' शब्द में प्रत्यय है-

(क) निक

(ख) इक

(ग) ईक

(घ) सिक

9. 'हमारे शौक केवल अवकाश के समय को बिताने का एक उपाय मात्र नहीं होने चाहिए बल्कि ये ऐसे होने चाहिए कि जिससे समय उपयोगी ढंग से बीते।'-पंक्ति का भाव है-

(क) लक्ष्योन्मुख और समय-सापेक्ष जीवन शैली

(ख) एक समय में एक ही कार्य उचित है

(ग) शौक को पूरा करना आवश्यक है

(घ) समय के सापेक्ष आचरण करें

10. गद्यांश का उचित शीर्षक है-

(क) स्वतन्त्रता

(ख) स्वदेश

(ग) समय का सदुपयोग

(घ) भारत और विश्व

उत्तर:

1.(ख) 2.(ग)3.(क) 4.(घ) 5.(घ)

6.(ख) 7.(घ) 8.(ख) 9.(क) 10.(ग)

3) एकांत ढूंढने के कई सकारात्मक कारण है। एकांत की चाह किसी घायल मन की आह भरनहीं, जो जीवन के काँटों से बिंध कर घायल हो चुका है, एकांत सिर्फ उसके लिए शरण मात्रनहीं। यह उस इंसान की ख्वाइश भर नहीं, जिसे इस संसार में फेंक दिया गया हो और वह फेंकदिए जाने की स्थिति से भयभीत होकर एकांत ढूंढ रहा हो।हम जो एकांत में होते हैं, वहीवास्तव में होते हैं। एकांत हमारी चेतना की अंतर्वस्तु को पूरी तरह उघाड़ कर रख देताहै।

अंग्रेजी का एक शब्द– 'आइसोलोफिलिया` इसका अर्थ है अकेलेपन, एकांत से गहरा प्रेम। पर इस शब्द को गौर से समझें तो इसमेंअलगाव की एक परछाई भी दिखती है। एकांत प्रेमी हमेशा ही अलगाव कि अभेद दीवारों के पीछेछिपना चाह रहा हो, यह जरूरी नहीं। एकांत की अपनी एक विशेष सुरभि है और जो भीड़ के अशिष्टप्रपंचों में फंस चुका हो, ऐसा मन कभी इसका सौंदर्य नहीं देख सकता। एकांत और अकेलेपनमें थोड़ा फर्क समझना जरुरी है।एकांत जीवी में कोई दोष या मनोमालिन्य नहीं होता। वहकिसी व्यक्ति या परिस्थिति से तंग आकर एकांत की शरण में नहीं जाता। न ही आततायी नियतिके विषैले बाणों से घायल होकर वह एकांत की खोज करता है। अंग्रेजी कवि लॉर्ड बायरनऐसे एकांत की बात करते हैं। वे कहते हैं कि ऐसा नहीं किवेइंसान से कम प्रेम करते हैं, बस प्रकृति से ज्यादा प्रेम करतेहैं ।बुद्ध अपने शिष्योंसे कहते हैं कि वे जंगल में विचरण करते हुए गैंडे की सींग की तरह अकेले रहें। वे कहतेहैं- 'प्रत्येक जीव जन्तुके प्रति हिंसा का त्याग करते हुए किसी की भी हानि की कामना न करते हुए, अकेले चलो-फिरो, वैसे ही जैसे किसी गैंडे का सींग। हक्सले 'एकांत के धर्म' या 'रिलीजन ऑफ सोलीट्यूड' की बात करते हैं। वे कहते हैं जो मन जितना ही अधिकशक्तिशाली और मौलिक होगा, एकांतके धर्म की तरफ उसका उतना ही अधिक झुकाव होगा।धर्म के क्षेत्र में एकांत, अंधविश्वासों, मतों और धर्मांधता के शोर से दूर ले जाने वाला होता है। इसके अलावा एकांत धर्म और विज्ञान के क्षेत्र में नई अंतर्दृष्टियों को भी जन्म देताहै। ज्यां पॉल सार्त्र इस बारे में बड़ी ही खूबसूरत बात कहते हैं। उनका कहना है- 'ईश्वर एक अनुपस्थिति है। ईश्वर है इंसान का एकांत। क्या एकांत लोग इसलिए पसंद करते हैं कि वे किसी को मित्रबनाने में असमर्थ हैं? क्यावे सामाजिक होने की अपनी असमर्थता को छिपाने के लिए एकांत को महिमा मंडित करते हैं? वास्तव में एकात एक दुधारी तलवारकी तरह है। लोग क्या कहेंगे इसका डर भी हमें अक्सर एकांत में रहने से रोकता है यहबड़ी अजीब बात है, क्योंकिजब आप वास्तव में अपने साथ या अकेले होते हैं, तभी इस दुनिया और कुदरत के साथ अपने गहरे संबंध का अहसासहोता है इस संसार को और अधिक गहराई और अधिक समानुभूति के साथ प्रेम करके ही हम अपनेदुखदाई अकेलेपन से बाहर हो सकते हैं।

1. उपर्युक्त गद्यांश किस विषय वस्तु पर आधारित है।

(क)अकेलेपन पर (ख)एकांत पर

(ग)जीवन पर (घ)अध्यात्म पर

2. एकांत हमारे जीवन के लिए क्यों आवश्यकहै?

(क)परेशानी सेभागने के लिए (ख)आध्यात्मिक चिंतन के लिए

(ग)स्वयं को जानने के लिए (घ)अशांत मन को शांत करने के लिए

3. बायरन मनुष्य से अधिक प्रकृति से प्रेमक्यों करते थे?

(क)प्रकृतिकी सुंदरता के कारण (ख)मनुष्य से घृणा के कारण

(ग)एकांत प्रेम के कारण (घ)अकेलेपन के कारण

4. दुखद अकेलेपन से कैसे बाहर आया जा सकताहै?

(क) संसार से प्रेम करके (ख)सच्चे दोस्त बनाकर

(ग)संसार की वास्तविकता को समझ कर (घ)संसार से मुक्त होकर

5. एकांत की खुशबू को कैसे महसूस किया जा सकता है?

(क)संसार से अलग होकर (ख)भीड़ में नहीं रहकर

(ग)एकांत से प्रेम करके (घ)अकेले रहकर

6. गैंडे के सींग की क्या विशेषता होती है?

(क)वह किसी को हानिनहीं पहुंचाता

(ख)वह सींग नहीं वरनसींग का अपररूप होता है।

(ग)गैंडे अकेले रहतेहैं इसलिए सींग भी अकेला रहता है।

(घ)अपनी दुनिया मेंमस्त रहना

7. धर्म के क्षेत्र में एकांत का क्या योगदानहै?

(क)समर्पण की भावना (ख)पूजा और साधना

(ग)धर्मांधता से मुक्ति (घ)धर्म के वास्तविक स्वरूप की पहचान

8. नई अंतर्दृष्टि से आप क्या समझते है?

(क)नई खोज (ख)नया अनुसंधान

(ग)नई संकल्पना (घ)नया सिद्धांत

9. ईश्वर एक अनुपस्थिति है- कैसे?

(क) ईश्वर कभी दिखाई नहीं देते (ख)ईश्वर कभी उपस्थित नहीं होता

(ग)एकांत में ही ईश्वर महसूस होते हैं (घ)ईश्वर होते ही नहीं हैं

10. एकांत में रहने का अर्थ है?

(क) दोस्त नहीं बना सकना

(ख)संसार को जानने का अवसर मिलना

(ग)अपने प्रिय लोगों को जानने का अवसर मिलना

(घ)संसार और प्रकृति की सुंदरता को देखना

उत्तर:

1.(ख) **2.**(ग) **3.**(ग) **4.**(क) **5.**(ग)

6.(क) **7.**(घ)**8.**(ग) **9.**(ग) **10.**(घ)

अपठित पद्यांश

1)निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों से सही विकल्प चुनिए:-

माटी, तुझे प्रणाम !

मेरे पुण्य देश की माटी, तू कितनी अभिराम!
तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर,
क्षण भर में ही भूल गया मैं शत्रु-यंत्रणा क्रूर,
सुख-स्फूर्ति का इस काया में हुआ पुनः संचार
लगता जैसे आज युगों के बाद मिला विश्राम
माटी, तुझे प्रणाम!
तुझसे बिछड़ मिला प्राणों को कभी न पल-भर चैन,
तेरे दर्शन हेतु रात-दिन तरस रहे थे नैन,
धन्य हुआ तेरे चरणों में आकर यह अस्तित्व–
हुई साधना सफल, भक्त को प्राप्त हों गए राम!
माटी तुझे प्रणाम!
अमर मृत्तिके! लगती तू पारस से बढ़कर आज,
कारा-जड़ जीवन सचेत फिर, तुझ को छूकर आज,
मरणशील हम, किन्तु अमर तू, है अमर्त्य यह धाम
हम मर-मरकर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम!

(क) कवि किसे प्रणाम कर रहा है ?

(i) मातृभूमि की वस्तुओं को (ii) मातृभूमि की हरियाली को
(iii) पावन मिट्टी से बनी मूर्ति को (iv) मातृभूमि की पावन मिट्टी को

(ख)मातृभूमि को प्रणाम करने के बाद कैसी अनुभूति होती है?

(i) सारे कष्ट दूर होने की
(ii) नवीन स्फूर्ति की अनुभूति होने की
(iii) शरीर को आहत करने वाली यंत्रणाओं से विस्मृति की
(iv) उपर्युक्त सभी की

(ग) माटी से बिछुड़ने तथा मिलने पर कवि को कैसा अनुभव होता है ?

(i) बेचैनी और साधनाएँ सफल होने का
(ii) सुखद तथा साधनाएँ सफल होने का
(iii) बेचैनी तथा साधनाएँ असफल होने का
(iv) सुखद तथा साधनाएँ असफल होने का

(घ) 'अमर मृत्तिके!लगती तू पारस से बढ़कर आज'- इस पंक्ति में किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है?

(i) मिट्टी कभी मरती नहीं है तथा पारस जैसी है
(ii) मिट्टी में अमरत्व है जो उसे पारस से बढकर देते है
(iii) मिट्टी में लोहे को सोना बनाने का गुण समाहित है
(iv) मातृभूमि की मिट्टी पारस से बढ़कर है, क्योंकि उसके स्पर्श से सभी यातनाएं दूर हो जाती है

(ङ) 'हम मर-मरकर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम' में कौन-सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार
(iii) रूपक अलंकार (iv) यमक अलंकार

7)निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों से सही विकल्प चुनिए:-

जला अस्थियाँ बार-बारी, चिटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्य वेदी पर, लिए बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे, तूफ़ानों में एक किनारे,
जल- जलकर बुझ गए किसी दिन, माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
पीकर जिनकी लाल शिखाएँ, उगल रही सौ लपट दिशाएँ,
जिनके सिंहनाद से सहमी, धरती रही अभी तक डोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
अंधा चकाचौंध का मारा, क्या जाने इतिहास बेचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के, सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल
कलम, आज उनकी जय बोल

(1) पुण्य-वेदी पर चढ़ने वालों ने क्या नहीं किया?

(क) पराक्रम (ख) बलिदान
(ग) दान (घ) त्याग

(2) कलम द्वारा जय बुलवाने का क्या तात्पर्य है?

(क) इतिहास लिखना (ख) गीत लिखना
(ग) प्रशंसा करना' (घ) विस्तृत वर्णन करना

(3) कवि के अनुसार धरती के डोलने का क्या कारण है?

(क) डर (ख) पराक्रम
(ग) वीरों की हुंकार (घ) प्रतिशोध

(4) इतिहास से अनजान रहता है....?

(क) कायर (ख) अंधा
(ग) ऐश्वर्य में रहनेवाला (घ) अशिक्षित

(5) वीरों की गवाही निम्नलिखित में से कौन नहीं देता?

(क) सूर्य (ख) चंद्रमा
(ग) आकाश (घ) खगोल

8)निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों से सही विकल्प चुनिए:-

यह हार एक विराम है, जीवन महासंग्राम है
तिलतिल मिटूँगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।
स्मृति सुखद प्रहरों के लिए,अपने खण्डहरों के लिए
यह जान लो मैं विश्व की सम्पत्ति चाहूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।
क्या हार में क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत मैं
संघर्ष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही।
वरदान माँगूँगा नहीं।
चाहे हृदय को ताप दो,चाहे मुझे अभिशाप दो

कुछ भी करो कर्त्तव्य पथ से किन्तु भागूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।

(1) कवि के अनुसार जीवन क्या है?

(क) विराम (ख) संग्राम
(ग) भीख (घ) पराजय

(2) दुख और शाप मिलने पर भी कवि क्या नहीं त्यागना चाहता?

(क) संघर्ष (ख) कर्तव्यपरायणता
(ग) संपत्ति (घ) परिश्रम

(3) कविता का दूसरा पद कवि की किस भावना का परिचायक है

(क) त्याग (ख) परोपकार
(ग) स्वार्थ (घ) प्रतिशोध

(4) कवि को किस अवस्था में डर नहीं लगता?

(क) सुख (ख) दुःख
(ग) जय-पराजय (घ) यश-अपयश

(5) सुखद का विलोम है?

(क) दुखी (ख) दुखांत
(ग) दुखद (घ) सुखी

8)निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों से सही विकल्प चुनिए:-

स्वातंत्र्य गर्व उनका, जो नर फाकों में प्राण गंवाते हैं,
पर, नहीं बेच मन का प्रकाश रोटी का मोल चुकाते हैं।
स्वातंत्र्य गर्व उनका, जिन पर संकट की घात न चलती है
तूफानों में जिनकी मशाल कुछ और तेज हो जलती है।
स्वातंत्र्य उमंगों की तरंग, नर में गौरव की ज्वाला है,
स्वातंत्र्य रूह की ग्रीवा में अनमोल विजय की माला है।
स्वातंत्र्य भाव नर का अदम्य, वह जो चाहे कर सकता है,
शासन की कौन विसात, पाँव विधि की लिपि पर धर सकता है।
रोटी उसकी, जिसका अनाज, जिसकी जमीन, जिसका श्रम है,
अब कौन उलट सकता स्वातंत्र्य का सुप्रसिद्ध, सीधा क्रम है।
आजादी है अधिकार शोषणों की धज्जियाँ उड़ाने का
गौरव की भाषा नई सीख, भिखमंगों की आवाज़ बदल,
सिमटी बांहों को खोल गरुड़, उड़ने का अब अंदाज बदल।
स्वाधीन मनुज की इच्छा के आगे पहाड़ हिल सकते हैं,
रोटी क्या? ये अंबर वाले सारे सिंगार मिल सकते हैं।

(1) स्वतंत्रता पर गर्व करने का अधिकारी कौन हों सकते है ?

(क) जो मन का प्रकाश बेचते हैं (ख) जो चुपचाप बने रहते हैं
(ग) जो फाके करके प्राण गंवाते हैं (घ) जो संकट नहीं झेल पाते |

(2) काव्यांश में 'रूह' शब्द का क्या अर्थ है ?

(क) आदमी (ख) मस्तक

(ग) आत्मा (घ) गर्दन

(3) 'पाँव विधि की लिपि पर धर सकता है'- से क्या तात्पर्य है-

(क) विधि के विधान को भी पलट सकता है (ख) ईश्वर के सामने झुक सकता है

(ग) ईश्वर को भी झुका सकता है (घ) मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है

(4) मनुष्य की इच्छा के सामने क्या हों सकता है ?

(क) पहाड़ तक हिल सकते हैं लोग झुक सकते हैं (ख) लोग झुक सकते हैं

(ग) कुछ नहीं कर सकता है (घ) श्रृंगार मिल सकते हैं

(5) 'सुप्रसिद्ध' में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है ?

(क) सु+प्र (ख) प्र

(ग) सु (घ) सिद्ध

9)निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों से सही विकल्प चुनिए:-

चमकीले पीले रंगों में अब डूब रही होगी धरती,
खेतों-खेतों फूली होगी सरसों, हँसती होगी धरती,
पंचमी आज, ढलते जाड़ों की इस ढलती दोपहरी में,
जंगल में नहा, ओढ़ती पीली सुखा रही होगी धरती।

इसके खेतों में खिलती है सिंगरी, तारा, गाजर, कसूम,
किसमें कम है यह, पली धूल में सोना धूल भरी धरती
शहरों की बहु-बेटियाँ हैं सोने के तारों से पीली,
सोने के गहनों में पीली, यह सरसों से पीली धरती।

सिर धरे कलेऊ की रोटी, ले कर में मट्ठा की मटकी,
घर से जंगल की ओर चली होगी बटिया पर पग धरती।
कर काम खेत में स्वस्थ हुई होगी तालाब में उतर, नहा,
दे प्यार बैल को, फेर हाथ, कर प्यार, बनी माता धरती।

पक रही फसल, लद रहे चना से बूँट, पड़ी है हरी मटर,
तीमन का साग और पौधों से हरा, भरी-पूरी धरती।
हो रही साँझ, आ रहे ढोर, हैं रंभा रहीं गायें-भैंस,
जंगल से घर को लौट रही गोधूलि बेला में धरती।

(1) काव्यांश में किस ऋतु का वर्णन है?

(क) शरद ऋतु का (ख) बसंत ऋतु का

(ग) ग्रीष्म ऋतु का (घ) वर्षा ऋतु का

(2) 'जंगल में नहा, ओढ़ती पीली सुखा रही होगी धरती।' पंक्ति में किस अलंकार का प्रयोग है?

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) उपमा अलंकार

(ग) मानवीकरण अलंकार (घ) यमक अलंकार

(3) 'शहरों की बहू-बेटियों' के बारे में क्या बताया गया है?

(क) उन्होंने शारीर पर खूब सोने के जेवर लड़ रखे हैं

(ख) हैं नए-नए फैशन के वस्त्र लड़ रखे

(ग) वे धुल में सनी हुई हैं

(घ) वे पीली-पीली दिखाई देती हैं

(4) गाँव की स्त्री क्या काम करती हैं?

(क) सिर पर कलेवा की रोटी व मट्ठा की मटकी लेकर खेत की ओर जाती है

(ख) खेतो में करती करती है

(ग) तालाब में उतरकर नहाती है

(घ) उपर्युक्त सभी काम करती है

(5) किस बेला को 'गोधूलि बेला' कहते हैं?

(क) प्रातः कला का समय

(ख) दोपहर का समय

(ग) सायंकाल का समय

(घ) सायंकाल गायों के वापस लौटने का समय

संचार एवं जनसंचार पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

पाठ 3,4,5 पर आधारित

प्रश्न सं. 1) संचार के तत्त्व हैं–

(1) स्रोत या संचारक और माध्यम

(2) कूटीकृत या एनकोडिंग और डीकोडिंग

(3) प्राप्तकर्ता यानी रिसीवर और फीडबैक

(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न सं. 2) संचार प्रक्रिया की शुरुआत होती है-

(1) स्रोत या संचारक से

(2) कूटीकृत या एनकोडिंग से

(3) माध्यम से

(4) प्राप्तकर्ता से

प्रश्न सं. 3) जनसंचार के माध्यम कितने प्रकार के होते हैं**? -**

(1) तीन

(2) दो

(3) चार

(4) असंख्य

प्रश्न सं. 4) संचार माध्यम के प्रमुख उद्देश्य हैं –

(1) सूचना देना

(2) मनोरंजन करना

(3) शिक्षित करना

(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न सं. 5) संचार प्रक्रिया में बाधक तत्त्व कौन-सा है**? -**

(1) मानसिक शोर

(2) तकनीकी शोर

(3) भौतिक शोर

(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न सं. 6) प्राप्तकर्ता द्वारा व्यक्त की गई प्रतिक्रिया कहलाती है-

(1) डिकोडिंग

(2) फीडबैक

(3) भौतिक शोर

(4) एनकोडिंग

प्रश्न सं. 7) संचार के निम्न भेद में एक ही व्यक्ति संचारक और प्राप्तकर्ता दोनों का कार्य करता है-

(1) अंतर वैयक्तिक

(2) संचार सांकेतिक संचार

(3) अंत: वैयक्तिक संचार

(4) समूह संचार

प्रश्न सं. 8) समूह संचार का उदाहरण है-

(1) कक्षा शिक्षण

(2) संसद में चर्चा

(3) पंचायत की बैठक

(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न सं. 9) किसी तकनीक या यांत्रिक माध्यम के जरिए समाज के विशाल वर्ग से संवाद स्थापित करना कहलाता है -

(1) समूह संचार

(2) जनसंचार

(3) सांकेतिक संचार

(4) मौखिक संचार

प्रश्न सं. 10) जनसंचार के कार्य हैं -

(1) सूचना देना, शिक्षित करना

(2) मनोरंजन करना, एजेंडा तय करना

(3) निगरानी करना, विचार-विमर्श करना

(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न सं. 11) प्रिंट माध्यम (मुद्रण माध्यम) के अंतर्गत आने वाले माध्यम हैं -

(1) समाचार-पत्र या अखबार या न्यूज पेपर

(2) पत्रिकाएँ या मैगजीन

(3) पुस्तकें या किताबें

(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न सं. 12) जनसंचार या प्रिंट मीडिया की सबसे मजबूत कड़ी माना जाता है –

(1) पत्र-पत्रिकाओं को

(2) बाल साहित्य को

(3) पुस्तकों या किताबों को

(4) कार्टून को

प्रश्न सं. 13) जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन-सा है –

(1) रेडियो

(2) सिनेमा

(3) प्रिंट या मुद्रण माध्यम

(4) दूरदर्शन

प्रश्न सं. 14) सूचना देने के माध्यम/साधन को कहते हैं-

(1) समाचार माध्यम

(2) संचार माध्यम

(3) प्रिंट या मुद्रित माध्यम

(4) दूरदर्शन

प्रश्न सं. 15) संचार प्रक्रिया सुचारु रूप से संपन्न हुई या नहीं यह पता चलता है-

(1) माध्यम से

(2) शोर से

(3) फीडबैक से

(4) डिकोडिंग से

प्रश्न सं. 16) संचार के प्रमुख भेद हैं-

(1) अंत:व्यैक्तिक और अंतरव्यैक्तिक संचार

(2) मौखिक और अमौखिक संचार

(3) समूह संचार और जनसंचार

(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न सं. 17) प्राप्तकर्ता द्वारा व्यक्त की गई प्रतिक्रिया कहलाती है-

(1) फीडबैक

(2) प्रत्युत्तर

(3) अभिव्यक्ति

(4) संप्रेषण

उत्तरमाला-

1	**उपर्युक्त सभी**	**2**	**स्रोत या संचारक से**
3	**दो**	**4**	**उपर्युक्त सभी**
5	**उपर्युक्त सभी**	**6**	**फीडबैक**
7	**अंत: वैयक्तिक संचार**	**8**	**उपर्युक्त सभी**
9	**जनसंचार**	**10**	**उपर्युक्त सभी**
11	**उपर्युक्त सभी**	**12**	**पत्र-पत्रिकाओं को**
13	**प्रिंट या मुद्रण माध्यम**	**14**	**संचार माध्यम**
15	**फीडबैक से**	**16**	**उपर्युक्त सभी**
17	**फीडबैक**		

जनसंचार के विभिन्न माध्यमों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न सं. 1) निम्नलिखित में सुमेलित नहीं है-

(1) हिंदी का पहला समाचार पत्र = उदंत मार्तंड

(2) भारत का पहला समाचार पत्र = बंगाल गजट

(3) समाचार लेखन की प्रमुख शैली = सीधा पिरामिड शैली

(4) भारत का पहला छापाखाना = गोवा में (1556 में)

प्रश्न सं. 2) प्रिंट या मुद्रण माध्यम के अंतर्गत क्या नहीं आता है**?**

(1) अखबार या समाचार पत्र

(2) सिनेमा या चलचित्र

(3) पत्रिकाएँ या मैगेजीन

(4) पुस्तकें या किताबें

प्रश्न सं. 3) अंतरजाल (इंटरनेट) के माध्यम से खबरों या सूचनाओं का आदान-प्रदान कहलाता है-

(1) इंटरनेट पत्रकारिता

(2) साइवर या वेब पत्रकारिता

(3) ऑनलाइन पत्रकारिता

(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न सं. 4) निम्न में सुमेलित नहीं है-

(1) भारत की पहली साइट = रीडिफ डॉटकॉम

(2) वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय = तहलका डॉटकॉम

(3) भारत में इंतरनेट का पहला दौर शुरू हुआ = 2003 ई. से

(4) पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट है = बी. बी. सी.

प्रश्न सं. 5) निम्नलिखित में से कौन प्रिंट मीडिया की खामियाँ / कमजोरियाँ नहीं है**?**

(1) निरक्षरों के लिए अनुपयोगी होना

(2) छपाई के कारण स्थायित्व होना

(3) घटना की तात्कालिक जानकारी न मिलना

(4) छपी हुई त्रुटियों का निराकरण शीघ्र न होना

प्रश्न सं. 6) निम्नलिखित में से कौन सुमेलित नहीं है-

(1) भारत की पहली बोलती फिल्म = आलमआरा (1931 में)

(2) फिल्मों का आविष्कार = थामस अल्वा एडिसन

(3) रेडियो का आविष्कार = जर्मनी के गुटेनबर्ग

(4) भारत की पहली मूक फिल्म = राजा हरिश्चंद (1913 में)

प्रश्न सं. 7) चिंतन**,** विचार और विश्लेषण का माध्यम है-

(1) प्रिंट या मुद्रण माध्यम

(2) इलेक्ट्रानिक माध्यम

(3) इंटरनेट या अंतर्जाल

(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

प्रश्न सं. 8) एफ॰एम॰ (फ्रिक्वेंसी मोड्यूलेशन) की शुरुआत हुई-

(1) सन् 1993 में

(2) सन् 1990 में

(3) सन् 2003 में

(4) सन् 2000 में

प्रश्न सं. 9) आकाशवाणी और दूरदर्शन को सन् 1997 में स्वायत्तता प्रदान कर अर्थात् केंद्र सरकार के सीधे नियंत्रण से निकालकर ..... सौंप दिया गया-

(1) 'प्रसार भारती' नामक स्वायत्तशासी निकाय को

(2) 'संचार निगम' नामक स्वायत्तशासी निकाय को

(3) 'प्रचार-प्रसार भारती' नामक स्वायत्तशासी निकाय को

(4) 'ज्ञान भारती' नामक स्वायत्तशासी निकाय को

10. मुद्रण की शुरुआत कहाँ से हुई ?

(1) जापान से

(2) चीन से

(3) अमरीका से

(4) भारत से

11. प्रिंट(मुद्रण) माध्यम किसे कहते हैं?

(1) संचार के वे साधन जो मुद्रण के द्वारा (छपाई के रूप में) लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाते हैं।

(2) संचार के वे साधन जो मुद्रा के द्वारा (पैसे देने बाद) लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाते हैं।

(3) संचार के वे साधन जो आवाज के द्वारा (ध्वनि के रूप में) लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाते हैं।

(4) इनमें से कोई नहीं।

12. निम्न में से क्या प्रिंट माध्यम की कमजोरी नहीं है?

(1) यह निरक्षरों के लिए किसी काम की नहीं है।

(2) इसमें खबरें बासी अर्थात् 24 घंटे पुरानी होती हैं

(3) इसमें स्थायित्व होता है, इसका प्रयोग संदर्भों की तरह किया जा सकता है

(4) इसमें एक बार गलत छपने के बाद जल्दी सुधार नहीं हो पाता

13. भारत के पहले छापाखाना के बारे में सही कथन है-

(1) इसकी स्थापना सन् 1556 ई. में ही थी,

(2) इसकी स्थापना गोवा में हुई थी

(3) ईसाई मिशनरियों ने इसका उपयोग धर्म प्रचार की पुस्तक छापने के लिए किया था

(4) उपर्युक्त सभी

14. रेडियो के बारे में सत्य कथन नहीं है?

(1) रेडियो एक श्रव्य माध्यम है,

(2) रेडियो एक दृश्य – श्रव्य माध्यम है

(3) रेडियो का आविष्कार 1895 ई॰ में हुआ

(4) रेडियो का आविष्कार इटली के इंजीनियर जी॰ मार्कोनी ने किया

15. आल इंडिया रेडियो की स्थापना कब हुई?

(1) 1936 ई॰ में

(2) 1947 ई. में

(3) 1950 ई. में

(4) 1942 ई. में

16. निम्नलिखित में किसकी संरचना उल्टा पिरामिड शैली (इनवर्टेड पिरामिड) पर आधारित होती है?
    (1) रेडियो समाचार की संरचना
    (2) अखबार/समाचार की संरचना
    (3) टी॰ वी॰ समाचार की संरचना
    (4) उपर्युक्त सभी की
17. भारत के पहले अखबार 'बंगाल गज़ट' के बारे में असत्य कथन है-
    (1) इसका प्रकाशन 1780 ईस्वी में शुरू हुआ
    (2) यह कोलकाता से निकलता था
    (3) 'जेम्स आगस्ट हिक्की' इसके संपादक थे
    (4) यह मुम्बई से निकलता था
18. हिन्दी के पहले साप्ताहिक पत्र से संबंधित सत्य कथन है-
    (1) यह1820 ईस्वी में कोलकाता से निकला
    (2) समाचार पत्र का नाम 'उदन्त मार्तंड' था
    (3) इसके संपादक पंडित जुगल किशोर थे
    (4) उपर्युक्त सभी सही हैं
19. भारत में टेलीविज़न की शुरुआत के बारे में सही कथन है-
    (1) भारत में टेलीविज़न की शुरुआत युनेस्को की एक शैक्षिक परियोजना के तहत १५ सितंबर, १९५९ ई॰ को हुई थी।
    (2) १९६५ में स्वतन्त्रता दिवस से भारत में विधिवत टेलीविज़न सेवा का प्रारंभ हुआ।
    (3) उपर्युक्त दोनों कथन सही हैं
    (4) केवल पहला कथन सही है
20. सिनेमा के बारे में सही कथन है-
    (1) सिनेमा का आविष्कार १८८३ ई॰ में हुआ था
    (2) सिनेमा का आविष्कार थॉमस अल्वा एडिसन ने किया था
    (3) सिनेमा एक दृश्य एवं श्रव्य माध्यम है
    (4) उपर्युक्त सभी
21. पहली फिल्म 'द एराइवल ऑफ ट्रेन' (**The arrival of Train)** कब और कहाँ बनी थी?
    (1) सन्1894 ई॰ में, फ्रांस में,
    (2) सन्1894 ई॰ में, ब्रिटेन में,
    (3) सन् 1880 ई॰ में, फ्रांस में,
    (4) सन् 1880 ई॰ में, ब्रिटेन में,
22. भारत की पहली मूक फिल्म से संबंधित सही कथन है-
    (1) भारत में बनी पहली मूक फिल्म 1913 ई॰ में बनी
    (2) इस फिल्म का नाम 'राजा हरिश्चंद्र' है
    (3) इसके निर्माता दादा साहब फाल्के थे
    (4) सभी कथन सही हैं
23. भारत की पहली बोलती फिल्म थी-
    (1) आलमआरा
    (2) राजा हरिश्चंद

(3) लैला मजनूँ

(4) सोहनी महिवाल

उत्तरमाला-

1	समाचार लेखन की प्रमुख शैली = सीधा पिरामिड शैली	13	उपर्युक्त सभी
2	सिनेमा या चलचित्र	14	रेडियो एक दृश्य – श्रव्य माध्यम है
3	उपर्युक्त सभी	15	1936 ई॰ में
4	भारत में इंतरनेट का पहला दौर शुरू हुआ = 2003 ई. से	16	उपर्युक्त सभी की
5	छपाई के कारण स्थायित्व होना	17	यह मुम्बई से निकलता था
6	रेडियो का आविष्कार = जर्मनी के गुटेनबर्ग	18	उपर्युक्त सभी सही हैं
7	प्रिंट या मुद्रण माध्यम	19	उपर्युक्त दोनों कथन सही हैं
8	सन् 1993 में	20	उपर्युक्त सभी
9	'प्रसार भारती' नामक स्वायत्तशासी निकाय को	21	सन्1894 ई॰ में, फ्रांस में,
10	चीन से	22	सभी कथन सही हैं
11	संचार के वे साधन जो मुद्रण के द्वारा (छपाई के रूप में) लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाते हैं।	23	आलमआरा
12	इसमें स्थायित्व होता है, इसका प्रयोग संदर्भों की तरह किया जा सकता है		

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

बहुविकल्पीय प्रश्न (हल सहित)

1. आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम क्या है?

(क) अखबार (ख) रेडियो

(ग) टेलीविजन (घ) सिनेमा

2. किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतनभोगी कर्मचारी क्या कहलाता है?

(क) पूर्णकालिक पत्रकार (ख) अंशकालिक पत्रकार

(ग) फ्रीलांसर पत्रकार (घ) वेतनभोगी पत्रकार।

3. नाटक का सबसे जरूरी और सशक्त माध्यम है?

(क) मधुर आवाज (ख) भाषा

(ग) परदा (घ) संवाद।

4. भारत का पहला छापाखाना कहाँ स्थापित हुआ?

(क) दिल्ली (ख) सूरत

(ग) गोवा (घ) अहमदाबाद।

5. इंटरव्यू के लिए हिन्दी शब्द क्या है?

(क) साक्षात्कार (ख) बहीजाल

(ग) अंतरमुख (घ) केंद्रीकरण

6. ऑल इण्डिया रेडियो की स्थापना कब हुई?

(क) 1930 (ख) 1936

(ग) 1947 (घ) 1951

7. छापेखाने का आविष्कार किसने किया था?

(क) लुईस हैमिल्टन (ख) जॉन गुटेनबर्ग

(ग) जेम्स चैडविक (घ) मेंडलीव

8. भारत में इन्टरनेट पत्रकारिता का प्रारंभ कब हुआ?

(क) 1987 (ख) 1980

(ग) 1994 (घ) 1993

9. समाचार लेखन में किस शैली का प्रयोग होता है?

(क) उल्टा पिरामिड शैली (ख) सीधा पिरामिड

(ग) टेढ़ा पिरामिड (घ) पिरामिड

10. उल्टा पिरामिड शैली को कितने हिस्सों में बाँटा जाता है?

(क) एक (ख) दो

(ग) तीन (घ) चार

11. रंगमंच किस साहित्यिक विधा में आवश्यक है?

(क) नाटक प्रदर्शन (ख) कहानी

(ग) चित्रपट (घ) रेडियो

12. सर्वाधिक खर्चीला जनसंचार माध्यम क्या है?

(क) प्रिंट (ख) रेडियो

(ग) टेलीविजन (घ) इंटरनेट

13. रेडियो नाटक किस प्रकार का माध्यम है?

(क) श्रव्य माध्यम (ख) दृश्य माध्यम

(ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

14. कहानी का केंद्र बिंदु है-

(क) चरित्र चित्रण (ख) कथानक

(ग) संवाद योजना (घ) उद्देश्य

15. मीडिया की भाषा में 'बीट' का अर्थ हैं:

(क) क्षेत्र (ख) समाचार

(ग) खबर (घ) नाटक

16. भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखने वाला पत्रकार क्या कहलाता है?

(क) पूर्णकालिक पत्रकार (ख) फ्रीलांसर पत्रकार

(ग) अंशकालिक पत्रकार (घ) वेतनभोगी पत्रकार।

17. इस समय विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का कौन सा दौर चल रहा है?

(क) चौथा (ख) तीसरा

(ग) दूसरा (घ) पहला

18. पत्रकार किस-किस प्रकार के होते हैं?

(क) पूर्णकालिक (ख) अंशकालिक पत्रकार

(ग) स्वतंत्र पत्रकार (घ) उपयुक्त सभी

19. इनमें से कौन-सा जनसंचार माध्यम अनपढ़ व्यक्ति के लिए उपयोगी नहीं है?

(क) इंटरनेट (ख) समाचार-पत्र

(ग) पत्रिकाएँ (घ) तीनों

20. श्रव्य जनसंचार माध्यम कौन-सा है?

(क). समाचार पत्र (ख). रेडियो

(ग). इंटरनेट (घ) टेलिविजन

21. मुद्रण का आरंभ किस देश में हुआ?

(क) भारत (ख) जापान

(ग) चीन (घ) इंग्लैण्ड

22. भारत में पहला छापाखाना कब लगा?

(क) सन् 1556 में (ख) सन् 1546 में

(ग) सन् 1656 में (घ) सन् 1576 में

23. भारत में पहला छापाखाना कहाँ पर लगाया गया?

(क) दिल्ली में (ख) कोलकाता में

(ग) गोवा में (घ) कानपुर मे

24. समाचार लेखन की प्रभावशाली शैली कौन सी है?

(क) वर्णनात्मक शैली (ख) विवेचनात्मक शैली

(ग) पिरामिड शैली (घ) उल्टा पिरामिड शैली

25. इनमें से कौन-सा उल्टा पिरामिड शैली का अंग नहीं है?

(क) मध्य भाग (ख) बॉडी

(ग) इंट्रो (घ) समापन

26. दृश्यों का किस माध्यम में अधिक महत्व होता है?

(क) समाचार पत्र (ख) रेडियो

(ग) टेलीविज़न (घ) इंटरनेट

27. टेलीविज़न के लिए खबर लिखने की मौलिक शर्त क्या है?

(क) साहित्यिक भाषा में लेखन (ख) दृश्य के साथ लेखन

(ग) सनसनीखेज लेखन (घ) सामान्य लेखन

28. हिन्दी में नेट पत्रकारिता किसके साथ आरंभ हुई?

(क) वैब दुनिया के साथ (ख) दैनिक जागरण के साथ

(ग) दैनिक भास्कर के साथ (घ) राजस्थान पत्रिका के साथ

29.क्रिकेट मैच का प्रसारण किस प्रकार का है?

(क) फोन इन (ख) एंकर पैकेज

(घ) सीधा प्रसारण (घ) एंकर वाइट

30. आधुनिक युग में इंटरनेट पत्रकारिता का कौन-सा दौर चल रहा है?

(क) द्वितीय (ख) तृतीय

(ग) प्रथम (घ) चतुर्थ

31. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर कब आरंभ हुआ?

(क) 2001 में (ख) 2002 में

(ग) 2003 में (घ) 2004 में

32. समाचार पत्र प्रकाशित या प्रसारित करने के लिए आखिरी समय सीमा को क्या कहा जाता है?

(क) ब्लू लाइन (ख) ब्लैक लाइन

(ग) रैड लाइन (घ) डैड लाइन

33. 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन कब और कहाँ हुआ?

(क)1826 ई. में कोलकाता से (ख)1820 ई. में कोलकाता से

(ग)1828 ई. में गोवा से (घ)1907 ई. में मद्रास से

34. नेट साउन्ड' क्या हैं?

(क) इंटरनेट साउन्ड (ख) नारों के स्वर

(ग) चिड़िया का चहचहाना (घ) प्राकृतिक स्वर

35. कक्षा बारहवीं का छात्र मयंक रेडियो सुन रहा था। अचानक कुछ शब्द ऐसे आ गए जिनका अर्थ वह न अर्थ समझ पाया। जब तक उसने शब्दकोश में से अर्थ ढूँढ़ने का प्रयास किया तब तक समाचार समाप्त हो गए यह स्थिति दर्शाती है कि-

(क) शब्दकोश में प्रतिपादित अर्थ ढूंढ़ना असाध्य है

(ख) प्रसारित शब्दों की कठिनाई का कोई निराकरण नहीं है

(ग) शब्दों का स्थापित्व अत्यंत लाभदायक सिद्ध होता है

(घ) समाचारों की भाषा सरल व बोधगम्य होनी चाहिए

36. प्रिंट मीडिया की विशेषता है-

(क) चिंतन, विचार व विश्लेषण के आधार पर तैयार होते हैं।

(ख) छपे हुए शब्दों का स्थायित्व होता है।

(ग) इंटरनेट की तरह खर्चीला नहीं है

(घ) उपर्युक्त सभी

37. रेडियो का आविष्कार कब और किसने किया?

(क) सन् 1805 ई. में स्टीफन मार्कोनी ने। (ख) सन् 1890 ई. में गुटेनबर्ग ने।

(ग) सन् 1895 ई. में जी मार्कोनी ने। (घ) इनमें से कोई नही

38. भारत में विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किसे जाता है?

(क) बीबीसी (ख) तहलका डॉटकॉम

(ग) ज़ी न्यूज (घ) राजस्थान पत्रिका

39. सुभागी को किसी अन्य समाचार पत्र की पृष्ठभूमि जाननी है तो किस माध्यम से वह अधिक और शीघ्र जानकारी प्राप्त कर सकेगी।

(क) समाचार पत्र से (ख) पत्रिकाओं से

(ग) रेडियो से (घ) इंटरनेट से

40. श्रोताओं पाठकों को बांध कर रखने की स्थिति में टेलीविज़न सबसे सशक्त माध्यम है क्योंकि यह-

(क) नियमित एवं निरंतर प्रसारित होता है।

(ख) अधिक प्रामाणिक द्विरेखीय माध्यम है

(ग) समाचारों के पुष्टिकरण का कार्य करता है

(घ) दृश्य एवं श्रव्य सुविधा प्रदान करता है

41. टेलीविजन के लिए समाचार लेखन की बुनियादी शर्त क्या है?

क) सनसनीखेज लेखन ख) जटिल भाषा में लेखन

ग) दृश्य के साथ लेखन घ) साहित्यिक लेखन

42. प्रिंट मीडिया की विशेषता है-

क) चिंतन, विचार व विश्लेषण के आधार पर तैयार होते हैं।

ख) छपे हुए शब्दों का स्थायित्व होता है।

ग) इंटरनेट की तरह खर्चीला नहीं है

घ) उपर्युक्त सभी

43.समाचार लेखन में संक्षिप्ताक्षरों के| क्या देखा जाना चाहिए?

क) बोलने या लिखने में सरल हों — ख) लोकप्रियता हों

ग) लिखने में जटिल हों — घ) कम सुने या पढ़े गए हों

44. पाठ के अनुसार आज कितने शब्द प्रति सेकंड भेजे जा सकते हैं?

क) आठ हज़ार शब्द — ख) सौ शब्द

ग) सत्तर हज़ार शब्द — घ) सत्तर शब्द

45. पाठ के अनुसार एक समय था जब टेलीप्रिंटर से कितने शब्द एक मिनट में भेजे जा सकते थे?

क) 100 — ख) 60

ग) 50 — घ) 80

46. खबर की दृश्यों के अनुपलब्ध होने की स्थिति में रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएँ पहुँचाने वाले का संबंधित चरण है-

(क) ड्राई रिपोर्ट — (ख) ड्राई- दृश्यहीनता

(ग) ड्राई – विजुअल — (घ) ड्राई-एंकर

47. क्रिकेट का खेल है।

क) टेलीफोन इन — ख) मौसम

ग) प्रदर्शन — घ) धारणा

48. ड्राई एंकर खबर को किस प्रकार बताता है?

क) संवाददाता से बात करके बताता है। — ख) दृश्य के साथ बताता है

ग) सीधे-सीधे बताता है — घ) कोई नहीं

49. विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर कब समाप्त हुआ?

क) 2000 में — ख) 2004 में

ग) 2003 में — घ) 2001 में

50. किसी भी माध्यम के लेखन के लिए किसे ध्यान में रखना होता है?

(क) माध्यमों को — (ख) लेखक को

(ग) जनता को — (घ) बाजार को

उत्तर माला

1. (क) अखबार

2. (क) पूर्णकालिक पत्रकार

3. (घ) संवाद

4. (ग) गोवा

5. (क) साक्षात्कार

6. (ख) 1936, दिल्ली

7. (ख) जॉन गुटेनबर्ग

8. (घ) 1993

9. (क) उल्टा पिरामिड

10. (ग) तीन

11. (क) नाटक प्रदर्शन

12. (घ) इंटरनेट

13. (क) श्रव्य माध्यम ।

14. (ख) कथानक

15. (क) क्षेत्र ।

16.(ख) फ्रीलांसर पत्रकार

17. (ख) तीसरा।

18. (घ) उपयुक्त सभी।

19. (ड) तीनों

20. (ब). रेडियो

21. (ग)चीन

22.(क)सन् 1556 में

23. (ग) गोवा में

24. (घ) उल्टा पिरामिड शैली

25. (क). मध्य भाग

26.(क) टेलीविज़न

27. (ख) दृश्य के साथ लेखन

28. (क). वैब दुनिया के साथ

29.(ग). सीधा प्रसारण

30. (ख) तृतीय

31. (ग) 2003 में

32. (ड) डैड लाइन

33. (क)1826 ई. में कोलकाता से

34. (घ) प्राकृतिक स्वर

35. (ख) प्रसारित शब्दों की कठिनाई का कोई निराकरण नहीं है

36. (घ) उपर्युक्त सभी

37. (ग) सन् 1895 ई. में जी मार्कोनी ने

38. (ख) तहलका डॉटकॉम

39. (घ) इंटरनेट से

40. (घ) दृश्य एवं श्रव्य सुविधा प्रदान करता है।41. (ग) दृश्य के साथ लेखन

42. (घ) उपर्युक्त सभी

43. (ख) लोकप्रियता हो

44. (ग)सत्तर हज़ार शब्द

45. (घ) 80 46. (घ) ड्राई-एंकर 47. (ख)प्रदर्शन

48. (ग) सीधे-सीधे बताता है 49. (घ) 2001 में 50. (क) माध्यमों को

पठित काव्यांश एवं गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरी

काव्य खंड

पाठ 1. आत्मपरिचय (कविता)

हरिवंश राय बच्चन

1. निम्नलिखित पठित काव्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- **(1x5=5)**

जग – जीवन का मार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने प्रकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ !
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
में कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ !

क) काव्यांश में 'जग-जीवन के भार' का क्या अर्थ है ?

i) संसार के सभी लोगों की जिम्मेदारी
ii) अपने घर परिवार के सभी दायित्व
iii) अपने मित्रों की जिम्मेदारी
iv) उपर्युक्त सभी

ख) काव्यांश के अनुसार कवि सभी को क्या बाँटता है ?

i) खुशियाँ
ii) दुःख
iii) आशा
iv) प्रेम

ग) इस काव्यांश में साँसों के दो तार का आशय है –

i) दो तार
ii) सुविधाओं से भरा जीवन
iii) प्रेम से भरा जीवन
iv) कष्टों से भरा जीवन

घ) 'स्नेह- सुरा' में निहित अलंकार है –

i) उपमा
ii) रूपक
iii) उत्प्रेक्षा
iv) उपर्युक्त सभी

ड.) कवि के अनुसार संसार में किन लोगों को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है?

i) संसार के हित में कार्य करने वालों को
ii) उच्च साहित्य की रचना करने वाले को
iii) संसार की झूठी प्रशंसा न करने वालों को
iv) संसार का झूठा गुणगान करने वालों को

सही उत्तर : क) : अपने घर परिवार के सभी दायित्व ख) : प्रेम ग) प्रेम से भरा जीवन घ) रूपक ड.) संसार का झूठा गुणगान करने वालों को

2 . मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ,
जग भव-सागर तरने की नाव बनाए,
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

1 . काव्यांश में 'उर के उद्गार' और 'उर के उपहार' से क्या आशय है **?**

1) अपने प्रिय के प्रति प्रेम भाव से भरे गीत .
2) शादी के लिए उपहार .
3) ऊपर ही ऊपर उपहार देना .
4) जन्मदिन के लिए उपहार .

2 . कवि ने संसार को अपूर्ण क्यों कहा है**?**

1) संसार में कोई पूर्ण नहीं इसलिए .
2) संसार के लोग इर्ष्या द्वेष अहंकार आदि से भरे हैं .
3) संसार के लोगों में प्रेम का अभाव है .
4) विकल्प 'ख' और 'ग' दोनों सही है .

3 . **'**मैं जला हृदय में अग्नि दहा करता हूँ' इस पंक्ति का भाव है –

1) कवि हृदय में बदले की आग लिए है .
2) कवि दूसरों की प्रगति से जलता है .
3) कवि हर क्षण दुखी रहता है .
4) कवि अपने हृदय में प्रिय की यादों को बनाए रखता है .

4 . **'**भव – सागर तरने को नाव बनाए' का आशय क्या है **?**

1) सांसारिक सुख-सुविधाएं जुटाना.
2) लोगों से सम्बन्ध बनाना.
3) नाव या जहाज बनाना .
4) इनमें से कोई नहीं .

5 . **'**भव- सागर' और 'भव- मौजों' में कौन सा अलंकार है**?**

1) उपमा .

2) रूपक.

3) यमक.

4) अनुप्रास.

सही उत्तर : क) अपने प्रिय के प्रति प्रेम भाव से भरे गीत ख) संसार के लोग इर्ष्या द्वेष अहंकार आदि से भरे हैं ग) कवि अपने ह्रदय में प्रिय की यादों को बनाए रखता है . घ) सांसारिक सुख-सुविधाएं जुटाना ड.) रूपक

3. 'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता?
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता,
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ'

1 . 'मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता' इस पंक्ति का क्या भाव है **?**

1)कवि रोज विध्वंस का काम करता है .

2)कवि नए- नए 'सपनों के संसार' की कल्पना करता है .

3)कवि संसार के लोगों से नफ़रत करता है .

4)वह संसार से रोज प्रेरणा लेता है .

2 . काव्यांश में संसार के लोगों की किस प्रवृत्ति को बताया गया है **?**

1) वे धन-संपत्ति जोड़ने में लगे रहते हैं.

2) वे खंडहर देखने जाते हैं.

3) वे धन-संपत्ति को ठुकराते हैं .

4) विकल्प 'क' और 'ख' दोनों सही है .

3 . काव्यांश में कवि के किस स्वाभाव को रेखांकित किया गया है **?**

1) कवि संसार के लोगों से विपरीत सोच रखता है .

2) कवि पृथ्वी पर नहीं रहना चाहता .

3) कवि अपने प्रिय की यादों को ह्रदय में बसाए हुए है .

4) विकल्प 'क' और 'ग' दोनों सही है .

4 . काव्यांश में किस पंक्ति में यमक अलंकार है **?**

1) **'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता?'**

2) **'मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!'**

3) **'जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,'**

4) इनमें में से कोई नहीं .

5 . 'शीतल वाणी में आग' का क्या आशय है **?**

1) कवि की वाणी में घृणा है.

2) कवि के गीतों में मधुरता है परन्तु उसमें विरह की वेदना भी है.

3) कवि के गीतों में विद्रोह का स्वर है.

4) विकल्प 'ख' और 'ग' सही है.

सही उत्तर : क) कवि नए- नए 'सपनों के संसार' की कल्पना करता है।

ख) वे धन-संपत्ति जोड़ने में लगे रहते हैं.

ग) विकल्प 'क' और 'ग' दोनों सही है

घ) 'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता?

ड.) विकल्प 'ख' और 'ग' सही है.

एक गीत (कविता)

दिन जल्दी जल्दी ढलता है

(निशा निमंत्रण नामक गीत संग्रह से उद्धृत)

1. निम्नलिखित पठित काव्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- **(1x5=5)**

हो जाए न पथ में रात कहीं
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

1. इस काव्यांश में रात होने की चिंता कौन कर रहा है**?**

(1) मंजिल

(2) राहगीर

(3) पथ

(4) चिड़िया

2. **'**पथ में रात न हो जाए'-इसके लिए पंथी क्या करता है**?**

(1)रात होने का इंतजार करता है

(2)वहीं रुक जाने का प्रंबध करता है

(3)अपने कदम जल्दी-जल्दी बढ़ाता है

(4)वापस अपने घर चला जाता है

3. जल्दी-जल्दी में कौन सा अलंकार है**?**

(1)प्रश्न अलंकार

(2)उपमा अलंकार

(3)रूपक अलंकार

(4)पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

4. प्रस्तुत काव्यांश में 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' पंक्ति में प्रतीक अर्थ क्या है**?**

(1)मंजिल ज्यादा दूर नहीं है

(2)हमारा जीवन भी जल्दी-जल्दी ढलता जाता है

(3)रात जल्दी -जल्दी होती है

(4)रात को राहगीर रूक जाता है

5. 'हो जाए न पथ में रात कहीं' पंक्ति में 'पथ' शब्द का अर्थ है-

(1)राह

(2)रात

(3)राहगीर

(4)मंजिल

उत्तर-1. **राहगीर**, 2.**अपने कदम जल्दी-जल्दी बढ़ाता है** 3.**पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार** 4.**हमारा जीवन भी जल्दी-जल्दी ढलता जाता है.** 5. **राह**

2. निम्नलिखित पठित काव्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- **(1x5=5)**

मुझसे से मिलने को कौन विकल**?**

मैं होऊं किसके हित चंचल**?**

यह प्रश्न शिथिल करता पद को**,** भरता उर में विह्वलता है

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

1. प्रस्तुत काव्यांश में विकल शब्द का अर्थ है-

i. पागल

ii. चंचल

iii. कवि

iv. बैचेन

2. कवि की व्याकुलता का क्या कारण है**?**

i निर्धनता

ii कवि के जीवन में कोई प्रिय नहीं है

iii कवि का अपने प्रिय से झगड़ा हुआ है

iv कवि अस्वस्थ है

3. 'मैं होऊं किसके हित चंचल' पंक्ति में कौनसा अलंकार है**?**

i रूपक

ii यमक

iii वक्रोक्ति

iii प्रश्न अलंकार

4.'भरता उर में विह्वलता है' पंक्ति में 'उर' शब्द का अर्थ है-

i राह

ii मंजिल

iii ह्रदय

iv आँखें

5. 'विह्वलता' शब्द का अर्थ है**?**

i सुख

ii दुःख

iii नीरसता

iv बैचेनी

उत्तर-1) **बैचेन** 2)**कवि के जीवन में कोई प्रिय नहीं है** 3)**प्रश्न अलंकार** 4)**हृदय** 5)**बैचेनी**

पाठ 2 . **पतंग**

सबसे तेज़ बौछारें गयीं। भादो गया
सवेरा हुआ खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए
घंटी बजाते हुए जोर-जोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए
पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके-
दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज उड़ सके-
दुनिया का सबसे पतला कागज उड़ सके-
बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके
कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और
तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया।

1 . निम्नलिखित पठित काव्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- **(1x5=5)**

1 . पद्यांश में किस ऋतु के आगमन की सूचना दी गई है **?**

1) वसंत

2) ग्रीष्म

3) वर्षा

4) शरद

2 . सबेरे के लिए किस उपमान का प्रयोग किया गया है**?**

1) चमकीली साइकिल

2) मुलायम आकाश

3) खरगोश की आँखें

4) पतंग

3 . पतंग के लिए कहा गया है**?**

1) सबसे पतला कागज़

2) सबसे पतली कमानी

3) सबसे हल्की रंगीन चीज

4) उपर्युक्त सभी

4 . 'शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए' पंक्ति में अलंकार है -

1) मानवीकरण

2) उपमा

3) अतियोशयोक्ति

4) इनमें से कोई नहीं

5 . इस काव्यांश में किस बिम्ब की योजना है-

1) दृश्य बिम्ब

2) श्रव्य

3) स्पर्श बिम्ब

4) उपर्युक्त सभी

उत्तर-1 **शरद** 2)**खरगोश की आँखें**3)**उपर्युक्त सभी** 4)**मानवीकरण** 5)**उपर्युक्त सभी**

2 . निम्नलिखित पठित काव्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- (**1x5=5)**

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग सो अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक-
उस समय गिरने से बचाता हैं उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज़ एक धागे के सहारे।
पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई जाती है
उनके बचन पैरों के पास।

1 . पृथ्वी किनके बैचेन पैरों के पास घूमती हुई आती है **?**

1) खरगोश

2) तितलियों

3) बच्चों

4) घोड़ों

2 . पतंग उड़ाने वाले बच्चे दिशाओं को किसके सामान बजाते हैं **?**

1) ढोल के सामान

2) बांसुरी के सामान

3) मृदंग के सामान

4) गिटार के सामान

3काव्यांश में कपास किसका प्रतीक है **?**

क) शांति का

ख) कोमलता का

ग) प्रकाश का

घ) नश्वरता का

4 . पतंग उड़ाते हुए बच्चे किसके सहारे स्वयं भी उड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं **?**

क) पंखों

ख) रंध्रों

ग) धागों

घ) कल्पना

5 . खतरनाक किनारों से जब बच्चे गिर जाते है तो वे क्या करते हैं **?**

क) वे संभलकर चलते हैं .

ख) वे अपने घरों में बैठ जाते हैं .

ग) वे अब पतंग नहीं उड़ाते .

घ) उनका साहस और भी बढ़ जाता है .

उत्तर 1) **बच्चों** 2)**मृदंग के सामान** 3)**कोमलता का** 4) **रंध्रों** 5) **उनका साहस और भी बढ़ जाता है .**

—----------

पाठ 3 कुँवर नारायण

1 कविता के बहाने

काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरी

प्रश्न-**1.**

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने**?**
कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने **?**
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने
फूल क्या जाने **?**

उपरोक्त काव्यान्श के आधार पर निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

i) प्रस्तुत काव्यान्श के कवि कौन है**?**

क) कुँवर नारायण
ख) हरिवंश राय बच्चन
ग) आलोक धन्वा
घ) रामधीर सिंह 'दिनकर'

ii) उपरोक्त पंक्तियाँ किस कविता से उद्धृत हैं**?**

क) बात सीधी थी पर

ख) कविता के बहाने

ग) आत्मपरिचय

घ) दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

iii) ' कल्पना के पंख लगा उड़ने ' के तात्पर्य के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन – कौन से कथन असत्य हैं **?**

(i) कविता की भाषा विल्कुल स्पष्ट होती है |

(ii) कविता आकाश में चिड़ियों की तरह नहीं उड़ती है |

(iii) कविता कल्पना और विचारों की उड़ान है

(iv) कविता में विचारों और भावों की परिपक्वता है |

(क) **i** और **iv**

(ख) **ii** और **iii**

(ग) **i** और **ii**

(घ) **iii** और **iv**

iv) कविता में सुगंध और सौन्दर्य कौन भर देता है**?**

क) कवि

ख) फूल

ग) चिड़िया

घ) कविता

v) कविता में किसकी तुलना बहुत मनोरम बन पड़ी है **?**

क) कविता और फूल की

ख) कविता और कवि की

ग) फूल और चिड़िया की

घ) चिड़िया और कविता की

उत्तर

i) **कुँवर नारायण** ii) **कविता के बहाने** iii)**(क)** i **और** iv iv) **कवि** v) **कविता और फूल की**

प्रश्न-**2**

कविता एक खेल है बच्चों के बहाने

बाहर भीतर

यह घर**,** वह घर

सब घर एक कर देने के माने

बच्चा ही जाने।

उपरोक्त काव्यान्श के आधार पर निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

i) कविता में बच्चों के खेलो को देखकर कवि क्या करता है **?**

क) शब्द-क्रीड़ा

ख) जल क्रीड़ा

ग) नए-नए खेल

घ) चिड़िया के साथ खेलता है

ii) कविता को खेल क्यों कहा गया है**?**

क) कविता एक खेल है

ख) खेलना भी कविता है

ग) बच्चों का खेल है

घ) कविता रचना भी कवि की एक क्रीड़ा है

iii) बच्चा खेल-खेल में कौन –सा महत्त्वपूर्ण काम कर लेता है **?**

क) अपने-पराए के भेद को समाप्त कर देता है

ख) अपने-पराए के भेद को बढ़ा देता है

ग) दुश्मनी बढा देता है

घ) उपरोक्त में कोई नहीं

iv) 'बच्चों के बहाने' में कौन- सा अलंकार है**?**

क) रूपक

ख) उपमा

ग) अनुप्रास

घ) यमक

v) बच्चों के अनुसार कवि-कर्म भी क्या है**?**

क) एक खेल है

ख) दंड

ग) सजा

घ) पूजा

उत्तर

i)**शब्द-क्रीड़ा** ii)**कविता रचना भी कवि की एक क्रीड़ा है**

iii) **अपने-पराए के भेद को समाप्त कर देता है** iv)**अनुप्रास** v) **एक खेल है।**

पाठ 4 रघुवीर सहाय
कैमरे में बंद अपाहिज

काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरी

प्रश्न-**1**॰

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे
तो क्या आप अपाहिज हैं **?**
तो आप क्यों अपाहिज हैं **?**
आपका अपाहिजपन
तो दुख देता होगा
देता है **?**

(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा)

हाँ तो बताइए आपका दुख क्या है

जल्दी बताइए

वह दुख बताइए

बता नहीं पाएगा।

उपरोक्त काव्यांश के आधार पर निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

i) उपरोक्त काव्यांश के कवि कौन हैं**?**

क) रघुवीर सहाय

ख) कुँवर नारायण

ग) हरिवंशराय बच्चन

घ) आलोक धन्वा

ii) उपरोक्त काव्यान्श किस कविता से उदधृत है**?**

क) आत्मपरिचय

ख) कैमरे में बंद अपाहिज

ग) पतंग

घ) अग्निपथ

iii) दूरदर्शन के संचालक स्वयं को क्या मानते हैं**?**

क) अपाहिज

ख) दरिद्र

ग) समर्थ और शक्तिमान

घ) दीन-हीन

iv) कविता में किस पर व्यंग्य किया गया है**?**

क) अपाहिज पर

ख) गरीबों पर

ग) दूरदर्शन के कार्यक्र -संचालकों की कार्य-शैली पर

घ) वृद्धों पर

v) अपाहिज से पूछे गए प्रश्न किस बात के परिचायक हैं**?**

क) समर्थवान होने के

ख) अमीर होने के

ग) अपाहिज होने के

घ) अपाहिजों से पूछे गए प्रश्न बेतुके,और व्यर्थ हैं .

प्रश्न-**2**०

सोचिए

बताइए

आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है

कैसा

यानी कैसा लगता है

(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या कैसा **?)**

सोचिए

बताइए

थोड़ी कोशिश करिए

(यह अवसर खो देंगे **?)**

आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते

हम पूछ पूछ कर उसको रुला देंगे

इंतज़ार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का

करते हैं **?**

(यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा)

उपरोक्त काव्यान्श के आधार पर निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

i) कौन अपने दुख के बारे में मौन रहता है **?**

क) अपाहिज

ख) कवि

ग) संपन्न व्यक्ति

घ) दर्शक

ii) 'आपको इस तरह का दर्द होता है'-यह कौन पूछता है**?**

क) अपाहिज

ख) कवि

ग) दर्शक

घ) कार्यक्रम संचालक

iii) कौन कहता है कि हमें अपने कार्यक्रम को रोचक बनाना है**?**

क) कार्यक्रम संचालक

ख) कवि

ग) अपाहिज

घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

iv)कार्यक्रम-संचालक अपाहिजों के दुख को बार-बार प्रकट करके अपने कार्यक्रम को क्या बनाना चाहता है**?**

क) बेकार

ख) अरोचक

ग) रोचक

घ) मनोरंजक

v) दर्शक भी किसमें रस लेते हैं**?**

क) दीन–दुखियों के दर्द को देखने में

ख) दीन–दुखियों की तरक्की में

ग) दीन –दुखियों को प्रसन्न देखकर

घ) उपरोक्त में कोई नहीं

प्रश्न-**3**

फिर हम पर्दे पर दिखलाएँगे
फूली हुई आँख की एक बड़ी तस्वीर
बहुत बड़ी तस्वीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश
दर्शक
धीरज रखिए
देखिए
हमें दोनों एक संग रुलाने हैं
आप और वह दोनों
(कैमरा
बस करो
नहीं हुआ
रहने दो
परदे पर वक्त की कीमत है)
अब मुसकराएंगे हम
आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम
(बस थोड़ी ही कसर रह गई)
धन्यवाद

उपरोक्त काव्यान्श के आधार पर निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

i) इस काव्यान्श में किस पर व्यंग्य किया गया है**?**

क) अपाहिज पर
ख) दर्शक पर
ग) दूरदर्शन पर
घ) दूरदर्शन के कार्यक्रम-संचालकों पर

ii) कार्यक्रम-संचालक अपाहिजों तथा दर्शकों को एक साथ क्या करना चाहता है**?**

क) हंसाना
ख) खिलाना
ग) रुलाना
घ) बैठाना

iii) प्रस्तुत काव्यांश में किस पर प्रकाश डाला गया है**?**

क) मीडिया कर्मियों की हृदयहीन कार्य-शैली पर
ख) अपाहिजों की दीन-हीनता पर
ग) दर्शकों की खुशी पर
घ) अमीरों की संपन्नता पर

iv) काव्यान्श में दूरदर्शन के किस कार्यक्रमों की पोल–पट्टी खोली गई है**?**

क) सांस्कृतिक

ख) सामाजिक

ग) राजनीतिक

घ) दार्शनिक

v) उपरोक्त काव्यांश के कवि कौन हैं**?**

क) रघुवीर सहाय

ख) निराला

ग) हरिवंश राय बच्चन

घ) आलोक धन्वा

'कैमरे में बंद अपाहिज' का सम्पूर्ण उत्तर अब एक साथ –

उत्तर संकेत – **1**॰ **i (**क) **ii (**ख) **iii (**ग) **iv (**ग) **v (**घ)

उत्तर –संकेत – **2**॰ **i (**क) **ii (**घ) **iii (**क) **iv (**ग) **v (**क)

उत्तर संकेत – **3**॰ **i (**घ) **ii (**ग) **iii (**क) **iv (**ख) **v (**क)

शमशेर बहादुर सिंह (उषा)

1.'प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे

भोर का नभ

राख से लिपा चौका

(अभी गिला पडा है)

बहुत काली सिल

जरा से लाल केसर से

कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने

'नील जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह

जैसे हिल रही हो।
और …..
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।'

प्रश्न **1.** नीले आकाश की तुलना नीले शंख से की है। इसीलिए यहां ..... अलंकार है।

(1) उत्प्रेक्षा

(2) यमक

(3) उपमा

(4) मानवीकरण

उतर- उपमा

प्रश्न-**2.** उपर्युक्त पद्यांश की भाषा शैली की विशेषता है **?**

(1) तत्सम त्तथा देशज शब्द

(2) तद्भव तथा तत्सम शब्द

(3) उर्दू तथा तत्सम शब्द

(4) तत्सम तथा आंचलिक शब्द

उतर- तत्सम तथा आंचलिक शब्द

प्रश्न **-3.** बहुत काली सिल **,** जरा से लाल केसर से" और "स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने" में कौनसा अलंकार है।

(1) मानवीकरण

(2) अतिशयोक्ती

(3) उत्प्रेक्षा

(4) दृष्टान्त

उतर उत्प्रेक्षा

प्रश्न-**4.** उपर्युक्त पंक्तियों में कौनसा छंद है **?**

(1) दोहा छंद

(2) चौपाई छंद

(3) कुंडलिया छंद

(4) मुक्त छंद

उत्तर- मुक्त छंद

प्रश्न-**5.** उपर्युक्त पंक्तियों में कौनसा काव्य-गुण है **?**

(1) ओज गुण

(2) प्रसाद गुण

(3) माधुर्य गुण

(4) कोई नहीं

उत्तर- माधुर्य गुण

……

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (बादल राग)

(1)

तिरती हैं समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया-
जगके दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया-
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,

धन्, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशावों से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
तक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल

प्रश्न-**1.** बादल को किस रूप में चित्रित किया गया है **?**

(1) क्रांतिदूत

(2) मेघदूत

(3) अग्रदूत

(4) यमदूत

उत्तर- क्रांतिदूत

प्रश्न-**2.** पृथ्वी में सोए हुए अंकुरों पर किसका प्रभाव पड़ता हैं**?**

(1) पृथ्वी का

(2) धनुष का

(3) बादलों की गर्जना का

(4) अग्नि का

उत्तर-बादलों की गर्जना का

प्रश्न-**3** सुप्त अंकुर किसका प्रतीक है **?**

(1) बीज के नवजात रूप का

(2) शोषकों का

(3) शोषितों का

(4) उत्पीड़क का

उत्तर-शोषितों का

प्रश्न-**4.** कवि के अनुसार बादलों की युद्धरूपी नौका में क्या लदा है **?**

1) हथियार

2) खाने का सामान

3) आदमी की इच्छाएँ

4) बादल और समीर

उत्तर-आदमी की इच्छाएँ

प्रश्न-**5.** 'समीर-सागर पर' इसमें कौनसा अलंकार है **?**

1) यमक

2) अनुप्रास

3) रूपक

4) रूपक

उत्तर-रूपक

(2) फिर-फिर
बार-बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार,

सुन-सुन घोर वज्र-हुंकार।
अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर,
क्षत-विक्षत हत अचल-शरीर,
गगन-स्पर्शी स्पर्धा धीर।
हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार
शस्य अपार,
हिल-हिल ,
खिल-खिल,
हाथ हिलाते,
तुझे बुलाते,
विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।‘

प्रश्न-**1.** कवि के अनुसार ‘गगन-स्पर्शी स्पर्धा धीर’ में कौन लगे हुए हें **?**

(1) शोषित

(2) पूंजीपति

(3) सर्वहारा

(4) आम जनता \

उत्तर-पूंजीपति

प्रश्न-**2.** उपर्युक्त पंक्तियों में कौनसा प्रमुख रस है **?**

(1) ओज रस

(2) करुण रस

(3) भयानक रस

(4) वीर रस

उत्तर-वीर रस

प्रश्न-**3.** उपर्युक्त पंक्तियों में कौनसा प्रमुख बिम्ब है **?**

(1) घ्राण बिम्ब

(2) स्पर्श बिम्ब

(3) नाद बिम्ब

(4) आस्वाद बिम्ब

उत्तर-नाद बिम्ब

प्रश्न-**4.** उपर्युक्त कविता के रचनाकार कौन है **?**

(1) रामधारी सिंह दिनकर

(2) सुमित्रा नंदन पन्त

(3) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

(4) महादेवी वर्मा

उत्तर-सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

प्रश्न-**5.** उपर्युक्त कविता के रचनाकार मूलतः हिंदी साहीत्य की किस धारा से सम्बंधित है **?**

(1) प्रगतिवाद

(2) छायावाद

(3) नयी कविता

(4) प्रयोगवाद

उत्तर-छायावाद

(3)_"रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष
अंगना-अग से लिपट भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं।
धनी, वज्र-गर्जन से बादल
त्रस्त नयन-मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया हैं उसका सार,
धनी, वज़-गजन से बादल।
ऐ जीवन के पारावार!"

प्रश्न-**1.** उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने किसकी दयनीय दशा का सजीव चित्रण किया है।

(1) मजदूर की

(2) स्त्री की

(3) किसान की

(4) तीनों की

उत्तर-किसान की

प्रश्न-**2.** उपर्युक्त कविता में कौनसी धारा का स्वर है **?**

(1) छायावादी

(2) प्रयोगवादी

(3) प्रगतिवादी

(4) नयी कविता

उत्तर-प्रगतिवादी

प्रश्न-**3.** 'पारावार' शब्द का पर्यायवाची शब्द नहीं है-

(1) जलधि

(2) अम्बुद

(3) समुद्र

(4) सागर

उत्तर-अम्बुद

प्रश्न-**4.** उपर्युक्त पंक्तीयों में भाषा शैली की एक विशेषता कौनसी है **?**

(1) कठिन शब्दावली का प्रयोग

(2) तद्भव शब्दों का प्रयोग

(3) आंचलिक शब्दों का प्रयोग

(4) तत्सम शब्दावली का प्रयोग

उत्तर-तत्सम शब्दावली का प्रयोग

प्रश्न-**5.** **‘**त्रस्त नयन-मुख ढाँप रहे हैं।

जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,

चूस लिया हैं उसका सार,

हाड़-मांस ही है आधार |**”**

इन पंक्तियों में कौनसा रस है **?**

(1) भयानक रस

(2) वीर रस

(3) करुण रस

(4) वीभत्स रस

उत्तर- करुण रस

पाठ 8 कवितावली (उत्तरकाण्ड से)

कवि - तुलसीदास

पंडित काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरी

1)किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी,भाट,
चाकर, चपला नट, चोर, चार, चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गुढ़त, चढ़त गिरी,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही की पचत, बेचत बेटा-बेटकी।।
'तुलसी ' बुझाई एक राम घनस्याम ही ते
आग बड़वागितें बड़ी हैं आग पेटकी।।

पठित काव्यांश के आधार पर दिए गए विकल्पों से प्रश्नों के सही उत्तर चुनिए।

क) तुलसीदास के समय समाज की स्थिति कैसी थी?

1) लोग बहुत निर्धन थे

2) लोगों के पास काम धंधा नहीं था

3) भूख मिटाने के लिए भी कोई भी अनुचित कार्य करने को तैयार थे

4) उपर्युक्त सभी।

ख) तुलसीदास के अनुसार पेट की आग को कौन बुझा सकता है?

1) देश का राजा

2) लोगों की कर्मठता

3) राम रूपी घनश्याम

4) श्री कृष्ण की भक्ति

ग) पद के अनुसार पेट की आग किस आग से भी बड़ी है?

1) दावाग्नि

2) बड़वाग्नि

3) घर की आग

4)हृदय की आग

घ)प्रस्तुत पद की भाषा और छंद क्या है?

1) ब्रजभाषा और सवैया छंद

2) अवधी भाषा और कविता छंद

3) अवधी भाषा और सवैया छंद

4) ब्रजभाषा और कवित्त छंद

ड.) "तुलसी" बुझाई एक राम घनश्याम ही तें - पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ?

1) रूपक अलंकार

2) उत्प्रेक्षा अलंकार

3) उपमा अलंकार

4) अनुप्रास अलंकार

उत्तर

क)4) **उपर्युक्त सभी।**

ख)3) **राम रूपी घनश्याम**

ग)2) **बड़वाग्नि**

घ)4) **ब्रजभाषा और कवित्त छंद**

ड.)1) **रूपक अलंकार**

****

(2) खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों ‘ कहाँ जाई, का करी **?’**
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबैं पै, राम ! रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु !
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।

पठित काव्यांश के आधार पर दिए गए विकल्प से प्रश्नों के सही उत्तर चुनिए।

क)प्रस्तुत पद में तत्कालीन समाज की किस स्थिति का चित्रण है **?**

1) शासन की निरंकुशता का

2) समाज की कर्मठता का

3) अकाल एवं बेरोजगारी की भयावहता का

4) दैवीय प्रकोप का

ख) तुलसीदास के अनुसार वेद पुराण आदि ग्रंथों में क्या उल्लेख मिलता है**?**

1) संकट काल में एक श्री राम ही सहायक है

2) ज्ञान से बड़ा कोई नहीं है

3) भाग्य के भरोसे बैठने से कुछ नहीं मिलता

4) गरीबी कर्मठता से ही दूर होगी

ग) प्रस्तुत पद में कवि तुलसीदास ने दरिद्रता को किसका रूपक दिया है **?**

1) मृत्यु का

2) अंधकार का

3) पाप का

4) रावण का

घ) दारिद- दशानन और दुरित - दहन में कौन सा अलंकार है **?**

1) उपमा अलंकार

2) रूपक अलंकार

3) उत्प्रेक्षा अलंकार

4) अनुप्रासअलंकार

ड.) यह कविता तुलसीदास की किस रचना से उद्धृत है **?**

1) कवितावली

2) गीतावली

3) रामचरितमानस

4) विनय पत्रिका

उत्तर

क)3) **अकाल एवं बेरोजगारी की भयावहता का**

ख)1) **संकट काल में एक श्री राम ही सहायक है**

ग)4) **रावण का**

घ)2) **रूपक अलंकार**

ड.)1) **कवितावली**

—----------

(3)

धूत कहो, अवधूत कहों, रजपूतु कहीं, जोलहा कहों कोऊ।
कहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सौऊ।
तुलसी सरनाम गुलामु हैं राम को, जाको रूचै सो कहें कछु ओऊ।
माँग कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबो को एकु न दैबे को दोऊ।।

पठित काव्यांश के आधार पर दिए गए विकल्प से प्रश्नों के सही उत्तर चुनिए।

क)पद में कवि ने किस पर व्यंग्य किया है **?**

1) तत्कालीन शिक्षा नीति पर

2) समाज में गरीबों और महिलाओं की दुरावस्था पर

3) आर्थिक विषमता पर

4) समाज के तथाकथित ठेकेदारों पर

ख) धूत एवं अवधूत का क्या अर्थ है **?**

1) दुष्ट और घर से भागा हुआ

2) धूर्त और संन्यासी

3) गृहस्थ और भक्त

4) इनमें से कोई नहीं

ग) कवि स्वयं को किसका गुलाम कहते हैं **?**

1) धर्म के ठेकेदारों का

2) श्री राम का

3) रामभक्तों का

4) ब्राह्मण समाज का

घ) मस्जिद में सोने की बात कहकर कवि ने —----------और —----------का परिचय दिया है।

1) धार्मिक उदारता और सामाजिक समरसता का

2) महानता और दया का

3) स्वाभिमान और विरक्ति का

4) अपने प्रभु श्रीराम की श्रेष्ठता का

ड.) प्रस्तुत पद में किस भाषा और छंद का प्रयोग किया गया है **?**

1) अवधी भाषा और सोरठा छंद

2) अवधी भाषा और सवैया छंद

3) ब्रजभाषा और सवैया छंद

4) ब्रजभाषा और कवित्त छंद

उत्तर

क)4) **समाज के तथाकथित ठेकेदारों पर**

ख)2) **धूर्त और संन्यासी**

ग)2) **श्री राम का**

घ)1) **धार्मिक उदारता और सामाजिक समरसता का**

ड.)3) **ब्रजभाषा और सवैया छंद**

.....

2. **लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप**

पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरी

1)

तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैहउँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाई पद, बंदि चलेउ हनुमंत।
भरत बाहु बल सील गुन, प्रभु पद प्रीति अपार।
मन महुँ जात सराहत, पुनि-पुनि पवनकुमार।।

क) प्रस्तुत पद में कौन किससे संवाद कर रहा है **?**

1)राम लक्ष्मण से

2) राम हनुमान से

3) हनुमान भरत से

4)भरत हनुमान से

ख)हनुमान ने किसकी वंदना की **?**

1) भरत के चरणों की

2) लक्ष्मण के चरणों की

3) श्री राम के चरणों की

4) प्रभु के चरणों की

ग) हनुमान भरत के किन गुणों से प्रभावित हुए **?**

1) श्री राम के प्रति भरत की भक्ति

2) भरत के शील स्वभाव

3) भरत के बाहुबल से

4) उपर्युक्त सभी

घ) प्रस्तुत पद्यांश की भाषा एवं छंद क्या है **?**

1) अवधी भाषा एवं दोहा छंद

2) अवधी भाषा एवं चौपाई छंद

3) अवधी भाषा एवं सोरठा छंद

4) अवधी भाषा एवं सवैया छंद।

ड.) यह छंद तुलसीदास की किस रचना से एवं किस कांड से लिया गया है **?**

1) कवितावली एवं उत्तर कांड से

2) गीतावली एवं उत्तर कांड से

3) रामचरितमानस एवं उत्तरकांड से

4) रामचरितमानस एवं लंका कांड से।

—----------

उत्तर

क)3) **हनुमान भरत से**

ख)1) **भरत के चरणों की**

ग)4) **उपर्युक्त सभी**

घ)1) **अवधी भाषा एवं दोहा छंद**

ड.)4) **रामचरितमानस एवं लंका कांड से।**

****

2)

उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी ।।
अर्ध राति गई कपि नहिं आयउ। राम उठाई अनुज उर लायउ ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेऊँ नहिं ओहू।।

क) प्रस्तुत छंद में किस प्रसंग का वर्णन किया गया है **?**

1) राम और रावण के युद्ध का

2) लक्ष्मण की मूर्च्छा और राम के विलाप का

3) हनुमान के द्वारा संजीवनी बूटी लाना

4) लक्ष्मण और मेघनाद युद्ध का।

ख) राम किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं**?**

1) वैद्यराज सुषेण की

2) लक्ष्मण की मूर्च्छा टूटने की

3) वानर राज हनुमान की

4) अपनी पत्नी सीता के

ग) पद्यांश के अनुसार लक्ष्मण का स्वभाव कैसा था **?**

1) उदार और कोमल

2) क्रोधी और कठोर

3) चंचल और स्वाभिमानी

4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

घ) राम कहते हैं कि यदि मैं जानता कि —------- (कथन पूरा कीजिए)

1) सीता का हरण हो जाएगा तो वनवास न आता

2) इतनी पीड़ा सहनी पड़ती तो पिता के वचन न मानता

3) युद्ध का ज्ञान होता तो वनवास न स्वीकार करता

4) वन में अपने अनुज को का वियोग सहना पड़ेगा तो पिता के वचन नहीं मानता।

ड.) प्रस्तुत पद्यांश में कौन सा छंद एवं रस है **?**

1) सवैया छंद एवं शांत रस

2) सोरठा छंद एवं करुण रस

3) चौपाई छंद एवं करुण रस

4) चौपाई छंद एवं शांत रस

उत्तर

क)2) **लक्ष्मण की मूच्छा और राम का विलाप**

ख)3) **वानर राज हनुमान की**

ग)1) **उदार और कोमल**

घ)4) **वन में अपने अनुज का वियोग सहना पड़ेगा तो पिता के वचन नहीं मानता।**

ड.)3) **चौपाई छंद एवं करुण रस**

****

3)

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जिय जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गवांई।।
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नहीं।।

क)प्रस्तुत छंद में राम के किस रूप का वर्णन है **?**

1) साधारण मनुष्य का रूप

2) मर्यादा पुरुषोत्तम राम करो

3) विष्णु अवतार का

4) उनके शक्तिशाली रूप का

ख) प्रस्तुत पद्यांश में राम ने भ्रातृ प्रेम की तुलना में किन्हे हीन माना है **?**

1) पुत्र **,**समय**,** नारी **,**महल और परिवार

2) पुत्र **,**राज्य**,** स्त्री **,** घर और परिवार

3) पुत्र , धन, स्त्री, घर और परिवार

4) पुत्र ,मित्र, स्त्री , घर और परिवार

ग) सहोदर का अर्थ क्या है **?**

1) दूर के रिश्ते में भाई

2) चचेरा भाई

3) ममेरा भाई

4) सगा भाई

घ) लक्ष्मण के बिना राम की स्थिति कैसी हो जाएगी **?**

1) पंख के बिना पक्षी

2) मणि के बिना सांप सूँड़ के बिना हाथी

3) केवल दूसरा सही है

4) पहला और दूसरा दोनों सही है।

ड.) प्रस्तुत छंद में राम किस अपयश से व्याकुल है **?**

1) अपनी पत्नी की रक्षा नहीं कर सके

2) भाई को मौत के मुंह में डाल देने का अफेयर्स

3) पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो देना

4) अपनी पत्नी को खो देना।

उत्तर

क)1) **साधारण मनुष्य का रूप**

ख)3) **पुत्र , धन, स्त्री, घर और परिवार**

ग)4) **सगा भाई**

घ)4) **पहला और दूसरा दोनों सही है।**

ड.)3) **पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो देना**

****

4)

अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहहि निठुर कठोर उर मोरा।।
निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अधारा।।
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी। सब बिधि सुखद परम हित जानी।।
उतरु काह दैहऊँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई।।
बहु बिधि सोचत सोचि बिमोचन। स्रवत सलिल राजिव दल लोचन।।
उमा एक अखंड रघुराई। नर गति भगत कृपालु देखाई।।

क) प्रस्तुत छंद में राम ने लक्ष्मण को क्या कहकर संबोधित किया है **?**

1) सहोदर

2) मित्र

3) पुत्र

4) सखा

ख) प्रस्तुत छंद में राम ने लक्ष्मण को किसके प्राणों का आधार कहा है **?**

1) माता कौशल्या के प्राणों का आधार

2) पिता दशरथ के प्राणों का आधार

3) पत्नी उर्मिला के प्राणों का आधार

4) माता सुमित्रा के प्राणों का आधार

ग) राम लक्ष्मण से मूर्छा से उठकर क्या सिखाने की विनती करते हैं **?**

1) रावण से किस प्रकार युद्ध लड़ा जाए

2) वे अयोध्या लौट कर माता सुमित्रा को क्या जवाब देंगे

3) वे अयोध्या लौट कर उर्मिला को क्या जवाब देंगे

4) वह यह कष्ट कैसे सहन करें।

घ)प्रस्तुत छंद में सोच- विमोचन कौन है **?**

1) श्री राम

2) लक्ष्मण

3) भगवान शंकर

4) देवी उमा

ड.) नर गति भगत कृपाल दिखाई- पंक्ति का आशय क्या है**?**

1) राम ने अपनी लीला दिखाई

2) राम ने भक्तों पर अपनी कृपा दिखाई

3) भक्तों पर कृपा दिखाने वाले राम ने साधारण मनुष्य की दशा दिखाई।

4) राम ने भक्तों को अपना अद्वितीय रूप दिखाया।

उत्तर

क)3) **पुत्र**

ख)4) **माता सुमित्रा के प्राणों का आधार**

ग)2) **वे अयोध्या लौट कर माता सुमित्रा को क्या जवाब देंगे**

घ)1) **श्री राम**

ड.)3)**भक्तों पर कृपा दिखाने वाले राम ने शोकाकुल अवस्था में साधारण मनुष्य की दशा दिखाई।**

****

5)

प्रभु प्रलाप सुनि कान**,** बिकल भए बानर निकर।
आइ गयउ हनुमान**,** जिमि करुना महं बीर रस।।
हरषि राम भेंटेउ हनुमान। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ।।
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई ।।
हृदय लाइ प्रभु भेटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता।।
कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि ताहि लई आवा।।

क) प्रस्तुत काव्यांश में कौन-सा छंद है **?**

1) दोहा और चौपाई छंद

2) सोरठा और चौपाई छंद

3) दोहा और सोरठा छंद

4) सोरठाऔर सवैया छंद

ख) पूरी वानर सेना विकल क्यों हो गई **?**

1) युद्ध में लक्ष्मण को मूर्छित देखकर

2) हनुमान के न लौटने के कष्ट में

3) युद्ध के परिणाम के बारे में सोच कर

4) भाई के वियोग में राम का विलाप सुनकर

ग) हनुमान के आगमन का वर्णन किस प्रकार किया गया है **?**

1) मानो शांत रस में हास्य रस का आगमन हो गया हो

2) मानो भक्ति रस में वीर रस का आगमन हो गया हो

3) मानो करुण रस में वीर रस का आगमन हो गया हो

4) मानव शांत रस में वीर रस का आगमन हो गया हो

घ) लक्ष्मण को स्वस्थ देखकर राम ने क्या किया **?**

1) राम प्रसन्न हो गए

2) राम ने हनुमान को गले से लगा लिया

3) राम ने हनुमान के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की

4) उपर्युक्त सभी विकल्प सही है।

ड.) प्रस्तुत काव्यांश में अंत में हनुमान ने क्या किया **?**

1) हनुमान वानर सेना के साथ खुशियां मनाने लगे

2) हनुमान अपने प्रभु की वंदना करने लगे

3) हनुमान ने वैद्य सुषेण को उनके निवास स्थान पर पहुंचा दिया

4) हनुमान वानर सेना को संजीवनी लाने की पूरी कथा सुनाने लगे ।

उत्तर

क)2) **सोरठा और चौपाई छंद**

ख)4) **भाई के वियोग में राम का विलाप सुनकर**

ग)3) **मानो करुण रस में वीर रस का आगमन हो गया हो**

घ)4) **उपर्युक्त सभी विकल्प सही है।**

ड.)3) **हनुमान ने वैद्य सुषेण को उनके निवास स्थान पर पहुंचा दिया**

****

6)

यह बृतांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ।।
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा ।।
जागा निसिचर देखिअ कैसा। मानहुँ कालु देह धरि वैसा ।।
कुंभकरन बूझा कहु भाई। काहे तव मुख रहे सुखाई।।
कथा कही सब तेहिं अभिमानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी।।
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे। महा महा जोधा संघारे ।।
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकंपन भारी।।
अपर महोदर आदिक बीरा। परे समर महि सब रनधीरा।।
सुनि दसकंधर बचन तब, कुंभकरन बिलखान।।
जगदबा हरि अनि अब, सठ चाहत कल्यान।।

क)प्रस्तुत छंद में किस वृतांत की बात कही गई है ?

1) हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाना

2) लक्ष्मण का उपचार

3) लक्ष्मण का स्वस्थ हो जाना

4) उपर्युक्त सभी।

ख) यह वृत्तांत सुनकर रावण की क्या दशा हुई ?

1) रावण सिर पीटकर पछताने लगा

2) रावण विलाप करने लगा

3) रावण डर गया

4) रावण चिंता में पड़ गया।

ग) नींद से जागने के बाद कुंभकरण कैसा दिखाई दे रहा था ?

1) व्याकुल और बेचैन

2) मानो स्वयं यमराज शरीर धारण करके बैठा हो

3) क्रोध में पागल

4) बहुत अलसाया हुआ।

घ) प्रस्तुत छंद में कुंभकरण ने सीता को क्या कहकर संबोधित किया है ?

1) जगत का कल्याण करने वाली

2) आदिशक्ति

3) जगत जननी

4) जगत पालक

ड.) प्रस्तुत काव्यांश में किन छंदों का का प्रयोग है ?

1) चौपाई और दोहा छंद

2) चौपाई और सोरठा छंद

3) चौपाई और कवित्त छंद

4) चौपाई और सवैया छंद

उत्तर

क)4) **उपर्युक्त सभी।**

ख)1) **रावण सिर पीटकर पछताने लगा**

ग)2) **मानो स्वयं यमराज शरीर धारण करके बैठा हो**

घ)3) **जगत जननी**

ड.)1) **चौपाई और दोहा छंद**

****

पाठ 9 फ़िराक गोरखपुरी
रुबाइयाँ

काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरी

प्रश्न **1.**

आंगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती हैं उसे गोद भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती हैं।
गूँज उठती हैं खिलखिलाते बच्चे की हँसी।
नहला के छलके छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में लेके हैं पिन्हाती कपड़े।

(1) आँगन में कौन खड़ा है **?**

क) माँ

ख) चाँद

ग) पुत्र

घ) कवि

(2) कवि ने मां की गोद में खेलते बच्चे को किस की संज्ञा दी है**?**

क) चांद की

ख) जिगर के टुकड़े की

ग) चांद के टुकडे की

घ) राज दुलारे की।

(3) "लोका देना" का अर्थ क्या है**?**

क) साथ में खेलना

ख) उछाल देना

ग) झूला झुलाना

घ) घुमाना।

4) "पिन्हाती" किस भाषा का शब्द है**?**

क) क्षेत्रीय भाषा

ख) उर्दू भाषा

ग) हिन्दी भाषा

घ) विदेशी भाषा

(5)रुबाई छंद में किन पंक्तियों के अंत में एक जैसी मात्रा होती है**?**

क) पहली दूसरी और तीसरी

ख) पहली दूसरी और चौथी

ग) दूसरी तीसरी और चौथी

घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर

1) क) माँ

2) ग) चांद के टुकडे की

3) ख) उछाल देना

4)**क) क्षेत्रीय भाषा**

5)**ख) पहली दूसरी और चौथी**

****

प्रश्न **3.**

दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौदे में जलाती हैं दिए।
आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है
बालक तो हुई चाँद में ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है।

प्रश्न

(1) दीपावली की शाम घर कैसा दिखाई दे रहा है**?**

क) स्वच्छ

ख) पुताई किया हुआ

ग) सजावट किया हुआ

घ) उपर्युक्त सभी

(2) इस अवसर पर माँ बच्चे के लिए क्या लाती है**?**

क) चीनी मिट्टी के खिलौने

ख) प्लास्टिक के खिलौने

ग) लकड़ी के खिलौने

घ) कांच के खिलौने

(3) माँ दिया कहाँ जलाती हैं**?**

क) घर की दीवारों पर

ख) घर की छत पर

ग) घर के बाहर

घ) बच्चों के घरौंदे में

(4)प्रस्तुत रुबाई में किस भाषा का प्रयोग है**?**

(क) उर्दू भाषा का प्रयोग

(ख)हिन्दी भाषा का प्रयोग

(ग) हिन्दी-उर्दू भाषा का प्रयोग

(घ) हिन्दी-उर्दू सहित लोकभाषा का प्रयोग

(5) रुबाई छंद में कौन सी पंक्ति स्वतंत्र होती है**?**

(क) पहली

(ख) दूसरी

(ग) तीसरी

(घ) चौथी

उत्तर

1)घ) उपर्युक्त सभी

2)क) चीनी मिट्टी के खिलौने

3)घ) बच्चों के घरौंदे में

4)**घ) हिन्दी-उर्दू सहित लोकभाषा का प्रयोग**

5)**(ग) तीसरी**

****

पाठ 10 **-उमाशंकर जोशी**

कविता-छोटा मेरा खेत

पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरी

छोटा मेरा खेत
छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधेड कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

1.उपर्युक्त अवतरण के कवि का नाम बताइए -

(1) उमाशंकर जोशी

(2) फ़िराक गोरखपुरी

(3) दुष्यंत कुमार

(4) शमशेर बहादुर सिंह

2.कौनसा बीज गलकर नष्ट हो गया है**?**

(1) कल्पना रूपी

(2) भाव रूपी

(3) शब्द रूपी

(4) पल्लव रूपी

3.यहाँ कवि किस खेत की बात करता है**?**

(1) छोटा खेत

(2) कागज़ रूपी खेत

(3) कल्पना

(4) क्षण

4.बीज किस रूप में अभिव्यक्त हुआ है**?**

(1) शब्द

(2) कल्पना

(3) पुष्प

(4) रसायन

5.संपूर्ण कृति का रूप कौन लेता है -

(1) शब्द

(2) भाव

(3) कागज़

(4) क्षण

सही उत्तर-1. **उमाशंकर जोशी**,2.**भाव रूपी**,3. **कागज़ रूपी खेत**,4.**शब्द**,5.**भाव**

नभ में पाँती-बँधे बगुलों के पंख**,**
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया**,**
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।
हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से।
उसे कोई तनिक रोक रक्खो।
वह तो चुराए लिए जातीं मेरी आँखें
नभ में पाँती-बंधी बगुलों की पाँखें।

1.'बगुलों के पँख' कविता में आकाश में कैसे बादलों की छाया छाई है**?**

(1) गहरे

(2) काले

(3) छितरे

(4) नीले

2. आकाश में किसकी पंक्ति बंधी है**?**

A. हंसों की

B. बत्तखों की

C. बगुलों की

D. कबूतरों की।

3.बगुलों के पंखों द्वारा क्या चुराए जाने की बात कही गई है**?**

A. मन

B. हृदय

C. बुद्धि

D. आँख

4. बगुलों के पंख काले बादलों के ऊपर तैरते किसके समान प्रतीत होते हैं**?**

A. प्रात:काल की सुंदर काया

B. सायंकाल की पीली काया

C. रात्रि की काली काया

D. साँझ की श्वेत काया

5. 'बगुलों के पंख

' कविता में साँझ की सतेज श्वेत काया क्या कर रही है**?**

A. तैर रही है

B. उड़ रही है

C. भाग रही है

D. नहा रही है

सही उत्तर-1.**काले**,2.C. **बगुलों की**3. D. **आँख**4. D. **साँझ की श्वेत काया**5. A. **तैर रही है**

गद्य - खंड

पाठ 11 . भक्तिन

लेखिका - महादेवी वर्मा

विधा - संस्मरणात्मक रेखाचित्र (स्मृति की रेखाएं संग्रह से लिया गया है।)

1. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- **(1x5=5)**

पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावतः ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख

लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गई। पर वहाँ न पिता का चिहन शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी-खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक-फेंककर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की।

(I) भक्तिन की विमाता ने पिता की बीमारी का समाचार देर से दिया | इस संबंध में कौन सी अवधारणा शामिल नहीं है

(क) पिता का भक्तिन के प्रति आगाध प्रेम

(ख) पिता द्वारा भक्तिन को संपत्ति दे देने का भय

(ग) सौतेली माता के मन में भक्तिन को दुःख से बचने की भावना

(घ) भक्तिन के मन में बसी इर्ष्या

(II) सास द्वारा भक्तिन को उसके पिता की मृत्यु की सूचना भक्तिन को क्यों नहीं दी गई**?**

(क) भक्तिन को पितृशोक से बचाए रखने के लिए

(ख) भक्तिन से असीम प्रेम के कारण

(ग) भक्तिन के द्वारा बार – बार नेहर जाने की जिद्द के कारण

(घ) रोने -विलाप करने से घर में अपशकुन

(III) सास ने भक्तिन के प्रति क्या अप्रत्याशित अनुग्रह किया**?**

(क) भक्तिन के पिता की मृत्यु की बात बताना

(ख) भक्तिन को उसके पिता के घर भेजना

(ग) भक्तिन को उसके पिता के घर न भेजना

(घ)भक्तिन के दिन प्रतिदिन के कार्यों में सहयोग देना

(IV) भक्तिन के पैरों में लगे पंख झड़ने का कारण क्या था**?**

(क) सास द्वारा किए गए छल का अहसास

(ख) पिता की मृत्यु हो जाने की आशंका

(ग) गाँववालों द्वारा उसे सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखना

(घ) तीनों विकल्प सही हैं |

(V) भक्तिन ने सौतेली माँ पर आया क्रोध कैसे शांत किया**?**

(क) नैहर का पानी न पीकर

(ख) तुरंत ससुराल वापिस आकर

(ग) अपनी सास को बुरा भला कहकर

(घ) अपने गहने उतारकर पति पर फैक – फैककर

उत्तर संकेत : i) **पिता द्वारा भक्तिन को संपत्ति दे देने का भय** ii) **रोने -विलाप करने से घर में अपशकुन** iii) **भक्तिन को उसके पिता के घर भेजना** iv) **तीनों विकल्प सही हैं** v) **अपने गहने उतारकर पति पर फैक – फैककर**

2 . निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़ कर नीचे दिए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- **(1x5=5)**

इस दंड विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी, जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी जाती पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था। इसके अतिरिक्त परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम से रायी पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा, क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने सबको अँगूठा दिखा दिया। काम नहीं

करती थी, इसलिए गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में उसी का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था। उसने लॉट-छाँट कर, ऊपर से असंतोष की मुद्रा साध और भीतर से पुलकित होते हुए जो कुछ लिया, वह सबसे अच्छा भी रहा, साथ ही परिश्रमी दंपति के निरंतर प्रयास से उसका सोना बन जाना भी स्वाभाविक हो गया।

(I) खोटे सिक्कों की 'टकसाल' किसे कहा गया है**?**

(क) भक्तिन को

(ख) सास को

(ग) जेठानियों को

(घ) बेटियों को

(II) भक्तिन को खोटे सिक्कों की टकसाल कहना समाज की किस मानसिकता को दर्शाता है**?**

(क) लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को

(ख) पुरुष वर्चस्व की स्थापना न करना

(ग) नारी की दयनीय स्थिति को दर्शाना

(घ) नारी के प्रति सम्मान की भावना को प्रदर्शित करना

(III) भक्तिन के पति की कौन सी सोच उसे समाज के अन्य लोगों से अलग करती थी**?**

(क) स्त्री के प्रति आदर की भावना होना

(ख) अत्यंत परिश्रमी होना

(ग) पत्नी से घनिष्ठ स्नेह करना

(घ) उपर्युक्त सभी सही

(IV) पति से भक्तिन को विरक्त न कर पाने पर भक्तिन के साथ क्या किया गया**?**

(क) उससे ज्यादा कार्य कराया जाने लगा |

(ख) उसे पति के साथ परिवार से अलग कर दिया |

(ग) उसे खोटे सिक्कों की टकसाल कहा जाने लगा|

(घ) घर के हर कार्य उसकी राय ली जाने लगी |

(V) भक्तिन की सास और जेठानियाँ उसकी चुगली पति के सामने क्यों करती थी **?**

(क) ताकि भक्तिन घर के काम-काज में रूचि लेने लगे

(ख) उसकी पिटाई करवाने के लिए

(ग) उसके मायके भेजने के लिए

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर संकेत : i) **भक्तिन को** ii) **नारी की दयनीय स्थिति को दर्शाना** iii) **उपर्युक्त सभी सही** iv) **उससे ज्यादा कार्य कराया जाने लगा** v) **उसकी पिटाई करवाने के लिए**

3. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- **(1x5=5)**

भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था, इसी से किशोरी से युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई। भइह से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों ने आशा की एक किरण दिखाई। विधवा बहिन के गठबंधन के लिए बड़ा जिठैत अपने तीतर लडाने वाले साले को बुला लाया, क्योंकि उसका गठबंधन हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता। भक्तिन की लड़की

भी मों से कम समझदार नहीं थी, इसी से उसने वर को नापसंद कर दिया। बाहर के बहनोई का आना चचेरे भाइयों के लिए सुविधाजनक नहीं था, अतः यह प्रस्ताव जहाँ-का-तहाँ रह गया। तब वे दोनों माँ-बेटी खूब मन लगाकर अपनी संपत्ति की देख-भाल करने लगे और 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की कहावत चरितार्थ करने वाले वर के समर्थक उसे किसी-न-किसी प्रकार पति की पदवी पर अभिषिक्त करने का उपाय सोचने लगे।

(I) भक्तिन के हठी दुर्भाग्य के संबंध में कौन सी अवधारणा शामिल नहीं है**?**

(क) भक्तिन की माता -पिता का बिछोह

(ख) सौतेली माँ से मिले कष्ट

(ग) परिवार का सुख

(घ) पति की असमय मृत्यु

(II) भक्तिन के जेठ और जिठानियाँ किस बात के लिए कटिबद्ध थे**?**

(क) भक्तिन का आत्म सम्मान नष्ट करने के लिए

(ख) भक्तिन और उसकी बेटी को अलग करने के लिए

(ग) भक्तिन और उसकी बेटियों को साथ रखने के लिए

(घ) भक्तिन की हर संभव सहायता करने के लिए

(III) भक्तिन की विधवा बेटी का पुनर्विवाह करवाने के मूल में जिठौतों की कौन से मंशा छिपी थी **?**

(क) सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह

(ख) भक्तिन के साथ अपने रिश्ते का निर्वाह

(ग) भक्तिन की जायदाद पर गिद्धदृष्टि

(घ) चचेरी बहन का घर बसने की शुभेच्छा

(IV) चचेरे भाइयों के लिए असुविधाजनक क्या था**?**

(क) अपनी पसंद के वर से भक्तिन की बेटी का विवाह होना

(ख) भक्तिन की पसंद के वर से चचेरी बहन का विवाह होना

(ग) भक्तिन की बेटी का पुनर्विवाह होना

(घ) भक्तिन और उसकी बेटी द्वारा जायदाद संभाले रखना

(V) भक्तिन की विधवा पुत्री द्वारा अपने चचेरे भाइयों की पसंद के वर से इंकार करने का मुख्य कारण क्या था**?**

(क) वर का सुंदर होना

(ख) भक्तिन को वर पसंद न आना

(ग) चचेरे भाइयों की बदनीयती का ज्ञान होना

(घ) जिम्मेदारियां न संभाल पाने का भय होना

उत्तर संकेत : i) **परिवार का सुख** ii) **भक्तिन और उसकी बेटी को अलग करने के लिए** iii) **भक्तिन की जायदाद पर गिद्धदृष्टि** iv) **भक्तिन और उसकी बेटी द्वारा जायदाद संभाले रखना** v) **चचेरे भाइयों की बदनीयती का ज्ञान होना**

—----------

पाठ 12 **बाज़ार दर्शन**

लेखक-जैनेद्र कुमार विधा - निबंध

प्रश्न-**1**०

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है। पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत मे जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा । मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ो का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा सा उपाय है। वह यह है कि बाजार जाओ तो खाली मन न हो । मन खाली हो, तब बाजार न जाओ । कहते हैं कि लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए । पानी भीतर हो तो ,लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य में भरा हो तो बाजार भी फैला का फैला ही रह जाएगा । तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा,क्योंकि तुम कुछ न कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना ।

उपरोक्त गद्यान्श के आधार पर निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

i) प्रस्तुत गद्यान्श किस पाठ से संकलित है**?**

क) भक्तिन

ख) बाजार –दर्शन

ग) नमक

घ) शिरीष के फूल

ii) उपरोक्त गद्यान्श के लेखक कौन हैं**?**

क) महादेवी वर्मा

ख) जैनेन्द्र कुमार

ग) धर्मवीर भारती

घ) विष्णु खरे

iii) जादू किसकी राह से काम करती है**?**

क) कान की

ख) आँख की

ग) नाक की

घ) मुँह की

iv)बाजार का जादू किस पर अधिक असर करता है**?**

क) जिनका मन खाली होता है।

ख) जिनका मन भरा रहता है।

ग) जिनके जेब में पैसे होते हैं।

घ) जिनके जेब में पैसे नहीं होते हैं।

v) बाजार का आकर्षण ग्राहकों को कौन-सी चीजें खरीदने के लिए ललचाता है**?**

क) जरूरत की चीजें

ख) अपनी पसंद की चीजें

ग) अच्छी चीजें

घ) व्यर्थ की चीजें

उत्तर संकेत – 1० i (**ख**) ii (**ख**) iii (**ख**) iv (**क**) v (**ग**)

प्रश्न-3॰

क्या जाने उस भोले आदमी को अक्षर-ज्ञान तक भी है या नहीं। और बड़ी बातें उसे मालूम क्या होंगी। और हम आप न जाने कितनी बड़ी बड़ी बातें जानते हैं। इससे यह तो हो सकता है कि वह चूरन वाला भगत हम लोगों के सामने एकदम नाचीज़ आदमी हो। लेकिन आप पाठकों की विद्वान श्रेणी का सदस्य होकर भी मैं यह स्वीकार नहीं करना चाहता हूँ कि उस अपदार्थ प्राणी को वह प्राप्त है जो हम में से बहुत कम को शायद प्राप्त है। उस पर बाजार का जादू वार नहीं कर पाता । माल बिछा रहता है,और उसका मन अडिग रहता है। पैसा उससे आगे होकर भीख तक माँगता है कि मुझे लो । लेकिन उसके मन में पैसे पर दया नहीं समाती। वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता छोड़ देता है। ऐसे आदमी के आगे क्या पैसे कि व्यंग्य-शक्ति कुछ भी चलती होगी **?** क्या वह शक्ति कुंठित रहकर सलज्ज ही न हो जाती होगी **?**

उपरोक्त गद्यान्श के आधार पर निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

i) यहाँ किस भोले आदमी की बात की जा रही है**?**

क) चूरन वाले भगत जी की

ख) पान वाले भगत जी की

ग) परचून वाले भगत जी की

घ) उपरोक्त सभी

ii) अपदार्थ का क्या अर्थ है**?**

क) अकिंचन

ख) बेचारा,बिना महत्त्व का

ग) हलका-फुलका

घ) उपरोक्त सभी

iii) लोगों को लुभाने,प्यासा बनाने,तृष्णा से व्याकुल बनाने और लोभ से पागल बनाने की शक्ति को क्या कहते हैं**?**

क) हास्य–शक्ति

ख) व्यंग्य-शक्ति

ग) अश्व शक्ति

घ) मृग शक्ति

iv) किसके मन में सांसारिक वस्तुओं को पाने की पागल वासना नहीं है**?**

क) लेखक के

ख) ग्राहकों के

ग) भगत जी के

घ) लोभ युक्त मनुष्य के

v) भोला किसे कहा गया है**?**

क) भगत जी को

ख) लेखक को

ग) ग्राहक को

घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर संकेत – **3॰ i (**क) **ii (**घ) **iii (**ख) **iv (**ग) **v (**क)

----------इति----------

पाठ 13.**काले मेघा पानी दे**

लेखक - डॉ. धर्मवीर भारती

विधा - संस्मरण

पठित गद्यांश

1. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- **(1x5=5)**

हम आज देश के लिए करते क्या हैं**?** माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नामो-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जांचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं**?** काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल प्यासे के प्यासे रह जाते हैं। आखिर कब बदलेगी ये स्थिति **??...**

(i)आज हम देश के लिए क्या नहीं करना चाहते**?**

(1)सेवा

(2)त्याग

(3)मेहनत

(4)कोई भी विकल्प ठीक नहीं है

उत्तर -त्याग

(ii)हम चटखारे लेकर क्या करते हैं**?**

(1) भ्रष्टाचार

(2) अपने भ्रष्टाचार की बातें

(3) दूसरों के भ्रष्टाचार की बातें

(4) सभी विकल्प ठीक हैं

उत्तर-दूसरों के भ्रष्टाचार की बातें

(iii)हमारा एकमात्र लक्ष्य क्या रह गया है**?**

(1) समाजसेवा

(2) स्वार्थसिद्धि

(3) भ्रष्टाचार

(4) त्याग

उत्तर-स्वार्थसिद्धि

(iv)काले मेघा उमड़ने के बावजूद गगरी फूटी और बैल प्यासा क्यों रह जाता है**?**

(1) हमारे अपने भ्रष्टाचार के कारण

(2) बारिश न होने के कारण

(3) गगरी और बैल में ही कमी होने के कारण

(4) कोई भी विकल्प ठीक नहीं है

उत्तर-हमारे अपने भ्रष्टाचार के कारण

(v)इस गद्यांश में लेखक क्या संदेश देता है**?**

(1) हमें दूसरों के काम पर ध्यान देना चाहिए

(2) हमें सभी को पानी पिलाना चाहिए

(3) हमें दूसरों के भ्रष्टाचार की बातें करनी चाहिएँ

(4) हमारे मन में देश के लिए त्याग की भावना होनी चाहिए

उत्तर-हमारे मन में देश के लिए त्याग की भावना होनी चाहिए

2. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- **(1x5=5)**

मैं असल में था तो इन्हीं मेढक-मंडली वालों की उमर का, पर कुछ तो बचपन के आर्यसमाजी संस्कार थे और एक कुमार सुधार सभा कायम हुई थी उसका उपमंत्री बना दिया गया था| सो समाज-सुधार का जोश कुछ ज़्यादा ही था| अंधविश्वासों के खिलाफ तो तरकस में तीर रखकर घूमता रहता था| मगर मुश्किल यह थी कि मुझे अपने बचपन में जिससे सबसे ज़्यादा प्यार मिला वे थीं जीजी| यूँ रिश्ते में मेरी कोई नहीं थीं, उम्र में मेरी माँ से बड़ी थीं, पर अपने लड़के-बहू सबको छोड़ कर उनके प्राण मुझी में बसते थे| और वे थीं उन तमाम रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा अनुष्ठानों की खान जिन्हें कुमार सुधार सभा का यह उपमंत्री अंधविश्वास कहता था, और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता था| पर मुश्किल यह थी कि उनका कोई पूजा-विधान, कोई त्योहार अनुष्ठान मेरे यहाँ पूरा नहीं होता था| दीवाली है तो गोबर और कौड़ियों से गोवर्धन और सतिया बनाने में लगा हूँ, जन्माष्टमी है तो रोज़ आठ दिन की झाँकी तक को सजाने और पंजीरी बाँटने में लगा हूँ, हर-छट है तो छोटी रंगीन कूल्हियों में भूजा भर रहा हूँ| किसी में भुजा चना, किसी में भुनी मटर, किसी में भुने अरवा चावल, किसी में भुना गेहूँ| जीजी यह सब मेरे हाथ से करातीं, ताकि उनका पुण्य मुझे मिले| केवल मुझे|

(i)लेखक के गाँव में कौनसी सभा बनी थी**?**

(1) कुमार सुधार सभा

(2) आर्यसमाज

(3) मेढक-मंडली

(4) मित्र-मंडली

उत्तर-कुमार सुधार सभा

(ii)लेखक किसका विरोध करता था**?**

(1) आर्यसमाज का

(2) अंधविश्वासों का

(3) कुमार सुधार सभा का

(4) गाँव वालों का

उत्तर-अंधविश्वासों का

(iii)जीजी लेखक की क्या लगती थीं**?**

(1) बहन **(2)** माँ

(3) आंटी **(4)** कुछ नहीं

उत्तर-माँ

(iv)जीजी सभी धार्मिक अनुष्ठान लेखक से क्यों करवाती थीं**?**

(1) क्योंकि लेखक उन अनुष्ठानों को अच्छे से करना जानता था

(2) क्योंकि लेखक उन अनुष्ठानों में होने वाले मंत्रों को जानता था

(3) क्योंकि वे चाहती थीं कि उनका पुण्य लेखक को मिले

(4) क्योंकि वो लेखक की रुचि उन अनुष्ठानों में जगाना चाहती थीं

उत्तर-क्योंकि वे चाहती थीं कि उनका पुण्य लेखक को मिले

(v)जीजी कौनसे अनुष्ठान लेखक से करवाती थीं**?**

(1) दीवाली पर गोबर और कौड़ियों से गोवर्धन और सतिया बनाना

(2) जन्माष्टमी है पर रोज़ आठ दिन की झाँकी को सजाना और पंजीरी बाँटना

(3) हर-छट पर छोटी रंगीन कूल्हियों में भूजा भरना

(4) सभी विकल्प ठीक हैं

उत्तर-सभी विकल्प ठीक हैं

3. निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :- **(1x5=5)**

शहरों की तुलना में गाँव में और भी हालत खराब होती थी| जहाँ जुताई होनी चाहिए वहाँ खेतों की मिट्टी सूखकर पत्थर हो जाती, फिर उसमें पपड़ी पड़ कर ज़मीन फटने लगती, लू ऐसी कि चलते-चलते आदमी आधे रास्ते में लू खा कर गिर पड़े| ढोर-ढंगर प्यास के मारे मरने लगते, लेकिन बारिश का कहीं नाम-निशान नहीं, ऐसे में पूजा-पाठ कथा-विधान सब करके लोग जब हार जाते तब अंतिम उपाय के रूप में निकलती यह इंदर सेना| वर्षा के बादलों के स्वामी हैं, इंद्र और इंद्र की सेना टोली बांध कर कीचड़ में लथपथ निकलती, पुकारते हुए मेघों को, पानी माँगते हुए प्यासे गलों और सूखे खेतों के लिए| पानी की आशा पर जैसे सारा जीवन आकर टिक गया हो| एक बात मेरे समझ में नहीं आती थी कि जब चारों और पानी की इतनी कमी है तो लोग घर में इतनी कठिनाई से इकट्ठा करके रखा हुआ पानी बाल्टी भर-भर कर इन पर क्यों फेंकते हैं| कैसी निर्मम बरबादी है पानी की|

(i)गाँव की हालत खराब क्यों होती थी**?**

(1) बाढ़ के कारण

(2) सूखे के कारण

(3) भूकंप के कारण

(4) महामारी के कारण

उत्तर-सूखे के कारण

(ii)गाँव के कैसे दृश्य का वर्णन है**?**

(1) जहाँ जुताई होनी चाहिए वहाँ खेतों की मिट्टी सूखकर पत्थर हो जाती

(2) भयंकर लू चलती

(3) ढोर-ढंगर प्यास के मारे मरने लगते

(4) सभी विकल्प ठीक हैं

उत्तर-सभी विकल्प ठीक हैं

(iii)गाँव के लोग बरसात के लिए क्या उपाय करते**?**

(1) पूजा-पाठ आदि अनुष्ठान करते

(2) सरकार से प्रार्थना करते

(3) गाँव छोड़कर चले जाते

(4) सभी विकल्प ठीक हैं

उत्तर-पूजा-पाठ आदि अनुष्ठान करते

(iv)इंदर-सेना किसे प्रसन्न करने का प्रयास करती थी**?**

(1) भगवान शिव को

(2) वर्षा के राजा इंद्र को

(3) लोगों को

(4) सभी विकल्प ठीक हैं

उत्तर-वर्षा के राजा इंद्र को

(v)लेखक को क्या बात समझ नहीं आती थी**?**

(1) लोग पूजा पाठ क्यों करते हैं

(2) इंदर सेना क्यों बनी है

(3) लोग इतनी कठिनाई से इकट्ठा किया पानी बरबाद क्यों कर रहे हैं

(4) सभी विकल्प ठीक है

उत्तर-लोग इतनी कठिनाई से इकट्ठा किया पानी बरबाद क्यों कर रहे हैं।

पाठ 14 पहलवान की ढोलक

विधा- कहानी **लेखक- फणीश्वर नाथ रेणु**

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरी

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए –

1.जाड़े का दिन। अमावस्या की रात-ठंडी और काली। मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव भयार्त शिशु की तरह थर-थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बॉस-फूस की झोपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य अँधेरा और निस्तब्धता !

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे। सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी । गाँव की झोपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज,**"** हरे राम**,** हे भगवान**"**,**'**की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी। बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से माँ -माँ पुकार कर रो पड़ते थे । पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी ।

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए -

क) प्रस्तुत गद्यांश में किस ऋतु की चर्चा हो रही है**?**

1)ग्रीष्म ऋतु **2)** वर्षा ऋतु

3) शरद ऋतु **4)** शीत ऋतु

ख) गाँव की दशा कैसी थी **?**

1) मलेरिया और हैजा की महामारी से पीड़ित

2) भय से कांपते हुए शिशु के समान

3) अंधकार और सन्नाटे से भरे घर

4) उपर्युक्त तीनों

ग)अंधेरी रात के द्वारा चुपचाप आँसू बहाने का क्या अर्थ है**?**

1) चारों ओर मौत का सन्नाटा छाया था

2) ओस की बूंदें आँसू बहाती-सी प्रतीत होती हैं

3) उपर्युक्त दोनों सही हैं

4) केवल दूसरा सही है ।

घ) रात की निस्तब्धता को —------------आवाज भंग करती थी**?**

1) सियारों के रोने की **2)** कुत्तों के मिलकर रोने

3) बच्चों के रोने की **4)** सियार और उल्लू की

ङ) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

1) पृथ्वी पर चारों ओर अंधेरा और सन्नाटा था।

2)प्रकृति भी गाँव वालों की पीड़ा देखकर दुखी थी।

3) भावुक तारा टूट कर धरती पर प्रकाश फैलाना चाहता था।

4) भावुक तारे की ज्योति और शक्ति अशेष थी।

उपरिलिखित लिखित कथनों में से कौन-सा /कौन - से कथन सही है/ हैं **?**

क) कथन **1** और **2** ख) कथन **3** और **4**

ग) कथन **1, 2** और **3** घ) कथन **1 ,3** और **4**

उत्तर-क) 4.**शीत ऋतु ख)** 4. **उपर्युक्त सभी**

ग)3 **उपर्युक्त दोनों सही है घ)** 4.**सियार और उल्लू की ङ) ग.कथन** 1, 2 **और** 3

2

पंजाबी पहलवानों की जमायत चाँद सिंह की आँखें पोंछ रहीं थीं। लुट्टन को राजा साहब ने पुरस्कृत ही नहीं किया**,** अपने दरबार में सदा के लिए रख लिया। तब से लुट्टन राज-पहलवान हो गया और राजा साहब उसे लुट्टन सिंह कहकर पुकारने लगे। राज-पंडित ने मुँह बिचकाया 'हुजूर जाति का 'सिंह'। मैनेजर साहब क्षत्रिय थे। क्लीन शेवड' चेहरे को संकुचित करते हुए**,** शक्ति लगाकर नाक के बाल उखाड़ रहे थे। चुटकी से अत्याचारी बाल को रगड़ते हुए बोले-"हाँ सरकार यह अन्याय है!" राजा साहब ने मुसकुराते हुए सिर्फ इतना ही कहा-उसने क्षत्रिय का काम किया है। उसी दिन से लुट्टन सिंह पहलवान की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। पौष्टिक भोजन और व्यायाम तथा राजा साहब की स्नेह-दृष्टि ने उसकी प्रसिद्ध में चार चाँद लगा दिए। कुछ वर्षों में ही उसने एक-एक कर सभी नामी पहलवानों को मिट्टी सुंघाकर आसमान दिखा दिया।

प्रश्न

(क) किसकी आंखों से आंसू बह रहे थे**?**

1) लुट्टन सिंह

2) चाँद सिंह

3) बादल सिंह

4) राजा साहब।

(ख) लुट्टन सिंह का विरोध किसने किया **?**

1) राज पंडित और मैनेजर ने

2) राजा ने

3) जनता ने

4) ढोल वादकों ने।

(ग) लुट्टन के विरोध से तत्कालीन समाज की किस बुराई का पता चलता हैं **?**

1) धार्मिक उन्माद

2) चाटुकारिता

3) क्षेत्रवाद और जातिवाद

4) गरीबों का शोषण।

(घ) लुट्टन की कीर्ति दूर दूर तक कैसे फैल गई**?**

1) शेर के बच्चे को हरा दिया

2) इलाके के सभी नामी पहलवानों को हरा दिया

3) राज पहलवान बन गया

4) उपर्युक्त सभी।

ड.) गद्यांश मे प्रयुक्त मुहावरो का चयन कीजिए-

(1) चार चाँद लगाना

(2)आसमान दिखाना

(3) पहला और दूसरा दोनों सही है

(4) केवल पहला सही है

उत्तर -

क)2) **चाँद सिंह**

ख)1) **राज पंडित और मैनेजर ने**

ग) 3) **क्षेत्रवाद और जातिवाद**

घ)4) **उपर्युक्त सभी।**

ड)(3) **पहला और दूसरा दोनों सही है।**

—----------

4

किंतु उसकी शिक्षा-दीक्षा, सब किए-किराए पर एक दिन पानी फिर गया। वृद्ध राजा स्वर्ग सिधार गए। नए राजकुमार ने विलायत से आते ही राज्य को अपने हाथ में ले लिया। राजा साहब के समय शिथिलता आ गई थी, राजकुमार के आते ही दूर हो गई। बहुत से परिवर्तन हुए। उन्हीं परिवर्तनों की चपेटाघात में पड़ा पहलवान भी। दंगल का स्थान घोड़े की रेस ने लिया। पहलवान तथा दोनों भावी पहलवानों का दैनिक भोजन व्यय सुनते ही राजकुमार ने कहा 'टैरिबुल!" नए मैनेजर साहब ने कहा "होरिबुल"। पहलवान को साफ जवाब मिल गया, राज दरबार में उसकी आवश्यकता नहीं। उसको गिड़गिड़ाने का भी मौका नहीं दिया गया।

प्रश्न

(क) पहलवान किसे शिक्षा- दीक्षा दे रहा था**?**

1)श्याम नगर के युवाओं को

2) अपने दोनों पहलवान पुत्रों को

3) राजा के पुत्र को

4) इनमें से कोई नहीं

(ख) सत्ता परिवर्तन के क्या परिणाम हुए**?**

1) नए राजकुमार ने अपने पिता की परिपाटी जारी रखी।

2) दंगल से जुड़े नए -नए परिवर्तन किए गए।

3) पहलवानी की जगह घोड़े की रेस ने ले लिया।

4) लुट्टन का सम्मान और भी बढ़ गया।

(ग) पहलवान को राज्याश्रय क्यों नहीं मिला**?**

1) पहलवान और भावी पहलवानों का दैनिक भोजन व्यय बहुत अधिक था।

2) नए राजा को दंगल में कोई रुचि नहीं थी।

3) उपर्युक्त दोनों कथन सही हैं।

4) उपर्युक्त दोनों कथन गलत है।

(घ) नए राजा के प्रशासनिक परिवर्तनों के —---------- में लुट्टन पहलवान भी आ गया।

1) आघात

2) चपेट

3) चपेटाघात

4) चंगुल

ड. निम्नलिखित कथन कारण को ध्यान पूर्वक बड़ी और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए -

कथन (अ) मैनेजर जातिगत कारणों से लुट्टन सिंह से पहले से ही द्वेषभाव रखतेथे।

कारण (ब) उन्होंने पहलवान को बोलने का मौका भी नहीं दिया और उसे और उसके बेटे को राज दरबार से निकाल दिया।

क) कथन (अ) तथा कारण (ब) दोनों सही हैं ।

ख) कथन (अ) सही है किंतु कारण (ब) गलत है।

ग) कथन (अ) गलत है किंतु कारण (ब) सही है ।

घ) कथन (अ) और कारण (ब) दोनों गलत है।

उत्तर -

क) अपने दोनों पहलवान पुत्रों को

ख)पहलवानी की जगह घोड़े की रेस ने ले लिया।

ग) उपर्युक्त दोनों कथन सही हैं ।

घ) चपेटाघात

ड)क) कथन (अ) तथा कारण (ब) दोनों सही हैं।

प्रश्न **5 .**

उस दिन पहलवान ने राजा श्यामानंद की दी हुई रेशमी जाँघिया पहन ली। सारे शरीर में मिट्टी मलकर थोड़ी कसरत की, फिर दोनों पुत्रों को कंधों पर लादकर नदी में बहा आया। लोगों ने सुना तो दंग रह गए। कितनों की हिम्मत टूट गई। किंतु, रात में फिर पहलवान की ढोलक की आवाज प्रतिदिन की भाँति सुनाई पड़ी। लोगों की हिम्मत दुगुनी बढ़ गई। संतप्त पिता-माताओं ने कहा-'दोनों पहलवान बेटे मर गए, पर पहलवान की हिम्मत तो देखो, डेढ़ हाथ का कलेजा है!" चार-पाँच दिनों के बाद एक रात को ढोलक की आवाज नहीं सुनाई पड़ी। ढोलक नहीं बोली। पहलवान के कुछ दिलेर, किंतु रुग्ण शिष्यों ने प्रात: काल जाकर देखा-पहलवान की लाश 'चित' पड़ी है। आँसू पोंछते हुए एक ने कहा-गुरु जी कहा करते थे कि जब मैं मर जाऊँ तो चिता पर मुझे चित नहीं, पेट के बल सुलाना। मैं जिंदगी में कभी चित्त नहीं हुआ। और चिता सुलगाने के समय ढोलक बजा देना।' वह आगे बोल नहीं सका।

(क) पहलवान ने अपने बच्चों का अतिम संस्कार कैसे किया?

1) पहलवान ने राजा श्यामानंद की दी हुई रेशमी जाँघिया पहनी

2) उसने शरीर पर मिट्टी लगा लिया

3) दोनों पुत्रों को कंधों पर लादकर नदी में बहा आया

4) उपर्युक्त सभी।

(ख) लोग पहलवान की किस बात पर हैरान थे?

(1) पहलवान जवान पुत्रों की मृत्यु से भी नहीं हारा ।

(2) उसने रात भर ढोलक बजाई

(3) पहला कथन सही है

(4) पहला और दूसरा दोनों कथन सही है।

(ग) यहाँ किस मुहावरे का प्रयोग किया गया है?

1) हिम्मत टूट जाना

2) दंग रह जाना

3)चित्त लेटना

4) डेढ़ हाथ का कलेजा होना।

घ) पहलवान की ढोलक बजनी बंद क्यों हो गई?

1) पहलवान थक गया था

(2) पहलवान की मृत्यु हो गई थी

(3) पहलवान अपने बच्चों की मौत से दुखी था

(4) पहलवान की आत्मशक्ति खत्म हो गई थी।

ड.) पहलवान की अंतिम इच्छा क्या थी?

1) चिता पर पेट के बल लिटाया जाना

(2)चिता सुलगाने के समय ढोलक बजाना

(3)केवल पहला सही है।

(4) पहला और दूसरा दोनों कथन सही है।

उत्तर -

क) 4) **उपर्युक्त सभी।**

ख)(4) **पहला और दूसरा दोनों कथन सही है।**

ग)) 4) **डेढ़ हाथ का कलेजा होना।**

घ)(2) **पहलवान की मृत्यु हो गई थी**

ड)(4) **पहला और दूसरा दोनों कथन सही है।**

पाठ 17 -**शिरीष के फूल**

विधा - ललित निबंध **लेखक- हजारी प्रसाद द्विवेदी**

पठित गद्यांश

1.ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले। फूल है शिरीष। वसंत के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक जो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है। यद्यपि कवियों की भाँति हर फूल-पत्ते को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है, पर नितांत ठूंठ भी नहीं हूँ। शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोड़ा हिल्लोल जरूर पैदा करते हैं।

1.कौन जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है?

(1) अवधूत

(2) आषाढ़

(3) वसंत

(4) शिरीष

2.कौन नितांत ठूँठ नहीं है?

(1) लेखक

(2) शिरीष

(3) अवधूत

(4) विधाता

3.शिरीष के पुष्प लेखक के मन में क्या पैदा करता है?

(1) हंसी

(2) आनंद

(3) हिल्लोल

(4) मंत्र

4.लेखक की विधाता से क्या शिकायत है**?**

(1) अवधूत जैसा शरीर नहीं दिया है

(2) कठोर हृदय नहीं दिया है

(3) मुग्ध होने लायक हृदय नहीं दिया

(4) नितांत ठूँठ बना दिया है

5.इस गद्यांश के लेखक कौन है**?**

(1) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(2) विष्णु खरे

(3) फणीश्वर नाथ रेणु

(4) महादेवी वर्मा

सही उत्तर 1.**शिरीष**,2.**लेखक**,3.**हिल्लोल**,4.**मुग्ध होने लायक हृदय नहीं दिया**,5. **हजारी प्रसाद द्विवेदी**

2.मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार- लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती**?** ज़रा और मृत्यु**,**ये दोनों ही जगत के अतिपरिचित और अतिप्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफ़सोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी-'धरा को प्रमाण यही तुलसी जो फरा दो झरा**,** जो बरा सो बुताना!' मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूं कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है। सुनता कौन है**?**महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं**,** जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं**,** जिनमें प्राण -कण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है**,** वे टिक जाते हैं। दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं**,** वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा जाएँगे।

1.जगत के अतिपरिचित और अतिप्रामाणिक सत्य क्या हैं**?**

(1) अधिकार लिप्सा

(2) ज़रा

(3) मृत्यु

(4) ज़रा और मृत्यु

2.'महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं **?'** से क्या तात्पर्य है**?**

(1) देवता लोग कोड़े चला रहे हैं

(2) यमराज निरंतर मौत के कोड़े बरसा रहे हैं

(3) जीर्ण शीर्ण को जला रहे हैं

(4) कालाग्नि को जला रहे हैं

3.किस सच्चाई को उजागर करने के लिए तुलसी को उद्धृत किया है**?**

(1) शिरीष के फूल की सच्चाई को

(2) मृत्यु अटल है**,**इस सच्चाई को

(3) जीवन की सच्चाई को

(4) मूर्ख की समझ की सच्चाई को

4.मूर्ख अपना स्थान क्यों नहीं छोड़ते हैं**?**

(1) नासमझी के कारण

(2) दुरंत प्राणधारा के कारण

(3) महाकाल के कारण

(4) ऊर्ध्वमुखी होने के कारण

5.शिरीष की किस विशेषता के कारण लेखक को यह सब कहना पड़ा**?**

(1) कोमलता की वजह से

(2) जिद्दीपन की वजह से

(3) सर्वव्यापकता के कारण

(4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

सही उत्तर-**1.** ज़रा और मृत्यु,**2.** यमराज निरंतर मौत के कोड़े बरसा रहे हैं,**3.**मृत्यु अटल है,इस सच्चाई को,**4.** नासमझी के कारण,**5.**जिद्दीपन की वजह से

3.शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना इतना सरस वह कैसे बना रहता है **?** क्या ये बाह्य परिवर्तन-धूप, वर्षा, आँधी, लू-अपने आप में सत्य नहीं हैं **?** हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है **?** शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता कि ऐसा क्यों संभव हुआ **?** क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गाँधी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब तब हूक उठती है- - हाय, वह अवधूत आज कहाँ है !

1.शिरीष की तुलना अवधूत से क्यों की गई है**?**

(1) कोमल होने पर

(2) परिस्थितियों में न ढलने के कारण

(3) कठिन से कठिन परिस्थितियों में सरस रहने के कारण

(4) वह अवधूत की भाँति दिखता है

2.'हाय,वह अवधूत आज कहाँ है!' यह वाक्य किसके लिए प्रयुक्त हुआ है**?**

(1) शिरीष के फूल के लिए

(2) वायुमंडल के लिए

(3) महात्मा गांधी के लिए

(4) बवंडर के लिए

3.अवधूत किसे कहते हैं**?**

(1) सन्न्यासी को

(2) साधु को

(3) फक्कड़ मस्त संत को

(4) शिरीष को

4.गाँधी जी के लिए कौन-से विशेषण प्रयुक्त हुए हैं**?**

(1) कोमल

(2) कठोर

(3) उपर्युक्त दोनों

(4) इनमें से कोई नहीं

5.शिरीष को जब-तब देखकर लेखक के मन में हूक क्यों उठती है**?**

(1) शिरीष इतना कोमल क्यों है**?**

(2) यह वायुमंडल से रस क्यों खींचता है**?**

(3) गाँधी जैसे लोग अब भारत में क्यों नहीं है**?**

(4) अवधूत आज कहाँ चले गए हैं**?**

सही उत्तर 1.**कठिन से कठिन परिस्थितियों में सरस रहने के कारण**,2. **महात्मा गांधी के लिए**,3.**फक्कड़ मस्त संत को**,4.**उपर्युक्त दोनों**,4.**गाँधी जैसे लोग अब भारत में क्यों नहीं है**?

4.कालिदास वज़न ठीक रख सकते थे**,** क्योंकि वे अनासक्त योगी की स्थिर - प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय पा चुके थे। कवि होने से क्या होता है **?** मैं भी छंद बना लेता हूँ**,** तुक जोड़ लेता हूँ और कालिदास भी छंद बना लेते थे-तुक भी जोड़ ही सकते होंगे इसलिए हम दोनों एक श्रेणी के नहीं हो जाते। पुराने सहृदय ने किसी ऐसे ही दावेदार को फटकारते हुए कहा था—'वयमपि कवयः कवयः कवयस्ते कालिदासाद्या !' मैं तो मुग्ध और विस्मय-विमूढ़ होकर कालिदास के एक-एक श्लोक को देखकर हैरान हो जाता हूँ। अब इस शिरीष के फूल का ही एक उदाहरण लीजिए। शकुंतला बहुत सुंदर थी। सुंदर क्या होने से कोई हो जाता है **?** देखना चाहिए कि कितने सुंदर हृदय से वह सौंदर्य डुबकी लगाकर निकला है। शकुंतला कालिदास के हृदय से निकली थी। विधाता की ओर से कोई कार्पण्य नहीं था**,** कवि की ओर से भी नहीं । राजा दुष्यंत भी अच्छे-भले प्रेमी थे। उन्होंने शकुंतला का एक चित्र बनाया था**;** लेकिन रह-रहकर उनका मन खीझ उठता था। उहूँ**,** कहीं-न-कहीं कुछ छूट गया है। बड़ी देर के बाद उन्हें समझ में आया कि शकुंतला के कानों में वे उस शिरीष पुष्प को देना भूल गए हैं**,** जिसके केसर गंडस्थल तक लटके हुए थे**,** और रह गया है शरच्चंद्र की किरणों के समान कोमल और शुभ्र मृणाल का हार।

1.लेखक कालिदास के सफल कवि होने में कौन से गुण देखता है**?**

(1) स्थिर-प्रज्ञता

(2) अनासक्ति

(3) विदग्ध प्रेमी

(4) उपर्युक्त सभी

2.सामान्य कवि और कालिदास में क्या अंतर है**?**

(1) लय**,** तुक**,** छंद आदि का

(2) विषय के मर्म तक पहुंचने का

(3) दोनों एक ही श्रेणी के हैं

(4) भाषा का अंतर

3.दुष्यंत को शकुंतला के चित्र में कमी क्यों प्रतीत हो रही थी**?**

(1) सुंदर रंग की

(2) शिरीष पुष्प की

(3) शुभ्र मृणाल का हार

(4) क व ख दोनों

4.'शकुंतला कालिदास के हृदय से निकली थी' -आशय स्पष्ट कीजिए।

(1) शकुंतला कालिदास की प्रेमिका थी

(2) कालिदास का हृदय बड़ा था

(3) कालिदास शकुंतला के प्रेम में डूबे हुए थे

(4) कालिदास ने शुकंतला के सौंदर्य में डूबकर वर्णन किया है

5.अनासक्ति का अर्थ है -

(1) किसी के प्रति लगाव

(2) रुचि -अरुचि से परे

(3) घृणा

(4) प्रेम

सही उत्तर-1.**उपर्युक्त सभी**,2. **विषय के मर्म तक पहुंचने का**,3.**क व ख दोनों**,4.**कालिदास ने शुकंतला के सौंदर्य में डूबकर वर्णन किया है**,5. **रुचि -अरुचि से परे**

5.कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे**,** दुख हो कि अपना सुख**,**भाव-रस उस अनासक्त कृपीवल की भाँति खींच लेते थे जो निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकाल लेता है। कालिदास महान थे**,** क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे। कुछ इसी श्रेणी की अनासक्ति आधुनिक हिंदी कवि सुमित्रानंदन पंत में है। कविवर रवींद्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा- 'राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो**,** उसकी शिल्पकला कितनी ही सुंदर क्यों न हो**,** वह यह नहीं कहता कि हममें आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया। असल गंतव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है**,** यही बताना उसका कर्तव्य है।' फूल हो या पेड़**,** वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है वह इशारा है।

1.कालिदास की सौंदर्य-दृष्टि की क्या विशेषता थी**?**

(1) बाह्य रूप रंग को देखने वाली

(2) सूक्ष्म**,**अंतर्भेदिनी**,**संपूर्ण

(3) अनोखी

(4) स्थूल

2.'अनासक्ति' का क्या आशय है**?**

(1) किसी के प्रति लगाव

(2) रुचि -अरुचि से परे

(3) घृणा

(4) प्रेम

3.कालिदास, रवींद्रनाथ, और पंत जी में कौनसा गुण समान था?

(1) आधुनिकता

(2) महानता

(3) अनासक्ति

(4) सुंदरता

4.रवींद्रनाथ 'राजोद्यान' के बारे में क्या संदेश देते हैं?

(1) अभ्रभेदी होने का

(2) अंतिम होने का

(3) गहरे तथा ऊँचे सौंदर्य की ओर इशारा करने का

(4) ठाठ-बाट का

5.सिंहद्वार का अर्थ होता है -

(1) शेर के लिए दरवाजा

(2) राजा के लिए दरवाजा

(3) बड़ा दरवाजा

(4) सूक्ष्म दरवाजा

सही उत्तर1. **सूक्ष्म**,**अंतर्भेदिनी**, **संपूर्ण**,2. **रुचि -अरुचि से परे**,3.**अनासक्ति**,4. **गहरे तथा ऊँचे सौंदर्य की ओर इशारा करने का**,5. **बड़ा दरवाजा**

—----------

पाठ-18 **श्रम-विभाजन और जाति प्रथा**

- बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोंत्तरी

1.यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है, कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति प्रथा भी श्रम- विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है, कि जाति प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम- विभाजन, निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है, परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम- विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा की एक और विशेषता यह है कि यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

1.पाठ के लेखक का नाम है -

(1) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(2) बाबा साहेब आंबेडकर

(3) जैनेंद्र

(4) महादेवी वर्मा

2.किस बात को विडंबना कहा गया है**?**

(1) जातिवाद के समर्थकों को

(2) कार्यकुशलता को

(3) जातिवाद के विरोधियों को

(4) श्रम-विभाजन को

3.श्रम-विभाजन का अर्थ है -

(1) श्रमिकों का अस्वाभाविक वर्गीकरण

(2) मानवोपयोगी कार्यों का वर्गीकरण

(3) एक कार्य को विभाजित करना

(4) अस्वाभाविक वर्गीकरण

4.जाति प्रथा बुरी क्यों है -

(1) विभिन्न वर्गों में ऊँच -नीच पैदा करती है

(2) श्रमिकों का अस्वाभाविक वर्गीकरण

(3) काम को जन्म के आधार पर बांट देना

(4) उपर्युक्त सभी

5.कार्यकुशलता के लिए जरूरी है -

(1) श्रमिकों का विभाजन

(2) श्रम-विभाजन

(3) जातिवाद

(4) क व ख दोनों

सही उत्तर-1.**बाबा साहेब आंबेडकर**, 2.**जातिवाद के समर्थकों को**, 3.**मानवोपयोगी कार्यों का वर्गीकरण**, 4.**उपर्युक्त सभी**, 5.**क व ख दोनों**

2.मेरा आदर्श-समाज स्वतंत्रता**,** समता**,** भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है**,** भ्रातृता अर्थात भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है**?** किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह कि दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है**,** और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है**,** लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इनमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो

1.आंबेडकर किस समाज को आदर्श मानते हैं**?**

(1) स्वतंत्रता**,** समता व भ्रातृता पर आधारित

(2) स्वतन्त्रता पर आधारित

(3) समता पर आधारित

(4) मिश्रित समाज

2.लोकतंत्र की क्या परिभाषा बताई गई है**?**

(1) लोकतंत्र शासन की एक पद्धति है

(2) लोकतंत्र जीवन जीने की कला है

(3) लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति है

(4) इनमें से कोई नहीं है

3.लोकतंत्र में सभी मनुष्यों के प्रति कैसा भाव होना चाहिए**?**

(1) तानाशाही का

(2) मिश्रित

(3) परिवर्तनशील

(4) श्रद्धा व सम्मान का

4.आंबेडकर समाज में गतिशीलता किसे मानते हैं

(1) अबाध संपर्क

(2) समान सहभागिता

(3) सबकी रक्षा के प्रति सचेतता

(4) उपर्युक्त सभी

5.समाज नहीं होना चाहिए -

(1) गतिशील

(2) परिवर्तनशील

(3) बहुविधि हितों वाला

(4) स्वार्थी

सही उत्तर-1.**स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित**,2. **लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति है**,3.**श्रद्धा व सम्मान का**,4.**उपर्युक्त सभी**,5.**स्वार्थी**

—----------

पाठ -1 सिल्वर वैडिंग

(लेखक- मनोहर श्याम जोशी)

प्रश्न बैंक - सिल्वर वैडिंग

प्रश्न 1. सिल्वर वैडिंग - कहानी का मुख्य पात्र आप किसे मानते हैं **?**

i. किशनदा को

ii. भूषण को

iii. चड्ढ़ा को

iv. यशोधर पंत को

प्रश्न 2. यशोधर बाबू ने मैट्रिक की परीक्षा कहाँ से उत्तीर्ण की थी **?**

i. डी.ए.वी.स्कूल **,**दिल्ली

ii. रेम्जे स्कूल , अल्मोड़ा

iii.डी.पी.एस.देहरादून

iv. शिखा दीप विद्यालय, दिल्ली

प्रश्न 3. किशनदा ने यशोधर बाबू को कौन -सा काम दिया था ?

i.चौकीदारी का

ii.सर्विस बॉय का

iii.मेस के रसोइए का

iv.क्लीनर का

प्रश्न 4. यशोधर बाबू का पालन - पोषण किसने किया था ?

i. माता ने

ii. पिता

iii. दादी

iv. विधवा बुआ ने

प्रश्न 5. ऑफिस में यशोधर बाबू की शादी की बात कैसे हुई ?

i. ऑफिस से जल्दी जाने पर

ii.ऑफिस से देर से जाने पर

iii.घड़ी के बारे में चर्चा करने पर

iv.समय पर काम ख़त्म करने पर

प्रश्न 6. यशोधर बाबू क्या काम करते थे ?

i. गोल मार्केट में दुकान चलाते थे |

ii. पहाड़ पर काम करते थे|

iii. होम मिनिस्ट्री में सेक्सन ऑफ़िसर थे |

iv. मल्टीनेशनल कम्पनी में नौकरी करते थे |

प्रश्न 7. यशोधर बाबू अपने जीवन में किससे प्रभावित थे ?

i. कृष्णानंद पांडे

ii. कृष्णानंद वर्मा

iii. कृष्णानंद गुप्ता

iv. कृष्णानंद शर्मा

प्रश्न 8. किशनदा के रिटायर होने पर यशोधर बाबू उनकी सहायता नहीं कर पाए क्योंकि —

i. यशोधर बाबू की पत्नी किशनदा से नाराज़ थीं |

ii. यशोधर बाबू के घर में किशनदा के लिए स्थान का अभाव था |

iii. यशोधर बाबू का अपना परिवार था, जिसे वे नाराज़ नहीं करना चाहते थे |

iv. किशनदा को यशोधर बाबू ने अपने घर में स्थान देना चाहा ,जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया |

प्रश्न 9. सिल्वर वैडिंग - कहानी में किशनदा की मृत्यु के संदर्भ में "जो हुआ होगा " का क्या तात्पर्य है ?

i. लेखक मृत्यु से बहुत दुखी है |

ii. लेखक को मृत्यु का कारण पता है |

iii. लेखक मृत्यु के कारण से अपरिचित है |

iv. लेखक को मृत्यु से कोई फ़र्क नहीं पड़ता है |

प्रश्न 10. सन 1984 में भारतीय दूरदर्शन के प्रथम धारावाहिक ' हम लोग ' का लेखन किसने किया है **?**

i. मनोहर श्याम जोशी

ii. ओम थानवी

iii. यशोधर पंत

iv. किशनदा

प्रश्न 11. सिल्वर वैडिंग किस प्रकार की कहानी है **?**

i. बदलते जीवन मूल्यों पर आधारित

ii. सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित

iii. राजनीतिक मूल्यों पर आधारित

iv. सामाजिक मूल्यों पर आधारित

प्रश्न 12. सिल्वर वैडिंग - कहानी के अनुसार ' यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन वे असफल रहते हैं |' यशोधर बाबू की असफलता का क्या कारण था **?**

i. किशनदा उन्हें भड़काते थे |

ii. पत्नी बच्चों से अधिक प्रेम करती थी |

iii. आर्थिक अभाव के कारण

iv. वे परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे |

प्रश्न 13. यशोधर बाबू किस प्रकाशन की पुस्तकें पढ़ते थे **?**

i . सीता प्रेस गोरखपुर

ii. गीता प्रेस गोरखपुर

iii. गीता प्रेस हरिद्वार

iv. गीता प्रेस मथुरा

प्रश्न 14. यशोधर बाबू किसका प्रतिनिधित्व करते हैं **?**

i. पुरानी पीढ़ी का

ii. नई पीढ़ी का

iii. नई विचारधारा का

iv. नवयुवकों का

प्रश्न 15. यशोधर पंत को अपने बड़े बेटे की प्रतिभा किस स्तर की लगती थी **?**

i. निम्न स्तर की

ii. साधारण स्तर की

iii. उच्च स्तर की

iv. मध्यम स्तर की

प्रश्न 16. अपने बच्चों की तरक्की से खुश होने पर भी यशोधर बाबू को कौन - सी बात खटकती है **?**

i. अच्छा खाना खाना

ii. पैदल दफ्तर जाना

iii. गरीब रिश्तेदारों की उपेक्षा

iv. बिड़ला मंदिर जाना

प्रश्न 17. सिल्वर वैडिंग की दावत के समय यशोधर बाबू संध्या - पूजन क्यों करने लगे **?**

i. आशीर्वाद लेने के लिए

ii. भजन सुनने के लिए

iii. धन्यवाद व्यक्त करने के लिए

iv. पार्टी से बचने के लिए

प्रश्न 18 . यशोधर बाबू गोल मार्केट में ही क्यों रहना चाहते थे **?** क्योंकि -

i . वहां से उनकी यादें जुड़ी थीं

ii . वे बच्चों को सामाजिक बनाना चाहते थे

iii . उन्हें पैसा बचाना था

iv . उनका घर सुन्दर था

प्रश्न 19. यशोधर पंत द्वारा 'नकली हँसी' हँसने का क्या अर्थ है **?**

i. झूठ - मूठ हँसना

ii. स्वयं की गलती पहचानना

iii. खुश होना

iv. अपनी बात कहना

प्रश्न 20. "समहाउ इम्प्रॉपर" वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं | इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या सम्बन्ध है **?**

i. यशोधर बाबू सिद्धांतवादी व्यक्ति हैं |

ii. यशोधर बाबू सिद्धांतवादी व्यक्ति नहीं हैं |

iii. वे भारतीय मूल्यों और मान्यताओं के विश्वासी नहीं हैं |

iv. उनका व्यक्तित्व अनुकरणीय नहीं है |

प्रश्न 21. 'जो हुआ होगा' किस भावना का प्रतीक है **?**

i. परायेपन **,** असम्बद्धता **,** अलगाव और फालतूपन का

ii. अपनापन का

iii. समाज में बदलते हुए परिवेश का

iv. विलायती परम्परा को अपनाने का

प्रश्न 22. सिल्वर वैडिंग के आधार पर यशोधर बाबू के स्वभाव की विशेषताएं बताइए |

i. वे परम्परावादी हैं |

ii. मानवीय रिश्तों और समाज -संस्कृति से जोड़ने का भरसक प्रयास करते हैं |

iii. यशोधर बाबू सिद्धांतवादी व्यक्ति हैं |

iv. उपरोक्त सभी |

प्रश्न 23. कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है**?**

i. किशनदा की

ii. यशोधर बाबू की पत्नी की

iii. उनके भाइयों की

iv. उनके सगे-सम्बन्धियों की

प्रश्न 24. यशोधर बाबू के बच्चों की कौन -सी बात प्रशंसनीय है **?**

i. वे सब के सब अपनी प्रतिभा के बल पर ऊपर उठे हैं |

ii. वे सब के सब आलसी हैं |

iii. वे सब के सब प्रतिभाहीन हैं |

iv. वे सब के सब अस्वस्थ रहते हैं |

प्रश्न 25. सिल्वर वैडिंग कहानी के अनुसार यशोधर बाबू अपनी शादी की सालगिरह मनाने के पक्ष में क्यों नहीं थे **?** क्योंकि -

i. यह भारतीय परंपरा नहीं है |

ii. वे इसे पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण मानते हैं |

iii. पैसे अधिक खर्च होंगे |

iv. वे कहीं और घूमना चाहते थे |

प्रश्न 26. यशोधर बाबू की पत्नी की सोच उनसे विपरीत थी **?** क्योंकि -

i. महिलाओं के विषय में अच्छी सोच रखने के कारण

ii. नौकरी करने के कारण

iii. आधुनिक मूल्यों को अपनाने से

iv. उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 27. यशोधर बाबू का बेटा भूषण किस एजेंसी में काम करता था **?**

i. सर्विस प्रोवाइडर एजेंसी

ii. विज्ञापन एजेंसी

iii. प्रिंटिंग प्रेस

iv. एक अख़बार एजेंसी

प्रश्न 28. 'समहाउ इम्प्रॉपर' का क्या अर्थ है **?**

i. कुछ न कुछ गलत होना

ii. सब कुछ सही होना

iii. मेहनत करना

iv. आलस करना

प्रश्न 29. बुज़ुर्गों के प्रति कम होती सम्मान की भावना क्या व्यक्त करती है **?** सिल्वर वैडिंग कहानी के आधार पर बताइए |

i. समाज के नवीनतम पक्ष को

ii. बुज़ुर्गों के प्रति उनके दायित्व को

ii. नई पीढ़ी की सोच को

iv. हाशिए पर जाते मानवीय मूल्यों को

प्रश्न 30. यशोधर बाबू के बच्चों को उनके पिता की कौन-सी बात अच्छी नहीं लगती थी **?**

i. बस से आना -जाना

ii. कार से आना -जाना

iii. साइकिल से आना -जाना

iv. मोटर साइकिल से आना -जाना

प्रश्न 31. यशोधर बाबू अपनी पत्नी की बगावत का मज़ाक क्या कहकर उड़ाते थे **?**

i. बूढी मुँह मुहांसे, लोग करे तमाशे

ii . चटाई का लहंगा

iii. शानयल बुढ़िया

iv. उपर्युक्त सभी

प्रश्न 32. यशोधर बाबू अपने बच्चों तथा पत्नी से क्या चाहते थे**?**

i. पैसा

ii. सम्मान

iii. परंपराओं का पालन

iv. मुक्ति

प्रश्न 33. **'**सिल्वर वैडिंग**'** में गाउन पहनते समय यशोधर बाबू को कौन-सी बात चुभी**?**

i. पत्नी द्वारा उपेक्षा

ii. भूषण के व्यंग्य वचन

iii. केक काटना

iv. दूध लाने की बात

प्रश्न 34. किशनदा की किस परंपरा को यशोधर ने जीवंत रखा **?**

i. घर में होली गवाना

ii. जन्मदिन मनाना

iii. शादी की वर्षगांठ मनाना

iv. भोज का

प्रश्न 35 . **'**सिल्वर वैडिंग**'** कहानी की मूल संवेदना किसे कहेंगे **?**

i. हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य

ii. पीढ़ी का अंतराल

iii. पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

iv. उपर्युक्त सभी

उत्तर संकेत

1. iv. **यशोधर पंत को**

2. ii. **रेम्जे स्कूल , अल्मोड़ा**

3. iii.**मेस के रसोइए का**

4. iv. **विधवा बुआ ने**

5. iii.**घड़ी के बारे में चर्चा करने पर**

6. iii. **होम मिनिस्ट्री में सेक्सन ऑफ़िसर थे** |

7. i. **कृष्णानंद पांडे**

8. iii. **यशोधर बाबू का अपना परिवार था, जिसे वे नाराज़ नहीं करना चाहते थे** |

9. iii. **लेखक मृत्यु के कारण से अपरिचित है** |

10. i. **मनोहर श्याम जोशी**

11. i. **बदलते जीवन मूल्यों पर आधारित**

12. i . **वे परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे** |

13. ii. **गीता प्रेस ,गोरखपुर**

14. i. **पुरानी पीढ़ी का**

15. ii. **साधारण स्तर की**

16. iii. **गरीब रिश्तेदारों की उपेक्षा**

17. iv. **पार्टी से बचने के लिए**

18 . i. **वहां से उनकी यादें जुड़ी थीं** |

19. ii. **स्वयं की गलती पहचानना**

20. i. **यशोधर बाबू सिद्धांतवादी व्यक्ति हैं** |

21. i. **पराएपन , असम्बद्धता , अलगाव और फालतूपन का**

22. iv. **उपरोक्त सभी**

23. i. **किशनदा की**

24. i. **वे सब-के-सब अपनी प्रतिभा के बल पर ऊपर उठे हैं** |

25. i. **यह भारतीय परंपरा नहीं है** |

26. iii. **आधुनिक मूल्यों को अपनाने से**

27. ii. **विज्ञापन एजेंसी**

28. i. **कुछ न कुछ गलत होना**

29. iv. **हाशिए पर जाते मानवीय मूल्यों को**

30. iii. **साइकिल से आना -जाना**

31. iv. **उपर्युक्त सभी**

32. iii. **परंपराओं का पालन**

33. iv. **दूध लाने की बात**

34. i. **घर में होली गवाना**

35 . iv. **उपर्युक्त सभी**

पाठ -2 जूझ
(लेखक- डॉ आनंद यादव)

प्रश्न बैंक: 'जूझ'

प्रश्न 1 'जूझ' कहानी के माध्यम से किसके संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है?

(i) खेतीहर मजदूर के संघर्ष

(ii) गरीब माँ के संघर्ष

(iii) आनंदा के जीवन के संघर्ष

(iv) अय्याश पिता के संघर्ष

प्रश्न 2 जूझ' कहानी में आनंदा ने किस विषय पर कविता लिखना आरंभ किया?

(i)अपनी माँ और परिवार के विषय में

(ii) गाँव, खेती और आस-पास के दृश्य पर

(iii) अपने अध्यापक सौंदलगेकर के व्यक्तित्व पर

(iv) भैंस, गाय और उनके जीवन के संबंध में

प्रश्न 3 'जूझ' कहानी में आनंदा के उच्च स्तर का कवि तक का सफर किस बात का प्रमाण हैं?

(i) उसके परिश्रम व लगनशीलता की प्रवृत्ति का

(ii) उसके झूठ बोलकर पढ़ाई करने का

(iii) पिता की बात को महत्त्व न देने का

(iv) केवल अपने मन की करने का

प्रश्न 4 लेखक ने कहानी का शीर्षक 'जूझ' किस कारण रखा है?

(i) नायक की समस्याओं से उत्पन्न खीझ के कारण

(ii) नायक की समस्याओं से जूझने की प्रवृत्ति के कारण

(iii) नायक की माँ के संघर्षों से जूझने के कारण

(iv) नायक और उसके पिता की जुझारू प्रवृत्ति के कारण

प्रश्न 5 "आने दे अब उसे, मैं उसे सुनाता हूँ कि नहीं अच्छी तरह देख।" यह कथन किसने व किससे कहा, 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।

(i) दत्ता राव ने लेखक के पिता से

(ii) दत्ता राव ने लेखक की माता से कहा

(iii) लेखक के पिता ने उसकी माता से

(iv) लेखक के पिता ने लेखक से

प्रश्न 6 जूझ' कहानी के अनुसार आनंदा विद्यालय क्यों नहीं जाता था?

(i) उसकी पढ़ने की इच्छा नहीं थी

(ii) उसके पिता को उसका पढ़ना अच्छा नहीं लगता था

(iii) घर के कार्यों में अत्यधिक व्यस्तता के कारण

(iv) (ii) और **(iii)** दोनों

प्रश्न 7 आनंदा अपने पढ़ने की बात अपने दादा से नहीं कर पाता है, क्यों? 'जूझ' कहानी के आधार पर सटीक विकल्प चुनिए।

(i)क्योंकि उसके पिता उससे बात नहीं करते थे

(ii) क्योंकि उसके पिता परदेश गए हुए थे

(iii) क्योंकि उसके पिता अच्छे आचरण वाले व्यक्ति थे

(iv) क्योंकि उसके पिता अत्यधिक गुस्से वाले व्यक्ति थे

प्रश्न 8 'जूझ' कहानी के अनुसार आनंदा किसके कारण पढ़ाई में मन लगाने लगा?

(i) नई कक्षा में प्रवेश पाने के कारण

(ii) वसंत पाटिल के संपर्क में आने के कारण

(iii) चह्वाण द्वारा मजाक उड़ाए जाने के कारण

(iv) कक्षा में उत्तीर्ण होने के कारण

प्रश्न 9 'जूझ' कहानी में आनंदा और उसकी माँ द्वारा झूठ का सहारा न लिए जाने की स्थिति में क्या होता?

(i) आनंदा के जीवन में अकेलापन ठहर जाता

(ii) वह कभी कविताएँ लिखना नहीं सीख पाता

(iii) वह शिक्षित होने से वंचित रह जाता

(iv) उपरोक्त सभी

प्रश्न 10 'जूझ' कहानी में आनंदा लेखन का अभ्यास कैसे करता था?

(i) मिट्टी पर लिखकर

(ii) श्यामपट्ट पर लिखकर

(iii) अपने पशुओं की पीठ पर लिखकर

(iv) घर की दीवारों पर लिखकर।

प्रश्न 11 'जूझ' कहानी में आनंदा जब पहले दिन पाठशाला गया, तो उसकी क्या प्रतिक्रिया थी?

(i) उसकी खुशी का ठिकाना न रहा

(ii) वह अत्यंत उदास था

(iii) वह क्रोधित हुआ

(iv) उसने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

प्रश्न 12 आनंदा और उसकी माँ ने दत्ता जी राव के पास जाने की क्यों सोची ? 'जूझ' कहानी के आधार पर सटीक विकल्प चुनिए।

(i) ताकि दत्ता जी राव उनका लगान माफ करा दें।

(ii) ताकि दत्ता जी राव उनकी कुछ आर्थिक सहायता कर सकें

(iii) ताकि वे लेखक को पाठशाला भेजने के लिए दादा को समझा कर राजी कर सकें

(iv) ताकि वे खेती-बाड़ी में कुछ सहायता कर सकें

प्रश्न 13 **'जूझ'** कहानी में लेखक के दादा के चरित्र की विशेषता क्या है**?**

(i) वे लेखक की प्रगति में सहायक हैं

(ii) वे राव साहब का सम्मान करते हैं

(iii) वे अपनी पत्नी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते

(iv) उपरोक्त सभी

प्रश्न 14 **'**जझ**'** का लेखक खेती का काम क्यों नहीं करना चाहता है**?**

(i) वह इस सत्य को जान गया था कि खेती से जीवनभर कुछ हाथ नहीं आएगा

(ii) वह अपने पिता की बात नहीं मानना चाहता है

(iii) वह अत्यधिक परिश्रम नहीं करना चाहता है

(iv) वह खेती को तुच्छ समझता है

प्रश्न 15 **'**जूझ**'** कहानी में आनंदा के पिता उसकी किस बात से नाराज होते हैं**?**

(i) खेत में काम करने की बात से

(ii) पढ़ाई करने की बात से

(iii) पशुओं को चराने की बात से

(iv) ये सभी

प्रश्न 16 **'**जूझ**'** कहानी के लेखक की बुद्धिमता का प्रमाण किस बात से मिलता है**?**

(i) माँ को समझाने की बात से

(ii) राव साहब को विश्वास दिलाने की बात से

(iii) पिता को बाध्य करने की बात से .

(iv) उपरोक्त सभी

प्रश्न 17 लेखक को न चाहते हुए भी खेती का काम क्यों करना पड़ता है**? 'जूझ'** कहानी के आधार पर सही विकल्प चुनिए। **(i)** खेती करना उनका खानदानी पेशा है

(ii) उनके जीवन में आर्थिक समस्या है

(ii) उनके माता-पिता चाहते हैं कि वह खेती करें

(iv) खेती के बिना उन्हें समाज में सम्मान नहीं मिलेगा

प्रश्न 18 **'**जूझ**'** कहानी में पिता द्वारा स्वयं खेती न करके अपने बेटे से खेती का काम करवाना किस ओर संकेत करता **?**

(i) पिता अपने बेटे को परिश्रमी बनाना चाहता है

(ii) पिता चाहता हैं कि उसका बेटा आर्थिक रूप से संपन्न बने

(iii) पिता के आलसी और कामचोर रूप को दर्शाता है

(iv) पिता चाहता है कि उसका बेटा उससे भी अधिक प्रगति करे।

प्रश्न 19 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए कि आनंदा को गणित कैसे समझ आने लगा था?

(**i)** मन की एकाग्रता से

(**ii)** वसंत पाटिल की सहायता से

(**iii)** अध्यापक की सहायता से

(**iv)** माता की सहायता से

प्रश्न 20 जूझ' कहानी में आनंदा के मास्टर सौंदलगेकर ने किस पर कविता लिखी थी?

(**i)** आनंदा की जुझारु प्रवृत्ति पर

(**ii)** मालती लता की सुंदरता पर

(**iii)** विद्यालय के अनुशासन पूर्ण व्यवहार पर

(**iv)** मराठी भाषा के महत्त्व पर उत्तर

उत्तर 1 (iii) **आनंदा के जीवन के संघर्ष**

उत्तर 2 (ii) **गाँव, खेती और आस-पास के दृश्य पर।**

उत्तर 3(i) **उसके परिश्रम व लगनशीलता की प्रवृत्ति का**

उत्तर 4 (ii) **नायक की समस्याओं से जूझने की प्रवृत्ति के कारण**

उत्तर 5(ii) **दत्ता राव ने लेखक की माता से**

उत्तर 6 (iv) (ii) **और (**ii) **दोनों**

उत्तर 7 (iv) **क्योंकि उसके पिता अत्यधिक गुस्से वाले व्यक्ति थे**

उत्तर 8 (ii) **वसंत पाटिल के संपर्क में आने के कारण**

उत्तर 9 (iv) **उपरोक्त सभी**

उत्तर 10 (ii) **अपने पशुओं की पीठ पर लिखकर**

उत्तर 11 (i) **उसकी खुशी का ठिकाना न रहा**

उत्तर 12 (iii) **ताकि वे लेखक को पाठशाला भेजने के लिए दादा को समझा कर राजी कर सकें।**

उत्तर 13 (ii) **वे राव साहब का सम्मान करते हैं।**

उत्तर 14 (i) **वह इस सत्य को जान गया था कि खेती से जीवनभर कुछ हाथ नहीं आएगा**

उत्तर 15 (ii) **पढ़ाई करने की बात से**

उत्तर 16 (iv) **उपरोक्त सभी**

उत्तर 17 (ii) **उनके जीवन में आर्थिक समस्या है।**

उत्तर 18 (iii) **पिता के आलसी और कामचोर रूप को दर्शाता है**

उत्तर 19 (i) **मन की एकाग्रता से**

उत्तर 20 (ii) **मालती लता की सुंदरता पर**

पाठ -3 अतीत में दबे पाँव

(लेखक- ओम थानवी)

प्रश्न बैंक: अतीत में दबे पाँव

प्रश्न (1) **'** अतीत में दबे पाँव **'** पाठ में किस सभ्यता का वर्णन किया गया है **?**

(i) गंगा घाटी सभ्यता (**ii)** सिंधु घाटी सभ्यता

(iii) मेसोपोटामिया सभ्यता **(iv)** माया सभ्यता

प्रश्न (2) मुअनजो-दड़ो को किस युग का नगर माना जाता है **?**

(i) कांस्य युग **(ii)** नव पाषाण युग

(iii) ताम्र युग **(iv)** लौह युग

प्रश्न (3) मुअनजो-दड़ो का शाब्दिक अर्थ है **?**

(i) शिलालेख **(ii)** पठारी क्षेत्र

(iii) पर्वतीय क्षेत्र (**iv)** मृतकों के टीला

प्रश्न (4) ताम्रकाल के शहरों में सबसे बड़ा शहर कौन-सा है **?**

(i) मोहनजोदड़ो **(ii)** लोथल

(iii) राखीगढ़ी **(iv)** हड़प्पा

प्रश्न (5) **'**अतीत में दबे पाँव **'** पाठ के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है **?**

(i) मुअनजो-दड़ो प्राकृतिक टीलों पर बसा था।

(ii) मोहनजो-दड़ो और हड़प्पा सिंधु घाटी सभ्यता के परिपक्व नगर हैं।

(iii) सिंधु-घाटी सभ्यता संसार में ज्ञात संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँची।

(iv) मोहनजो-दड़ो में सूत की कताई-बुनाई के साथ रँगाई भी होती थी।

प्रश्न (6) मेसोपोटामिया के शिलालेखों में मोहनजो-दड़ो के लिए किस शब्द का सम्भावित प्रयोग मिलता है ?

(i) मुनजो **(ii)** इंडस

(iii) मेलुहा **(iv)** इनमें से कोई नहीं

प्रश्न (7) मोहनजो-दड़ो का नगर नियोजन निम्नलिखित में से किस व्यवस्था पर आधारित था ?

(i) हाईब्रीड प्लान **(ii)** ग्रिड प्लान

(iii) ट्री प्लान **(iv)** इनमें से कोई नहीं

प्रश्न (8) इतिहासकार इरफान हबीब के मुताबिक सिंधु घाटी सभ्यता के लोग किस प्रकार की खेती किया करते थे ?

(i) खरीफ **(ii)** रबी

(iii) जायद **(iv)** इनमें से कोई नहीं

प्रश्न (9) किसके निर्देशन में मोहनजो-दड़ो की खुदाई का व्यापक अभियान शुरू हुआ ?

(i) जॉन मार्शल **(ii)** राखालदास बनर्जी

(iii) इरफान हबीब **(iv)** दीक्षित काशीनाथ

प्रश्न (10) किस वर्ष मोहनजो-दड़ो में प्राचीन नगर सभ्यता होने के प्रमाण मिले ?

(i) सन् 1919 **(ii)** सन् 1920

(iii) सन् 1921 **(iv)** सन् 1922

प्रश्न (11) मोहनजो-दड़ो शहर में जिस स्थान पर स्तूप बना है उस हिस्से को पुरातत्त्व के विद्वान क्या कहते हैं ?

(i) गढ़ **(ii)** किला

(iii) कुंड **(iv)** बुर्ज

प्रश्न (12) पाँच हजार साल पहले मोहनजो-दड़ो नगर की आबादी कितनी थी ?

(i) अस्सी हजार **(ii)** पचास हजार

(iii) पच्चासी हजार **(iv)** साठ हजार

प्रश्न (13) मोहनजो-दड़ो नगर बसा हुआ था ?

(i) टीले पर **(ii)** मैदान पर

(iii) पहाड़ों पर **(iv)** पर्वतों पर

प्रश्न (14) मोहनजो-दड़ो शहर कितने क्षेत्र में फैला हुआ था ?

(i) दो सौ हेक्टयर **(ii)** तीन सौ हेक्टयर

(iii) चार सौ हेक्टयर **(iv)** पाँच सौ हेक्टयर

प्रश्न (15) सिंधु घाटी सभ्यता का केन्द्र किसे माना जाता है ?

(i) राजस्थान को **(ii)** मोहनजोदड़ो को

(iii) महाराष्ट्र को **(iv)** हरियाणा को

प्रश्न (16) मोहनजोदड़ो नगर की खुदाई में कौन-कौन सी वस्तुएँ मिली थी **?**

(i) काला पड़ गया गेहूँ

(ii) चाक पर बने चित्रित मृदभांड

(iii) 1 और 2 दोनों

(iv) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न (17) कुंड की सीढ़ियाँ किस दिशा में उतरती है **?**

(i) उत्तर-दक्षिण **(ii)** दक्षिण-पूर्व

(iii) पूर्व-पश्चिम में **(iv)** उत्तर-पूर्व में

प्रश्न (18) आज के मुहावरे में सिंधु घाटी सभ्यता को क्या कहा जाता है **?**

(i) हाई प्रोफाइल सभ्यता

(ii) लो प्रोफाइल सभ्यता

(iii) मिडिल प्रोफाइल सभ्यता

(iv) उपर्युक्त सभी

प्रश्न (19) 'कॉलेज ऑफ दा प्रीस्ट्स' किसे माना जाता है **?**

(I) ज्ञानशाला को **(ii)** पाठशाला को

(iii) गौशाला को **(iv)** धर्मशाला को

प्रश्न (20) मोहनजो-दड़ो सभ्यता में सूत की कटाई-बुनाई के साथ क्या होता था **?**

(i) सिलाई **(ii)** रंगाई

(iii) 1 और 2 दोनों **(iv)** इनमें से कोई नहीं

प्रश्न (21) सिंधु घाटी सभ्यता के दौर में व्यापार के साथ और क्या होता था **?**

(i) उन्नत खेती **(ii)** पशुपालन

(iii) मछलीपालन **(iv)** मुर्गीपालन

(22) **'**अतीत में दबे पाँव**'** पाठ में मोहनजो-दड़ो की किसी खुदाई में नहर होने के प्रमाण न मिलने पर क्या अनुमान लगाया जाता है **?**

(i) उस काल में काफी बारिश होती होगी।

(ii) उस काल में पानी का प्रयोग कम होता होगा।

(iii) उस काल में खेती-बाड़ी इतनी अधिक नहीं होती होगी ।

(iv) उस काल में लोगों को नहरों के विषय में कोई जानकारी नहीं होती होगी।

प्रश्न (23) सिंधु घाटी सभ्यता में नगर योजना, वास्तुकला, पानी या साफ-सफाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं में एकरूपता को कायम रखने का आधार क्या हो सकता है ?

(i) यहाँ का राजा कठोर अनुशासन रखता था

(ii) यहाँ जनता ही कर्ता-धर्ता थी

(iii) यहाँ कोई अनुशासन जरूर था

(iv) यहाँ सब कुछ प्रकृति प्रदत्त था

प्रश्न (24) 'अतीत में दबे पाँव ' पाठ के अनुसार -" सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।" ऐसा इसलिए कहा गया है,क्योंकि

(i) सिंधु घाटी सभ्यता में सौंदर्य के प्रति चेतना अधिक थी

(ii) सिंधु घाटी सभ्यता में राजा से बड़ा स्थान लोगों के कार्यों का था

(iii) सिंधु घाटी सभ्यता में धर्म का महत्त्व न था। अतः समाज ही सर्वोपरि था।

(iv) सिंधु घाटी सभ्यता में अमीर-गरीब न थे। अतः समाज में समानता थी।

प्रश्न (25) " टूटे-फूटे खण्डहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ -साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों के सभी दस्तावेज होते हैं।"- 'अतीत में दबे पाँव ' पाठ के अनुसार इस कथन का क्या भाव है ?

(i) ऐतिहासिक इमारतों में बीते हुए जीवन के चिह्न महसूस होते हैं

(ii) ऐतिहासिक इमारतों,कला,खान-पान इत्यादि में सदा जीवन्तता होती है

(iii) पुरातन इमारतों के अध्ययन मात्र से इतिहास की व्याख्या संभव हो पाती है

(iv) इतिहास की समझ हेतु केवल सभ्यता और संस्कृति का जानना आवश्यक होता है

प्रश्न (26) सिंधु घाटी की सभ्यता के लिखित प्रमाण न मिलने का क्या कारण हो सकता है ?

(i) यह सभ्यता बहुत अधिक विशाल है

(ii) इनती पुरानी सभ्यता के लिखित प्रमाण मिलने संभव नहीं

(iii) इस सभ्यता में केवल मौखिक प्रमाण मिलते हैं

(iv) यह सभ्यता अत्यंत सीमित और कमजोर थी

प्रश्न (27) मोहनजो-दड़ो के घरों की मोटी दीवारों से क्या अनुमान लगाया जा सकता है ?

(i) ये दीवारें केवल प्रदर्शन मात्र के लिए बनवाई गई होंगी

(ii) ये दीवारें प्राकृतिक आपदा से बचने के लिए बनी होंगी

(iii) इन दीवारों पर दूसरी मंजिल भी रही होगी

(iv) इन दीवारों पर सुन्दर चित्रकारी करनी होगी

प्रश्न (28) सिंधु घाटी की सभ्यता में मिले अजायबघर की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ? 'अतीत के दबे पाँव '
पाठ के आधार पर सही विकल्प चुनिए-

(i) यह अजायबघर घर बहुत विशाल और सुन्दर है

(ii) इसमें सभी प्रकार की वस्तुएँ संग्रहित हैं

(iii) इसमें औजार तो हैं,परन्तु हथियार नहीं हैं

(**iv)** इसमें उत्कृष्ट कलात्मकता दिखाई देती है

प्रश्न (29) लेखक ने सिंधु सभ्यता को जल संस्कृति किस आधार पर कहा है **?**

(**i)** उस समय अधिक वर्षा होने के कारण

(**ii)** नदी**,** कुएँ**,** कुण्ड स्नानागार और बेजोड़ जल निकासी के कारण

(**iii)** केवल नदियों के किनारे बसी होने के कारण

(**iv)** जल की बर्बादी रोकने के कारण

प्रश्न (30) सिंधु घाटी की सभ्यता दूसरी सभ्यताओं से किस प्रकार भिन्न थी **?**

(**i)** यह सभ्यता पूर्णतः राजाश्रित सभ्यता थी

(**ii)** यह सभ्यता पूर्णतः साधन संपन्न सभ्यता थी

(**iii)** इसमें किसी एक का प्रभुत्त्व नहीं था**,**बल्कि एकता व समृद्धि से परिपूर्ण सभ्यता थी

(**iv)** इसमें निम्न वर्ग पर विशेष ध्यान दिया गया**,** ताकि उनका विकास हो सके

उत्तर संकेत

(1) (ii) **सिंधु घाटी सभ्यता**

(2) (iii) **ताम्र युग**

(3) (iv) **मृतकों के टीला**

(4) (i) **मोहनजो-दड़ो**

(5) (i) **मोहनजो-दड़ो प्राकृतिक टीलों पर बसा था**

(6) (iii) **मेलुहा**

(7) (ii) **ग्रिड प्लान**

(8) (ii) **रबी**

(9) (i) **जॉन मार्शल**

(10) (iv) **सन् 1922**

(11) (i) **गढ़**

(12) (iii) **पच्चासी हजार**

(13) (i) **टीले पर**

(14) (i) **दो सौ हेक्टयर**

(15) (ii) **मोहनजो-दड़ो**

(16) (iii) **1 और 2 दोनों**

(17) (iii) **उत्तर-पूर्व**

(18) (ii) **लो प्रोफाइल**

(19) (i) **ज्ञानशाला**

(20) (iii) **1 और 2 दोनों**

(21) (ii) **पशुपालन**

(22) (i) **उस काल में काफी बारिश होती होगी**

(23) (iii) **यहाँ कोई अनुशासन जरूर था**

(24) (ii) **सिंधु घाटी सभ्यता में राजा से बड़ा स्थान लोगों के कार्यों का था**

(25) (i) **ऐतिहासिक इमारतों में बीते हुए जीवन के चिह्न महसूस होते हैं**

(26) (ii) **इतनी पुरानी सभ्यता के लिखित प्रमाण मिलने संभव नहीं**

(27) (iii) **इन दीवारों पर दूसरी मंजिल भी रही होगी**

(28) (iii) **इसमें औजार तो है, परंतु हथियार नहीं**

(29) (ii) **नदी, कुएँ, कुण्ड, स्नानागार और बेजोड़ जल निकासी के कारण**

(30) (iii) **इसमें किसी एक का प्रभुत्त्व नहीं था,बल्कि एकता और समृद्धि से परिपूर्ण सभ्यता थी**

नए और अप्रत्याशित विषय पर रचनात्मक लेखन

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं –

सबै दिन होत न एक समाना

व्यक्ति का जीवन सदैव एक जैसा नहीं रहता। वह कभी सुख का तो कभी दुख का अनुभव करता है। इसका प्रमुख कारण समय की परिवर्तनशीलता है। वस्तुत: मानव-जीवन के सभी दिन एक समान नहीं होते। उनमें परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तन होता रहता है। समाज में नित नवीन परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इतिहास परिवर्तन का ही परिणाम है। किसी समय में भारत विश्व के संपन्न देशों में से एक था, परंतु आज स्थिति भिन्न है।

प्रगति की दौड़ में हम आज भी कई क्षेत्रों में बहुत आगे हैं तो कई क्षेत्रों में बहुत पीछे। समाज के हर क्षेत्र में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक क्षेत्र में भारी उथल-पुथल हो रही है। सामाजिक स्तर गिर रहा है। इस परिवर्तन से हमें निराश नहीं होना

चाहिए। समय कभी एक जैसा नहीं रहता। बिना परिवर्तन के व्यक्ति सुख-दुख का अनुभव नहीं कर सकता। परिवर्तन की आशा में ही व्यक्ति कर्मरत रहता है। अत: प्रतिकूल समय में धैर्य बनाए रखना चाहिए। रहीम ने कहा है-

रहिमन चुप बैठिए, देखि दिनन के फेर।
जब नीके दिन आइहें बनत न लागे देर।।

बुरे दिनों में व्यक्ति को अधिक-से-अधिक सहनशील बनना चाहिए क्योंकि सहनशीलता से कष्टकारक दिन समाप्त हो जाते है। वह अपनी इच्छानुसार फल प्राप्त नहीं कर सकता। अत: उसे कार्य करते रहना चाहिए। व्यक्ति अपने जीवन के विषय में कुछ नहीं कह सकता। मनुष्य अभाव में भी कुछ पाने की कल्पना करता हुआ कर्ममय बन सकता है। (शब्द 237)

मेरे जीवन का लक्ष्य

जीवन एक अंतहीन यात्रा है। जिस प्रकार यात्रा प्रारंभ करने से पहले व्यक्ति अपना गंतव्य स्थान निर्धारित कर लेता है, वैसे ही हमें भी अपनी जीवन-यात्रा प्रारंभ करने से पहले अपना कार्य-क्षेत्र निर्धारित कर लेना चाहिए। हर इंसान को अपने जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य निश्चित कर लेना चाहिए। लक्ष्यहीन जीव स्वच्छंद रूप से सागर में छोड़ी हुई नाव के समान होता है। ऐसी नौका या तो लहरों के मध्य डूब जाती है या चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जाती है। मैंने भी अपने जीवन में प्रशासनिक अधिकारी बनने का निश्चय किया है। मैं उस कर्म को श्रेष्ठ समझता हूँ, जिससे व्यक्ति अपना व अपने परिवार का तो कल्याण कर ही सके, साथ ही समाज को भी दिशा-निर्देश दे सके। प्रशासनिक अधिकारी का कार्य भी कुछ इसी प्रकार का है। वह समाज के कार्यों का सुचारू संचालन करता है, लोगों तक सरकारी योजनाओं को पहुंचाता है और समाज को एक विकास की नई दिशा प्रदान करता है। इस समाज में प्रशासन को चलाने के लिए व्यक्ति की योग्यता को तब तक सार्थक नहीं समझता जब तक वह समाज के लिए लाभदायक न हो। प्रशासनिक अधिकारी यह कार्य करने की सर्वाधिक क्षमता रखता है। मेरा विश्वास है कि समाज में समुचित विकास के बिना कोई भी नागरिक न अपने अधिकारों को सुरक्षित रख सकता है और न कभी दूसरों के अधिकारों का सम्मान कर सकता है। मैं एक प्रशासनिक अधिकारी बनकर समाज के लोगों को शिक्षा, चिकित्सा, विकास को जीवनोपयोगी बनाने का प्रयत्न करूंगा। मैं मेरे कार्य क्षेत्र परिसर के बाहर भी समाज के लोगों के साथ अत्यंत निकट का संपर्क स्थापित करूंगा और समाज के प्रत्येक वर्ग को भविष्य की नई सम्भावनाओं की दिशा एवं दशा प्रदान करने का प्रयत्न करूंगा। मैं सदैव अपने सद्व्यवहार द्वारा समाज में श्रेष्ठ भाव उत्पन्न करने का प्रयत्न करूंगा एवं अपने कर्तव्यों का पूर्ण ईमानदारी के साथ निर्वहन करूंगा।

परीक्षा के दिन

हम सबके लिए विद्यार्थी जीवन में परीक्षाओं का सामना करना बिल्कुल आम बात है। इसके बावजूद भी परीक्षा के कठिन दिन का सामना करना मेरे लिए बहुत डरावना रहता है। मैं बहुत घबराए रहता हूँ। मैंने जो कुछ भी पढ़ा या याद किया उस हर चीज को बार-बार दोहराना चाहता हूँ। मैं प्रश्न-पत्र के बारे में सोचता रहता हूँ। मेरा विश्वास है कि यदि मैं पहले दिन अच्छा करूंगा तो परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता हूँ। इसलिए परीक्षा का कठिन दिन भयानक लगता है; कुछ छात्र परीक्षाओं के कठिन दिन के पहले की रात सो नहीं पाते। मेरे लिए बोर्ड परीक्षा का कठिन दिन भी कुछ ऐसा ही था।

परीक्षा के दिन मैं अपना सारा ध्यान पढ़ाई की ओर केंद्रित कर प्रश्नों को याद करने और समझने में लगा देता हूँ। यह दिन मेरे लिए परीक्षा देवताओं को खुश करने के लिए अनुष्ठान करने के दिन जैसा होता है। वह कार्यों से मुक्ति, खेल-तमाशा से छुट्टी और मित्रों-साथियों से दूर रहने के दिन हैं। परीक्षा परीक्षार्थी के लिए भूत जैसा है। भूत जिस पर सवार हो जाता है, उसकी रातों की नींद हराम हो जाती है। दिन की भूख गायब हो जाती है और घर में सगे-संबंधियों का आना बुरा लगता है। टी.वी. के कार्यक्रम, मनपसंद एपिसोड आदि सब समय नष्ट करने के माध्यम लगते हैं।

परीक्षा के इन कठिन दिनों में परीक्षा बुखार चढ़ा होता है, जिसका तापमान परीक्षा भवन में प्रवेश करने तक निरंतर चढ़ता रहता है। वह प्रश्न-पत्र हल करके परीक्षा भवन से बाहर आने पर ही सामान्य होता है। फिर अगले विषय की तैयारी की याद आती है। परीक्षा के बुखार से ग्रस्त परीक्षार्थी निरंतर आराम ना कर पाने की पीड़ा से छटपटाता है। परीक्षा के बुखार से ग्रस्त परीक्षार्थी क्रोधी बन जाता है और चिंता उसके स्वास्थ्य को चौपट कर देती हैं। परीक्षा के दिनों में पढ़ाई के साथ उचित आराम भी जरूरी है ताकि परीक्षार्थी स्वस्थ रहें और एकाग्र होकर परीक्षा दे पाएं।

सोशल मीडिया

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहकर ही अपना जीवन जीता है। समाज में ही उसके व्यक्तित्व का विकास होता हैं, गांव की चौपाल, शहर के चौराहे स्वस्थ चर्चाओं और विभिन्न प्रकार की सूचनाओं के केंद्र हुआ करते थे, किंतु आज उनका स्थान सोशल मीडिया ने ले लिया है, जो विश्व में घटित होने वाली हर घटना की जानकारी तुरंत देते है।

व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, फेसबुक एवं अन्य माध्यम जिससे व्यक्ति स्वयं को, अपने किसी उत्पाद को अथवा अपने विचारों को अधिकाधिक लोगों तक आसानी से पहुँचा सकता है, तथा लोकप्रियता हासिल कर सकता है। सोशल मीडिया ने विश्वग्राम की परिकल्पना को चरितार्थ किया है। कोविड-19 के दौरान सोशल मीडिया की एक सशक्त भूमिका सामने आई है। इसके नकारात्मक प्रभाव से युवा व किशोरों को रोक लिया जाए तो यह संचार क्रांति का सशक्त माध्यम सिध्द हो सकता है।(शब्द 141)

परीक्षा भवन में प्रवेश करने से पहले

परीक्षा भवन में प्रवेश से पहले हमारी पूरी तैयारी हो और भरपूर आत्मविश्वास के साथ हम प्रवेश करें। परीक्षा नाम से बड़े-बड़ों के हाथ-पैर कांपते हैं। क्या बच्चें और क्या बूढें । श्रीमान आपको भी तो भय लगता होगा, अपने बीते दिनों को याद कीजिए। आज बच्चे पर घर-परिवार और विद्यालय का दबाव रहता है कि पूरा प्रश्न-पत्र सही करना है। शत प्रतिशत अंकों की अपेक्षा बेमानी है।

सभी का अपना-अपना मानसिक स्तर होता है। शेर शिकार करता है और घोड़ा घास खाता है। गधा कचरे के ढेर को पसंद करता है लेटने के लिए। जब प्रकृति ने सभी को भिन्न भिन्न बनाया है यहाँ कोई राजा के घर जन्मा है तो कोई रंक के । बात को समझा जाए कि प्रत्येक बच्चा अपनी अपनी अभिनव योग्यता के साथ जन्म लेता है और परीक्षा का परिणाम उसकी पूर्ण योग्यता का आकलन नहीं है। किसी भी स्थिति में टेंशन नहीं लेने का। (शब्द 150)

तेज़ रफ़्तार, दुर्घटना का विस्तार

सुबह–सुबह एक हाथ में चाय का कप व दूसरे हाथ में अखबार। अखबार में पहले ही पृष्ठ पर बड़े–बड़े अक्षरों में हेडलाइन है। भीषण सड़क हादसा, तेज़ रफ़्तार कार ने बाइक को रौंदा। सड़क पर कार स्पीड में है। वाहन स्पीड में हैं। मनुष्य स्पीड में हैं। आज इस भागम-भाग के जीवन में हर कोई एक-दूसरे से आगे निकलने की अँधी होड़ में हैं। इस स्पीड की प्रतिद्वंद्विता में ठहर जाती हैं तो वे लाखों जिंदगियाँ। आज जीवन पर स्पीड हावी है। वर्तमान में ऑवर स्पीड सड़क हादसों ने आपदा का रूप धारण कर लिया है। हर दिन सड़क हादसों में सैकड़ों-हजारों जिंदगियाँ अपना वज़ूद खत्म कर लेती है और कितनी ही जिंदगियाँ मौत और जिंदगी से लड़ती हुई अस्पतालों में पहुँचती हैं।

नींद, नशा, मोबाइल, तेज़ रफ़्तार इत्यादि सड़क हादसों के प्रमुख कारण हैं। जिंदगी कीमती है। थोड़ी सी लापरवाही जानलेवा बन जाती है और कई बार जान तो बच जाती है लेकिन जीवनभर के घाव दे जाती है। इसलिए जरूरी है कि सुरक्षित यात्रा के लिए यातायात नियमों का पालन करते हुए सुरक्षित वाहन चलाएँ। (शब्द 180)

आधुनिक जीवनशैली और तनाव

मनुष्य लगातार नित नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहा है, फिर भी और अधिक पाने की लालसा मन में बढ़ रही है। इस कारण से वह एक नई बीमारी 'तनाव' की गिरफ़्त में आता चला जा रहा है। प्राय: यह देखा गया है कि मनुष्य हमेशा किसी न किसी उधेड़बुन में लगा रहता है। आधुनिक जीवनशैली के चलते मनुष्य खुद को सर्वाधिक सुखी बनाना चाहता है, परंतु वह अपनी क्षमता व साधनों का ध्यान नहीं रखता है। इस कारण उसे अपने हर कार्य में असफल होने का भय बना रहता है।

लंबे समय तक जब मनुष्य तनावग्रस्त रहता है तो वह व्याधियों का शिकार हो जाता है। इस प्रकार लंबे समय तक तनाव ग्रस्त रहने से हृदय रोग, अल्सर, रक्तचाप, याददाश्त का कम हो जाना, ब्रेनस्ट्रोक आदि बीमारियाँ पैदा हो जाती है। उसकी हर कार्य में रुचि समाप्त हो जाती है। वह चिड़चिड़ा एवं गुस्सैल स्वभाव वाला हो जाता है। इस अंधी दौड़ से आज के दौर में बच्चे भी अछूते नहीं रहते हैं। उनका स्वभाव भी एकाकी, गुमसुम या भयंकर क्रोधी हो जाता है। ऐसे में हर व्यक्ति को नए ढंग से सोचते हुए नई-नई खुशियाँ ढूँढने का प्रयास करना चाहिए। उसे थोड़े समय के लिए आराम से चिंतन करना चाहिए। (शब्द 202)

अभ्यास हेतु नए और अप्रत्याशित विषयों पर रचनात्मक लेख के सम्भावित उदाहण :-

- ☐ लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका
- ☐ आज़ादी का अमृतम महोत्सव-स्वर्णिम 75वर्ष

- ☐ गर्मी की पहली बारिश
- ☐ जैसे ही मैनें डायरी खोली
- ☐ जीवन में हार नहीं मानी
- ☐ मैच खेलने का अवसर
- ☐ कोरोना एक भयावह बीमारी
- ☐ दिया और तूफ़ान- मानव जीवन का सत्य
- ☐ भारत में भाषाओं का इंद्रधनुष
- ☐ हमारी संस्कृति
- ☐ सोशल मीडिया और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
- ☐ ट्रेन की खिड़की से बाहर का जीवन
- ☐ पर्यावरण प्रदूषण
- ☐ पहियों पर जिंदगी
- ☐ विद्यार्थी जीवन के लक्ष्य
- ☐ तब समस्या का समाधान मिला
- ☐ कक्षा में मेरी पहली शरारत
- ☐ यदि मैं जिला कलेक्टर होता
- ☐ घोंसले से झाँकते चिड़िया के बच्चें
- ☐ सुकून के कुछ पल
- ☐ मेरे अधूरे सपने
- ☐ समुद्र की लहरें
- ☐ आसमान में टिमटिमाते तारे

कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण

कहानी और नाटक में संबंध-

कहानी और नाटक दोनों का केंद्र बिंदु कथानक होता है। कहानी और नाटक दोनों में पात्र, देशकाल तथा वातावरण जैसे तत्त्व मौजूद होते है । साथ ही संवाद, द्वंद्व, उद्देश्य तथा चरमोत्कर्ष दोनों ही विधाओं में पाए जाते है| इस संबंध को निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है :-

कहानी

1. कहानी का केंद्र बिंदु कथानक होता है।
2. कहानी में कथातत्त्व(कथा) होता है।
3. कहानी में पात्र होते हैं।
4. कहानी में परिवेश होते हैं।
5. कहानी का क्रमिक विकास होता है।
6. कहानी में संवाद होते हैं।
7. कहानी में पात्रों के मध्यम द्वंद्व होता है।
8. कहानी में एक उद्देश्य निहित होता है।
9. कहानी का चरमोत्कर्ष होता है।

नाटक

1. नाटक का केंद्र बिंदु कथानक होता है।
2. नाटक में भी कथातत्त्व(कथा) होता है।

3. नाटक में भी पात्र होते हैं।

4. नाटक में भी परिवेश होता है।

5. नाटक का भी क्रमिक विकास होता है।

6. नाटक में भी संवाद होते हैं।

7. नाटक में भी पात्रों के मध्य द्वंद्व होता है।

8. नाटक में भी एक उद्देश्य निहित होता है।

9. नाटक का भी चरमोत्कर्ष होता है।

कहानी और नाटक में मूलभूत अंतर

- जहाँ कहानी का संबंध लेखक और पाठक से है वहीं नाटक लेखक, निर्देशक, पात्र, श्रोता एवं अन्य लोगों को एक दूसरे से जोड़ता है।
- कहानी कही जाती है या पढ़ी जाती है। नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है।
- कुछ मूल तत्त्व जैसे द्वंद्व नाटक जितना और जिस मात्रा में होता है उतना कहानी में संभवतः नहीं होता है।

कहानी का नाट्य रूपांतरण कैसे करें ?

- कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए सबसे पहले कहानी की विस्तृत कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।
- कहानी की कथावस्तु को सामने रखकर एक-एक घटना को चुन-चुनकर निकाला जाता है और उसके आधार पर दृश्य निर्माण होता है।
- यदि एक घटना, एक स्थान और एक समय में घट रही है तो वह एक दृश्य होगा। उदहारण के तौर पर ईदगाह कहानी को हम एक दृश्य में रूपांतरित कर सकते है।
- स्थान और समय के आधार पर कहानी का विभाजन करके दृश्यों को लिखा जा सकता है। यह देखना आवश्यक है कि प्रत्येक दृश्य का कथानक के अनुसार औचित्य हो। यह हमें जान लेना आवश्यक है कि क्या प्रत्येक दृश्य कथानक का हिस्सा है ? अनावश्यक दृश्यों को शामिल न किया जाएँ। अनावश्यक दृश्य नाटक की गति को बाधित करते है।
- यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक दृश्य का कथानुसार विकास को रहा या नहीं।
- दृश्य विशेष के उद्देश्य और उसकी संरचना पर विचार आवश्यक है। प्रत्येक दृश्य एक बिंदु से प्रारंभ होता है।
- यह देखना आवश्यक है कि परिस्थिति, परिवेश, पात्र, कथानक से संबंधित विवरणात्मक टिप्पणियाँ किस प्रकार की है।
- रूपांतरित नाटक में कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता कहानी के आधार पर कर सकते है जैसे ईदगाह कहानी में हामिद के कपड़ों और पहननावे का जिक्र नहीं किया गया है लेकिन हम कहानी के आधार पर अनुमान लगा सकते है कि हामिद फटे-पुराने कपड़े पहने हुए होगा और नंगे पैर होगा।
- कहानी लंबे संवादों को छोटा करके अधिक नाटकीय बनाया जाना चाहिए।

कहानी का नाट्य-रूपांतर करते समय ध्यान देने योग्य महत्त्वपूर्ण बिंदु-

- कहानी एक ही जगह पर स्थित होनी चाहिए।
- कहानी में संवाद नहीं होते और नाट्य संवाद के आधार पर आगे बढ़ता है। इसलिए कहानी में संवाद का समावेश करना जरूरी है।
- कहानी का नाट्य रूपांतर करने से पहले उसका कथानक बनाना बहुत जरूरी है।
- नाटक में हर एक पात्र का विकास, कहानी जैसे आगे बढ़ती है, वैसे होता है इसलिए कहानी का नाट्य रूपांतर करते वक्त पात्र का विवरण करना बहुत जरूरी होता है।
- एक व्यक्ति कहानी लिख सकता है, पर जब नाट्य रूपांतर की बात आती है, तो हर एक समूह या टीम की जरूरत होती है।

नाट्य रूपांतरण की चुनौतियाँ –

- सबसे प्रमुख चुनौती यह है की कथानक के अनुसार दृश्य दिखाना।
- नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका खाका तैयार करना।
- नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।
- संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने की चुनौती।

- संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने की समस्या।
- कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या।

मुख्य बिंदु:-

कहानी और नाटक अलग-अलग विधाएं, अलग-अलग स्वरूप:-

नाटक और कहानी साहित्य की अलग-अलग विधाएं हैं। यद्यपि नाटक के मूल में भी कहानी होती है परंतु दोनों विधाओं का स्वरूप अलग-अलग है। इन दोनों में कुछ ऐसे तत्त्व हैं, जो इन्हें अलग करते हैं। इसके अलावा इनकी रचना प्रक्रिया भी अलग-अलग होती है। इनकी विधा बदलते ही भाषा प्रयोग भी बदल जाता है। इस तरह विधाओं में आदान-प्रदान की प्रक्रिया बदलती रहती है।

कहानी और नाटक में विविधता और समानता :-

कहानी का नाटक में रूपांतरण करने से पूर्व कहानी और नाटक में विविधता और समानता जानना जरूरी है। इसके लिए हमें इनकी विशेषताओं को समझना चाहिए-

- जहाँ कहानी का संबंध लेखक और पाठक से जुड़ता है, वहीं नाटक लेखक, निर्देशक, पात्र, दर्शक, श्रोता एवं अन्य लोगों को एक-दूसरे से जोड़े रखता है। यही कारण है कि 'गोदान', 'देवदास', 'उसने कहा था' आदि का नाट्य रूपांतरण कई बार और कई तरह से हुआ।
- कहानी कही या पढ़ी जाती है जबकि नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। नाटक को मंच पर अभिनेता अपने अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। इसमें संगीत, मंच- सज्जा और प्रकाश- व्यवस्था भी होती है।
- उन दोनों में यह समानता होती है कि दोनों में कहानी होती है, पात्र होते हैं और परिवेश होता है। इस तरह दोनों की आत्मा के कुछ तत्त्व समान होते हैं पर नाटक में जितना द्वंद होता है, उतना कहानी में नहीं।

कहानी को नाटक में रूपांतरित करने से पहले :

- कहानी को नाटक में रूपांतरित करने से पहले पूर्ण कहानी की विस्तृत कथावस्तु, समय और स्थान के आधार पर विभाजित कर लेना चाहिए। कथावस्तु उन घटनाओं का लेखा-जोखा है, जो कहानी में घटती हुई होती है। प्रत्येक घटना किसी स्थान और समय पर घटती है।
- कथावस्तु को सामने रखकर एक-एक घटना को चुन-चुन कर निकालना चाहिए क्योंकि इसी के आधार पर दृश्य बनते हैं। उदाहरण के लिए - ईदगाह कहानी के आरंभ में लेखक ने मेले को लेकर बच्चों के उतावलेपन और कुतूहल का लंबा मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। इसके लिए पहले दृश्य में उसी हिस्से पर फोकस किया जा सकता है, जहां बच्चे तैयार हो रहे हैं, भाग- दौड़ कर रहे हैं तथा अपने -अपने पैसे गिन रहे हैं। इसी प्रकार, अंतिम दृश्य अमीना और उसकी दादी से जुड़ा हो सकता है तथा उनके संवाद दिए जा सकते हैं।
- स्थान और समय के आधार पर भी कहानी का विभाजन करके दृश्यों को लिखा जा सकता है। इसके लिए प्रत्येक दृश्य का कथानक के अनुसार औचित्य होना चाहिए।
- यह भी ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक दृश्य का कथानुसार तार्किक विकास हो रहा है या नहीं। इसके लिए दृश्य- विशेष के उद्देश्य और उसकी संरचना पर विचार करना आवश्यक होता है।
- प्रत्येक दृश्य एक बिंदु से प्रारंभ होता है। कथानुसार अपनी ज़रूरतें पूरी करता है और उसका ऐसा अंत होता है जो उसे अगले दृश्य से जोड़ता है। इसलिए दृश्य का पूरा विवरण तैयार किया जाना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि दृश्य में कोई आवश्यक जानकारी छूट जाए या उसका क्रम बिगड़ जाए। इस तरह नाटक में ही नहीं बल्कि नाटक के प्रत्येक दृश्य में प्रारंभ, मध्य और अंत होता है। दृश्य कई काम एक साथ करता है। एक ओर वह कथानक को आगे बढ़ाता है तो दूसरी और पात्रों और परिवेश को संवादों के माध्यम से स्थापित करता है। किसके साथ -साथ दृश्य अगले दृश्य के लिए भूमिका भी तैयार करता है।
- इसके अलावा उन दृश्यों का भी खाका तैयार कर लेना चाहिए, जिनमें कोई संवाद न हो। इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि कोई घटना या सूचना को दोहराया न गया हो।
- दृश्य निर्धारण के बाद यह देखना आवश्यक हो जाता है कि परिस्थिति, परिवेश, पात्र कथानक से संबंधित विवरणात्मक टिप्पणियां किस प्रकार की हैं। इन विवरणों को नाटक में स्थान देने के तरीके अलग-अलग हैं, जैसे-विवरणात्मक टिप्पणी यदि परिवेश के बारे में है तो

उसे मंच-सज्जा के अंतर्गत लिया जा सकता है या पार्श्व संगीत के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। विवरण यदि पात्रों के बारे में है तो उन्हें संवादों के माध्यम से निर्धारित दृश्यों में उचित स्थान पर दिया जा सकता है।

नाटक संबंधी संवाद की विशेषताएं :-

- दृश्य निर्धारण के बाद या जाना जा सकता है कि दृश्य की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले संवाद है या नहीं। संवाद अपर्याप्त होने पर उन्हें लिखने का काम करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि नए लिखे संवाद कहानी के मूल संवाद के साथ मेल खाते हों, औचित्यपूर्ण हों, प्रभावशाली हों, छोटे और बोलचाल की भाषा में हों क्योंकि मंच पर लंबे संवादों से तारतम्य बनाना कठिन होता है।

नाटक में चरित्र - चित्रण :-

- नाटक में चरित्र- चित्रण करने की विधि कहानी से अलग होती है। ऐसा करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता नाटक के पात्रों में प्रयोग किया जाना चाहिए; जैसे- 'ईदगाह' कहानी में प्रेमचंद ने हामिद के कपड़ों का वर्णन नहीं किया है परंतु उसके कपड़े ऐसे हो सकते हैं जो उसके गरीबी तथा कमजोर आर्थिक स्थिति को दर्शाने वाले हों।
- संवाद को नाटक में प्रभावशाली बनाने का अगला तरीका अभिनय है जो प्रायः निर्देशक का काम है। पात्र की भाव -भंगिमाओं और उसके तौर-तरीकों से प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। कहानी के लंबे संवादों को छोटा करके उन्हें अधिक नाटकीय बनाया जा सकता है। स्थानीय रंग में संवादों को रंगकर चरित्र-चित्रण को परिमार्जित किया जा सकता है।
- ध्वनि और प्रकाश भी चरित्र-चित्रण करने तथा संवेदनात्मक प्रभाव उत्पन्न करने में कारगर सिद्ध होते हैं। इस बारे में निर्देशक ही प्रायः निर्णय लेते हैं।

पात्रों के मनोभावों या मानसिक द्वंद्व की प्रस्तुति की समस्या :-

- नाटक में पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा विवरण रूप में व्यक्त प्रसंगो या मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में समस्या आ सकती है। उदाहरणार्थ - 'ईदगाह' कहानी में चिमटे की दुकान पर खड़े हामिद के मन में चल रहे द्वंद्व - 'क्या क्या खरीदें ? या अम्मा का हाथ जलता है' का रूपांतरण कठिन है। इसके लिए स्वगत कथन का प्रयोग किया जा सकता है, पर आजकल इसके लिए 'वायस ओवर' का प्रयोग किया जाता है, जिसमें पात्र बोलता नहीं पर उसकी आवाज दर्शकों को सुनाई देती है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर:–

प्रश्न 1. नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार की मुख्य समस्या का सामना करना पड़ता है ?

उत्तर-नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है-

1. सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों व मानसिक द्वंद्वों की नाटकीय प्रस्तुति में आती है।
2. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने और संवादों को नाटकीय रूप प्रदान में समस्या आती है।
3. संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने और कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।

प्रश्न 2. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर-कहानी अथवा कथानक का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित आवश्यक बातों का ध्यान रखना चाहिए-

1. कथानक के अनुसार ही दृश्य दिखाए जाने चाहिए।
2. नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका खाका तैयार करना चाहिए।
3. नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।
4. कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण में एक निश्चित स्थान मिलना चाहिए।
5. संवाद सहज, सरल, संक्षिप्त, सटीक, प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।
6. संवाद अधिक लंबे और ऊबाऊ नहीं होने चाहिए।

प्रश्न 3. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन कैसे करते हैं ?

उत्तर-कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन निम्न प्रकार करते हैं-

1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।
2. एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।

3. दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलग दृश्यों में बांटा जाता है।

4. दृश्य विभाजन में कथाक्रम और विकास का भी ध्यान रखा जाता है।

प्रश्न 4. कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है ?

उत्तर- कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है -

1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

2. कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।

3. कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।

4: ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।

5. कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।

6. पात्रों के द्वंद्व, कथानक और संवादों को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।

प्रश्न 5. 'कहानीकार द्वारा कहानी के प्रसंगों या पात्रों के मानसिक द्वंद्वों के विवरण के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में काफ़ी समस्या आती है।' इस कथन के संदर्भ में नाट्य रूपांतरण की किन्हीं तीन चुनौतियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- उपर्युक्त कथन के सन्दर्भ में नाट्य रूपांतरण की निम्नलिखित चुनौतियां हो सकती है :-

•पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने में

•मानसिक द्वंद्व के दृश्यों को प्रस्तुत करने में

•पात्रों की सोच के प्रस्तुतीकरण को अभिनय के माध्यम से दर्शाने में

उदाहरण के लिए- ईदगाह कहानी का वह हिस्सा जहाँ हामिद इस द्वंद में है कि क्या खरीदे, क्या ना खरीदे।

प्रश्न 6. कहानी और नाटक में क्या-क्या समानताएं होती हैं ?

उत्तर- कहानी और नाटक भले ही साहित्य की अलग-अलग विधाएं हों, पर उनमें अनेक समानताएं होती हैं; जैसे -

•कहानी और नाटक दोनों में ही एक कहानी(कथावस्तु) होती है।

•दोनों में ही पात्र और परिवेश होता है।

•दोनों का ही क्रमिक विकास होता है, द्वंद्व होता है, संवाद होते हैं और चरम उत्कर्ष होता है।

•कहानी और नाटक दोनों की ही आत्मा के कुछ मूल तत्त्व एक ही होते हैं।

प्रश्न 8. - कहानी के नाट्य रूपांतरण में संवादों का विशेष महत्त्व होता है। नीचे 'ईदगाह' कहानी से संबंधित कुछ चित्र दिए जा रहे हैं।

इन्हें देखकर संवाद लिखें -(चित्र के लिए देखें - 'अभिव्यक्ति और माध्यम' पुस्तक की पृष्ठ संख्या- 145-146)

उत्तर - (गांव में किसी घर के बाहर की खुली जगह। मनोहर, सुंदर सुबह और वहां खड़े हुए चार- पांच बालक । उनके चेहरों पर प्रसन्नता, अपनी - अपनी जेबों से पैसे निकाल कर एक - दूसरे को दिखा कर गिनते हुए।

महमूद- एक -दो , दस- बारह।

मोहसिन - एक, दो , तीन, आठ, नौ, पंद्रह।

(वे पैसे अपनी जेब में रखते हैं)

इसी प्रकार छात्र 'ईदगाह' कहानी के दृश्यों को सोचें और अपनी कल्पना से संवाद लिखें।

प्रश्न 9. कहानी और नाटक में मुख्य अंतर क्या है ?

उत्तर - कहानी और नाटक में मुख्य अंतर यह है कि कहानी कही या पढ़ी जाती है जबकि नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। इसमें अभिनेता अभिनय करते हैं। मंच - सज्जा होती है, संगीत होता है और प्रकाश व्यवस्था होती है।

पाठ्य पुस्तक से हल प्रश्न:-

प्रश्न- लोक नाटक और फिल्म को देर तक क्यों याद रखते हैं **?**

उत्तर लोग नाटक और फिल्म को देर तक इसलिए याद रखते हैं क्योंकि दृश्य का स्मृतियों से गहरा संबंध होता है।

प्रश्न - नाटक और कहानी के द्वंद्व तत्त्व में क्या अंतर होता है ?

उत्तर - यद्यपि नाटक और कहानी दोनों में द्वंद्व तत्त्व होता है परंतु नाटक में यह तत्त्व अधिक मात्रा में पाया जाता है।

प्रश्न - कथावस्तु किसे कहते हैं ?

उत्तर - कथावस्तु उन घटनाओं का लेखा-जोखा है जो कहानी में घटती है।

प्रश्न - नाटक के दृश्य किस आधार पर बनाए जाते हैं ?

उत्तर - कहानी की कथावस्तु को सामने रखकर एक-एक घटना को चुन-चुन कर निकाला जाता है। इसके आधार पर ही कहानी का दृश्य बनता है।

प्रश्न - नाटक में अनावश्यक दृश्य क्यों नहीं रखना चाहिए ?

उत्तर - नाटक में अनावश्यक दृश्य इसलिए नहीं रखना चाहिए क्योंकि ऐसे दृश्य नाटक की गति को बाधित करते हैं तथा मानक समय सीमा में समाप्त करने की समस्या भी उत्पन्न होती है।

प्रश्न - नाटक के दृश्य की क्या विशेषताएं होती हैं ?

उत्तर - नाटक का प्रत्येक दृश्य एक बिंदु से प्रारंभ होता है। वह कथानुसार अपनी आवश्यकता पूरी करता है तथा उसका अंत ऐसा होता है जो अगले दृश्य से जोड़ता है।

प्रश्न - नाटक में दृश्य की महत्ता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - नाटक में दृश्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। यह एक साथ कई काम करता है, जैसे-

•कथानक को आगे बढ़ाता है।

•पात्रों और परिवेश को संवादों के माध्यम से स्थापित करता है।

•अगले दृश्य के लिए भूमिका तैयार करता है।

प्रश्न - नाटक में पात्रों से जुड़ी विवरणात्मक टिप्पणी किस तरह दी जा सकती है ?

उत्तर - नाटक में पात्रों से जुड़ी विवरणात्मक टिप्पणी संवादों के माध्यम से निर्धारित दृश्यों में संवादों से पूर्व उचित स्थान पर दी जा सकती है।

प्रश्न - नाटक के लिए संवाद लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर - नाटक के लिए संवाद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

•संवाद, कहानी के मूल संवादों के साथ मेल खाते हों।

•वह औचित्यपूर्ण हों।

•संवाद प्रभावशाली, छोटे और बोलचाल की भाषा में हों।

प्रश्न - नाटक में संवाद किस तरह प्रभावशाली बनाया जा सकता है ?

उत्तर - नाटक में संवाद को प्रभावी बनाने का पहला तरीका अभिनय है, इस काम को निर्देशक बखूबी निभाता है। इसके अलावा कहानी के संवादों को छोटा करके नाटकीय बनाया जा सकता है।

प्रश्न - कहानी के नाट्य रूपांतरण में क्या समस्या आती है ?

उत्तर - कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय पात्रों के मनोभावों के विवरण के रूप में व्यक्त प्रसंग या मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति में प्रायः समस्या आ जाती है।

प्रश्न - 'वायस ओवर' क्या है ?

उत्तर - पात्रों के मनोभावों की प्रस्तुति के लिए आजकल 'वायस ओवर' का प्रयोग किया जाता है। यह ऐसी ध्वनि होती है जो दर्शकों को सुनाई तो देती है, पर पात्र बोलता नहीं है।

अभिव्यक्ति और माध्यम

पाठ-3. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

प्रश्न 1. जनसंचार माध्यम से आप क्या समझते हैं प्रमुख जनसंचार माध्यमों को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर --जनसंचार माध्यम के अंतर्गत किसी भी सूचना या संदेश को विभिन्न कृत्रिम माध्यमों के द्वारा विशाल जनसमूह तक पहुंचाया जाता है ।जनसंचार के प्रमुख माध्यमों में हैं- रेडियो ,टेलीविजन ,इंटरनेट ,समाचार पत्र ,सिनेमा, टेलीफोन आदि, इन माध्यमों ने किसी भी सूचना या संदेश के आदान-प्रदान में एक दूसरे के बीच की दूरी और समय को अत्यंत ही कम कर दिया है।

रेडियो --रेडियो श्रव्य माध्यम है इस पर शब्द में नाटक प्रस्तुत किया जाता है शब्दों के माध्यम से इस पर अभिनय भी किया जा सकता है रेडियो का आविष्कार 1895 ईस्वी में जी मारकोनी ने वायरलेस के जरिए किया था। टेलीविजन --टेलीविजन समाचार दृश्य -श्रव्य दोनों प्रकार का माध्यम है यह प्रमाणित होने के साथ-साथ सटीक माध्यम भी है इसका आविष्कार जे एल बेयर्ड ने किया था। समाचार पत्र -- यह प्रिंट माध्यम के अंतर्गत आता है, इसमें विभिन्न अखबार एवं पत्र -पत्रिकाएं आते हैं ,यह जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम है

प्रश्न 2. मुद्रित माध्यम क्या है इसकी विशेषताओं व कमियों को बताइए?

उत्तर--मुद्रित माध्यम यानी प्रिंट माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है ,वास्तव में आधुनिक युग की शुरुआत ही मुद्रण यानी छपाई के आविष्कार से हुई। यद्यपि मुद्रण की शुरुआत की चीन से हुई लेकिन आज हम जिस छापेखाने को देखते हैं, इसके आविष्कार का श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है ।भारत में पहला छापाखाना 1556 में गोवा में खुला जो मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था। इसकी विशेषताओं में प्रमुख है इसका स्थायित्व होना ।उसे आप आराम से और धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं ,पढ़ते हुए सोच सकते हैं। दूसरी विशेषता है यह लिखित भाषा का विस्तार है लेकिन भाषा की सभी विशेषताएं इसमें शामिल है। तीसरी विशेषता यह है कि यह चिंतन ,विचार और विश्लेषण का माध्यम है, इस माध्यम में आप गंभीर और गूढ़ बातें लिख सकते हैं।

मुद्रित माध्यम की कमी या उसकी सीमाएं भी हैं निरीक्षकों के लिए मुद्रित माध्यम किसी काम का नहीं है। मुद्रित माध्यमों के लिए लेखन करने वालों को अपने पाठकों के भाषा ज्ञान के साथ-साथ उनके शैक्षिक ज्ञान और योग्यता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है ,साथ ही पाठकों

की रूचि और जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है ।यह तुरंत घटित घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते, यह एक निश्चित अवधि पर प्रकाशित होते हैं जैसे अखबार 24 घंटे में एक बार या साप्ताहिक पत्रिका सप्ताह में एक बार प्रकाशित होती है।

प्रश्न 3. मुद्रित माध्यमों के लेखन में ध्यान रखने योग्य बिंदुओं का उल्लेख कीजिए?

उत्तर- मुद्रित माध्यमों के लेखन में हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना पड़ता है ।

1.लेखन में भाषा व्याकरण वर्तनी और शैली का ध्यान रखना जरूरी है ।

2.समय -सीमा और आवंटित जगह के अनुशासन का पालन करना प्रत्येक स्थिति में जरूरी है।

3. लेखन और प्रकाशन के बीच गलतियों और अशुद्धियों को ठीक करना जरूरी होता है।

4. लेखन में सहज प्रवाह के लिए तारतम्यता बनाए रखना जरूरी है।

प्रश्न 4. समाचार लेखन की प्रसिद्ध शैली क्या है? **उसे विस्तार से समझाइए**?

उत्तर- समाचार लेखन की प्रसिद्ध शैली उल्टा पिरामिड शैली होती है। उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तत्व को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है इस शैली में किसी घटना ,विचार समस्या का ब्यौरा कालानुक्रम के बजाय सबसे महत्वपूर्ण तथ्य ,सूचना से शुरू होता है, तात्पर्य है कि इस शैली में कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं ,बल्कि खबर के बिल्कुल शुरू में आता है। उल्टा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता। इसमें हम समाचार को तीन हिस्सों में विभाजित कर सकते हैं -इंट्रो, बॉडी और समापन ।

प्रश्न 5. टीवी खबरों के विभिन्न चरण कौन-कौन से हैं किन्हीं तीन चरण पर प्रकाश डालें?

उत्तर- टीवी चैनल पर खबर देने का मूल आधार प्रिंट या रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रचलित है यानी सबसे पहले सूचना देना टीवी में भी यह सूचनाएं कई चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुंचती हैं जो निम्नलिखित हैं --

फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़, ड्राई एंकर, फोन-इन, एंकर-विजुअल, एंकर बाइट, लाइव, एंकर-पैकेज

फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़- सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुंचाई जाती है। इसमें कम से कम शब्दों में महज सूचना दी जाती है।

ड्राई एंकर- इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है ,कि कहां ,क्या ,कब और कैसे हुआ। जब तक खबर के दृश्य नहीं आते एंकर दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएं पहुंचाता है।

फोन-इन- इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फोन पर बात करके सूचनाएं दर्शकों तक पहुंचाता है ,इसमें रिपोर्टर घटना वाली जगह पर मौजूद होता है और वहां से उसे जितनी ज्यादा से ज्यादा जानकारियां मिलती हैं वह दर्शकों को बताता है।

एंकर-विजुअल- जब घटना के दृश्य मिल जाते हैं तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है जो एंकर पड़ता है इसकी शुरुआत ही प्रारंभिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।

एंकर-बाइट- एंकर बाइट का सामान्य अर्थ है कथन इसमें किसी खबर को पुष्ट करने के लिए घटना के प्रत्यक्षदर्शी हो या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखाया या सुनाया जाता है ।

लाइव- लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण इसमें मौके पर मौजूद रिपोर्टर और कैमरामैन ओबी वैन के जरिए घटना को सीधे दर्शकों को दिखाते हैं। एंकर –पैकेज- पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का एक जरिया है इसमें संबंधित घटना के दृश्य इससे जुड़े लोगों की बाइट ग्राफिक के जरिए सूचनाएं आदि होती हैं।

प्रश्न 6. इंटरनेट पत्रकारिता क्या है? **स्पष्ट कीजिए**?

उत्तर- इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है ।इंटरनेट पर यदि हम किसी भी रूप में खबरों, लेखों, चर्चा-परिचर्चाओं, फीचर, झलकियां ,डायरियों के जरिए अपने समय की धड़कनों को महसूस करने और दर्ज करने का काम करते हैं तो वही इंटरनेट पत्रकारिता है ।आज अधिकांश अखबार इंटरनेट पर उपलब्ध हैं, आज नई पीढ़ी के लोग जो इंटरनेट के अभ्यस्त हैं, उन्हें हर घंटे अपने आप को अपडेट करने की आदत बनती जा रही है ।ऐसे लोगों के लिए इंटरनेट पत्रकारिता बड़े महत्व की है।

प्रश्न 7. हिंदी नेट संसार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए?

उत्तर- हिंदी में नेट पत्रकारिता वेबदुनिया के साथ शुरू हुई ,इंदौर के नई दुनिया समूह से शुरू हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है ,इसके साथ ही हिंदी के अखबारों ने भी विश्व जाल में अपनी उपस्थिति दर्ज करानी शुरू कि, आज", प्रभासाक्षी" के अतिरिक्त कई ऐसे अखबार हैं जो प्रिंट रूप में ना होकर सिर्फ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है ।हिंदी वेब जगत का एक अच्छा पहलू यह भी है कि इसमें कई साहित्यिक पत्रिकाएं चल रही हैं अनुभूति, अभिव्यक्ति । हिंदी में आज सरकार के मंत्रालय और विभाग भी इसमें सक्रिय हैं जिससे हिंदी नेट संसार समृद्ध हो रहा है।

पाठ-4 .पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

प्रश्न 1. पत्रकारीय लेखन क्या है ?इसके विभिन्न रूपों को स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर- अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएं पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हैं ,जिसे पत्रकारीय लेखन कहते हैं इसके कई रूप हैं- पूर्णकालिक, अंशकालिक और फ्रीलांसर पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन में कार्य करने वाला नियमित वेतन भोगी कर्मचारी होता है। जबकि अंशकालिक पत्रकार एक निश्चित मानदेय पर काम करता है। फ्रीलांसर पत्रकार का संबंध किसी अखबार से नहीं होता है बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है।

प्रश्न 2- समाचार लेखन में छःककार से क्या तात्पर्य है स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- समाचार लेखन में कब, कहां, कैसे, क्या, कौन, क्यों इन्हीं छः प्रश्नों को छःककार कहते हैं इन्हीं ककारों के आधार पर किसी घटना समस्या तथा विचार आदि से संबंधित खबर लिखी जाती है। यह ककार ही समाचार लेखन का मूल आधार होते हैं। इसीलिए समाचार लेखन में इनका बहुत महत्व है छः ककारों को हम इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं--

1. कब- यह समाचार लेखन का आधार होता है इस ककार के माध्यम से किसी घटना तथा समस्या के समय का बोध होता है। जैसे- बस दुर्घटना कब हुई**?**

2.कहां- किसी स्थान को आधार बनाकर समाचार लिखा जाता है। इसके माध्यम से किसी घटना और समस्या के स्थान का चित्रण किया जाता है।

3.कैसे- इस ककार के द्वारा समाचार का विश्लेषण वितरण तथा व्याख्या की जाती है।

4.क्या- यह ककार भी समाचार लेखन का आधार माना जाता है इसके द्वारा समाचार की रूपरेखा तैयार की जाती है ।

5.क्यों- इस ककार के द्वारा समाचार के विवरणात्मक, व्याख्यात्मक तथा विश्लेषणात्मक पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है ।

6.कौन- इस ककार को आधार बनाकर समाचार लिखा जाता है।

प्रश्न.3 फीचर क्या है फीचर की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर -फीचर का अभिप्राय ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन है ।इसमें विविध विधाओं का प्रयोग करते हुए ऐसी रचना प्रस्तुत करने का प्रयास होता है जिसमें रोचकता और पठनीयता हो ।

फीचर की विशेषताएं-

1.फीचर लेखन में उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता यानी फीचर लेखन का कोई एक तय ढाँचा या फार्मूला नहीं होता है। फीचर लेखन की शैली काफी हद तक कथात्मक शैली की तरह है ।

2. फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्म निष्ठ लेखन है ।

3. फीचर लेखन की भाषा समाचारों के विपरीत सरल, रूपात्मक ,आकर्षक और मन को छूने वाली होती है।फीचर की भाषा में समाचारों की सपाट बयानी नहीं चलती 4.फीचर में समाचारों की तरह शब्दों की कोई अधिकतम सीमा नहीं होती ।फीचर आमतौर पर समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं ।अखबारों और पत्रिकाओं में 250 शब्दों से लेकर 2000 शब्दों तक के फीचर छपते हैं ।

5. एक अच्छे और रोचक फीचर के साथ फोटो, रेखांकन, ग्राफिक्स आदि का होना जरूरी है ।फीचर का विषय कुछ भी हो सकता है।

प्रश्न 4. विशेष रिपोर्ट के प्रकार लिखिए?

उत्तर- विशेष रिपोर्ट के कई प्रकार होते हैं -खोजी रिपोर्ट (इन्वेस्टिगेटिव रिपोर्ट),इन-डेप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट -विशेष रिपोर्टों के कुछ प्रकार हैं ।खोजी रिपोर्ट में रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के जरिए ऐसी सूचनाएं या तथ्य सामने लाता है,

जो सार्वजनिक तौर पर पहले से उपलब्ध नहीं थी। खोजी रिपोर्ट का इस्तेमाल आमतौर पर भ्रष्टाचार अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है। इन -डेप्थ रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है। और उसके आधार पर किसी घटना ,समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है। इसी तरह विश्लेषणात्मक रिपोर्ट में जोर किसी घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों के विश्लेषण और व्याख्या पर होता है, जबकि विवरणात्मक रिपोर्ट में किसी घटना या समस्या के विस्तृत और बारीक विवरण को प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए- संपादकीय, स्तंभ लेखन, साक्षात्कार।

संपादकीय- संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचार पत्र की राय भी कहा जाता है, संपादकीय कहते हैं। संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय ना होकर समग्र पत्र समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता।

स्तंभ लेखन- स्तंभ लेखन एक प्रकार का विचारात्मक लेखन है ।कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान एवं लेखन शैली के लिए जाने जाते हैं ।ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर समाचार पत्र उन्हें अपने पत्र में नियमित स्तंभ लेखन की जिम्मेदारी प्रदान करते हैं। इस प्रकार किसी समाचार पत्र में किसी ऐसे लेखक द्वारा किया गया विशिष्ट एवं नियमित लेखन जो अपनी विशिष्ट शैली एवं वैचारिक रुझान के कारण समाज में ख्याति प्राप्त हो, स्तंभ लेखन कहा जाता है।

साक्षात्कार /इंटरव्यू- किसी पत्रकार के द्वारा अपने समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिए, किसी व्यक्ति विशेष से उसके विषय में अथवा किसी विषय या मुद्दे पर किया गया प्रश्नोत्तरात्मक संवाद साक्षात्कार कहलाता है।

विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकार

प्रश्न 1. विशेष लेखन से क्या आशय है ? विशेष लेखन के क्षेत्र का उदाहरण भी दीजिए।

अथवा

विशेष लेखन किसे कहते हैं?

उत्तर - सामान्य लेखन से हटकर किसी खास विषय पर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता है। विशेष लेखन बीट रिपोर्टिंग से आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है जिसमें उस विषय की गहरी जानकारी के साथ- साथ उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी आपका पूरा अधिकार होना चाहिए। विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अतिरिक्त उस विषय या क्षेत्र विशेष पर फ़ीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार,लेख, समीक्षा और स्तंभ लेखन भी आता है। उदाहरणतया- अर्थ- व्यापार,खेल, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश,रक्षा,पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, फ़िल्म-मनोरंजन, अपराध, सामाजिक मुद्दे, कानून आदि विशेष क्षेत्रों से संबंधित लेखन विशेष- लेखन के अंतर्गत आते हैं।

प्रश्न 2. डेस्क से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर - समाचार पत्रों और पत्रिकाओं, टी . वी . और रेडियो चैनलों के लिए किए जाने वाले विशेष लेखन के लिए एक अलग स्थान होता है। उसे डेस्क कहते हैं। यहाँ किसी खास विषय(बिज़नेस,खेल आदि) के विशेषज्ञ उपसंपादक और संवाददाता मिल - बैठकर विशेष विषय का लेखन करते हैं।

प्रश्न 3. विशेषीकृत रिपोर्टिंग से क्या आशय है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए |

उत्तर - विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए आवश्यक है कि लेखक को संबंधित विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए। विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लेखक को रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा - शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए। विशेषीकृत रिपोर्टिंग का तात्पर्य है विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण।जैसे अगर शेयर बाजार में भारी गिरावट आती है तो विशेषीकृत रिपोर्टिंग करनेवाला संवाददाता इसका विश्लेषण करके यह स्पष्ट करने की कोशिश करेगा कि बाजार में गिरावट क्यों और किन कारणों से आई है और इसका आम निवेशकों पर क्या असर पड़ेगा। विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा दिया जाता है।

प्रश्न 4. बीट से क्या आशय है ?

अथवा

पत्रकारिता की भाषा में ' बीट ' किसे कहते हैं ?

उत्तर - संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि उसका कार्य क्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करना है। उदाहरणतया अपराध , खेल , आर्थिक या कारोबार जगत आदि अलग - अलग बीट कहलाते हैं।

प्रश्न 5. बीट रिपोर्टिंग से क्या आशय है ? समझाइए।

उत्तर - बीट रिपोर्टिंग का आशय है , किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित नए तथ्यों की आरंभिक जानकारी देना। इसमें कहॉ,कब, क्या, किसने किया- इतनी जानकारी पर्याप्त होती है। बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। जैसे अगर शेयर बाजार में भारी गिरावट आती है तो उस बीट पर रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता उसकी एक तथ्यात्मक रिपोर्ट तैयार करेगा, जिसमें सभी जरूरी सूचनाएँ और तथ्य शामिल होंगे।

प्रश्न 6. विशेष रिपोर्ट के लेखन में किन बातों पर अधिक बल दिया जाता है ?

उत्तर - विशेष रिपोर्ट के लेखन में किसी विशेष विषय की गहरी जानकरी के साथ - साथ उस क्षेत्र की भाषा - शैली का भी प्रयोग होता है। जैसे - व्यापार की भाषा में- चना लुढ़का , दालें उछली आदि प्रयोग धड़ल्ले से होते हैं।

प्रश्न 7. बीट रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग का अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और दिलचस्पी का होना पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त एक बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती है। लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विशेष क्षेत्र या विषय से संबंधित घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण कर पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। इसमें घटनाओं के घटित होने के मूलभूत कारणों और परिणामों पर भी प्रकाश डाला जाता है।

प्रश्न 8. बीट रिपोर्टर किसे कहते हैं ?

उत्तर- किसी विशेष क्षेत्र - जैसे खेल , फिल्म आदि के लिए लिखने वाला पत्रकार बीट रिपोर्टर कहा जाता है। जैसे जो पत्रकार राजनीति में दिलचस्पी रखते हैं या किसी खास राजनीतिक पार्टी को कवर करते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि इस पार्टी का इतिहास क्या है, उसमें समय-समय पर क्या हुआ है, आज क्या चल रहा है, पार्टी के सिद्धांत या नीतियॉ क्या हैं, उसके पदाधिकारी कौन-कौन हैं और उनकी पृष्ठभूमि क्या है , बाकी पार्टियों से उस पार्टी के कैसे रिश्ते हैं और उनमें आपस में क्या फर्क है, उसके अधिवेशन में क्या-क्या होता रहा है, उस पार्टी की कमियां और खूबियॉ क्या हैं इत्यादि।

प्रश्न 9. संवाददाता और विशेष संवाददाता में क्या अंतर होता है ?

उत्तर- बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहा जाता है।दूसरे शब्दों में किसी भी बीट के लिए तथ्यात्मक संकलन और लेखन करने वाले पत्रकार को संवाददाता कहते हैं। किसी विशेष विषय के विशेषज्ञ और विश्लेषक को विशेष संवाददाता कहा जाता है।

प्रश्न 10. विशेष लेखन की भाषा - शैली सामान्य लेखन से किस प्रकार पृथक होती है ?

उत्तर- विशेष लेखन की भाषा - शैली भी विशेष होती है। हर क्षेत्र विशेष की अपनी विशेष तकनीकी शब्दावली होती है जो उस विषय पर लिखते हुए आपके लेखन में आती है। जैसे कारोबार पर विशेष लेखन करते हुए आपको उसमें इस्तेमाल होने वाली शब्दावली से परिचित होना चाहिए। दूसरे, आप अपने पाठक को भी उस शब्दावली से इस तरह परिचित कराएँ कि उसे आपकी रिपोर्ट को समझने में कोई दिक्कत न हो। उदाहरणतया खेल से संबंधित बीट की भाषा में पीटा , जीता , हारा , रौंदा , घुटने टेके, धुआँधार आदि शब्दों का प्रयोग प्रचुरता से होता है। उदाहरणतया- 1. भारत ने पाकिस्तान को चार विकेट से पीटा, 2. चैंपियंस कप में मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके।

प्रश्न 11. व्यापार की भाषा की विशेष शब्दावली लिखिए।

उत्तर - व्यापार में बैंक , शेयर बाजार , जिंस, धातु आदि के लेन - देन तथा उतार - चढ़ाव से संबंधित समाचार होते हैं। इसलिए इसमें तेजड़िए , मंदड़िए , बिकवाली, ब्याज दर, मुद्रास्फीति, व्यापार घाटा, राजकोषीय घाटा, राजस्व घाटा, वार्षिक योजना, एफ.डी.आई , आवक , निवेश , आयात, निर्यात, सोने में भारी उछाल , चाँदी लुढ़की, रिकार्ड तोड़े,आसमान पर आदि शब्दों का प्रचुर प्रयोग देखने को मिलता है। दो उदाहरण देखिए- सेंसेक्स आसमान पर।, जीरा औंधे मुँह गिरा।

प्रश्न 12. विशेष लेखन की भाषा शैली पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर - विशेष लिखने की कोई निश्चित शैली नहीं होती। लेकिन अगर आप अपने बीट से जुड़ा कोई समाचार लिख रहा हैं तो उसकी शैली उल्टा पिरामिड शैली होगी लेकिन अगर आप समाचार फीचर लिख रहे हैं तो उसकी शैली कथात्मक हो सकती है। इसी तरह अगर आप लेख या टिप्पणी लिख रहे हों तो इसकी शुरुआत भी फीचर की तरह हो सकती है।जैसे आप किसी केस स्टडी से उसकी शुरुआत कर सकते हैं, उसे किसी खबर से जोड़कर न्यूज़पेग के जरिए भी शुरू किया जा सकता है।

प्रश्न 13. पत्रकारीय विशेषज्ञता से क्या आशय है?

पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ यह है कि व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि उस विषय या क्षेत्र में घटने वाली घटनाओं और मुद्दों की आप सहजता से व्याख्या कर सकें और पाठकों के लिए उनके मायने स्पष्ट कर सके।

प्रश्न 14. आप किसी भी विषय में पत्रकारीय विशेषज्ञता कैसे हासिल कर सकते हैं?

उत्तर - आप जिस भी विषय में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते हैं, उसमें आपकी वास्तविक रुचि होनी चाहिए। इसके साथ ही जिस विषय में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते हैं उस विषय की पढ़ाई उच्चतर माध्यमिक(+2) और स्नातक स्तर पर करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त अपनी रुचि के विषय में पत्रकारीय विशेषज्ञता हासिल करने के लिए उन विषयों से संबंधित पुस्तकें खूब पढ़नी चाहिए। उस विषय में जितनी संभव हो, संदर्भ सामग्री जुटाकर रखनी चाहिए। उस विषय का शब्दकोश और इनसाइक्लोपीडिया भी आपके पास होनी चाहिए। विशेषज्ञता एक तरह से अनुभव का पर्याय है। उस विषय में निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता ही आपको विशेषज्ञ बना सकती है।

पाठ-3 विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

जनसंचार के विभिन्न माध्यमों की तुलना

•जहाँ अखबार पढ़ने के लिए है, वहीं रेडियो सुनने के लिए और टी.वी. देखने के लिए तथा इंटरनेट पर पढ़ने, सुनने और देखने, तीनों की ही सुविधा है।

•जनसंचार के विभिन्न माध्यमों की अपनी कुछ खूबियाँ और खामियाँ हैं। जैसे इंद्रधनुष की छटा अलग-अलग रंगों के एक साथ आने से बनती है, वैसे ही जनसंचार के विभिन्न माध्यमों की असली शक्ति उनके परस्पर पूरक होने में है। जनसंचार के विभिन्न माध्यम आपस में प्रतिद्वंद्वी नहीं बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं।

•अखबार में समाचार पढ़ने और रुककर उस पर सोचने में एक अलग तरह की संतुष्टि मिलती है। जबकि टी.वी. पर घटनाओं की तस्वीरें देखकर उसकी जीवंतता का एहसास होता है। रेडियो पर खबरें सुनते हुए हम जितना उन्मुक्त होते हैं, उतना किसी और माध्यम में संभव नहीं है। इंटरनेट अंतरक्रियात्मकता (इंटरएक्टिविटी) और सूचनाओं के विशाल भंडार का अद्भुत माध्यम है, बस एक बटन दबाइए और सूचनाओं के अथाह संसार में पहुँच जाइए।

प्रिंट माध्यम

•प्रिंट यानी मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है। असल में आधुनिक युग की शुरुआत ही मुद्रण यानी छपाई के आविष्कार से हुई।

•हालाँकि मुद्रण की शुरुआत चीन से हुई लेकिन आज हम जिस छापेखाने को देखते हैं, इसके आविष्कार का श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है।

•भारत का पहला छापाखाना सन् 1556 में गोवा में खुला। इसे मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था।

•मुद्रित माध्यमों के तहत अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि हैं।

प्रिंट माध्यम की खूबियाँ

•मुद्रित माध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता या शक्ति यह है कि छापे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है। हम इन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं और उसे संदर्भ की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं।

•उसे हम आराम से और धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं। पढ़ते हुए उस पर सोच सकते हैं। अगर कोई बात समझ में नहीं आई तो उसे दोबारा यानी जितनी बार इच्छा करे, उतनी बार पढ़ सकते हैं।

•हम अपनी पसंद के अनुसार किसी भी पृष्ट और उस पर प्रकाशित किसी भी समाचार या रिपोर्ट से पढ़ने की शुरुआत कर सकते हैं।

•यह लिखित भाषा का विस्तार है। अत: इसमें लिखित भाषा की सभी विशेषताएँ शामिल हैं।

नोट:-

लिखित और मौखिक भाषा में सबसे बड़ा अंतर यह है कि लिखित भाषा अनुशासन की माँग करती है। लिखते समय भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शब्दों के उपयुक्त इस्तेमाल का ध्यान रखना पड़ता है। इसे प्रचलित भाषा में लिखना पड़ता है ताकि अधिक से अधिक लोग इसे समझ सकें। यह चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है। इस माध्यम में आप गंभीर और गूढ़ बातें लिख सकते हैं। क्योंकि पाठक के पास न सिर्फ उसे पढ़ने, समझने और सोचने का समय होता है बल्कि उसकी योग्यता भी होती है।

प्रिंट माध्यम की कमज़ोरियाँ या खामियाँ

•यह माध्यम केवल साक्षरों के लिए है। निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम किसी काम का नहीं है।

•मुद्रित माध्यम के लिए लिखने वालों को पाठकों के भाषा ज्ञान के साथ-साथ उनके शैक्षिक ज्ञान और योग्यता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है।

•मुद्रित माध्यम की एक और सीमा यह है कि वे रेडियो, टी॰वी॰ या इंटरनेट की तरह तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते। ये एक निश्चित अवधि पर प्रकाशित होते हैं।

•मुद्रित माध्यमों में लेखक को जगह का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

•अखबार या पत्रिका में समाचारों या रिपोर्ट को प्रकाशन के लिए स्वीकार करने की एक निश्चित समय-सीमा होती है, जिसे 'डेड लाइन' कहते हैं।

•मुद्रित माध्यमों के लेखकों और पत्रकारों को प्रकाशन की समय सीमा का पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

•लेखक या पत्रकार को इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि छपाई से पहले आलेख में मौजूद सभी गलतियों और अशुद्धियों को दूर कर लिया जाए क्योंकि एक बार प्रकाशन के बाद वह गलती या अशुद्धि वहीं चिपक जाएगी और उसे सुधारने के लिए अखबार या पत्रिका के अगले अंक का इंतजार करना पड़ेगा।

मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें

•लेखन में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान रखना जरूरी है। प्रचलित भाषा के प्रयोग पर जोर रहता है।

•समय-सीमा और आवंटित जगह के अनुशासन का पालन करना हर हाल में जरूरी है।

•लेखन और प्रकाशन के बीच गलतियों और अशुद्धियों को ठीक करना जरूरी होता है।

•लेखन में सहज प्रवाह के लिए तारतम्यता बनाए रखना जरूरी है।

रेडियो की खूबियाँ

•रेडियो श्रव्य माध्यम है, इसमें सब कुछ ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल है।

•रेडियो समाचार की संरचना अखबारों या टी.वी. की तरह उल्टा पिरामिड शैली पर आधारित होती है।

•इसे अनपढ़ भी सुन सकते हैं।

•दूरदराज़ के गावों में, जहाँ संचार और मनोरंजन के अन्य साधन नहीं होते, वहाँ रेडियो ही एकमात्र साधन है बाहरी दुनिया से जुड़ने का।

•अखबार और टेलीविज़न की तुलना में यह बहुत सस्ता भी है।

रेडियो की खामियाँ

•अखबार की तरह रेडियो समाचार बुलेटिन को भी कभी भी और कहीं से भी नहीं सुना जा सकता। प्रसारण के समय का इंतजार करना पड़ेगा और फिर शुरू से लेकर अंत तक बारी-बारी से एक के बाद दूसरा समाचार सुनना पड़ेगा।

•श्रोता बीच में इधर-उधर नहीं आ जा सकता और न ही उसके पास किसी गूढ़ शब्द या वाक्यांश के आने पर शब्दकोश का सहारा लेने का समय होता है। अगर वह शब्दकोश में अर्थ ढूँढ़ने लगेगा तो बुलेटिन आगे निकल जाएगा।

•यह टी॰ वी॰ की तुलना में कम आकर्षक है।

•रेडियो मूलत: एक रेखीय (लीनियर) माध्यम होता है और रेडियो समाचार का स्वरूप, ढाँचा और शैली इस आधार पर ही तय होता है।

•रेडियो में अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं होती है। समाचारों पर चिंतन-मनन या विचार-विश्लेषण का समय नहीं होता है।

रेडियो के लिए समाचार लेखन की बुनियादी बातें

•रेडियो समाचार की संरचना अखबारों या टी.वी. की तरह उल्टा पिरामिड शैली (इंवर्टेड पिरामिड) पर आधारित होती है।

•प्रसारण के लिए तैयार की जा रही समाचार कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए। कॉपी के दोनों ओर पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए।

•पंक्ति के आखिर में कोई शब्द विभाजित नहीं होना चाहिए और पृष्ठ के आखिर में कोई लाइन अधूरी नहीं होनी चाहिए।

•समाचार कॉपी में जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर (एब्रीवियेशंस), अंक आदि नहीं लिखने चाहिए जिन्हें पढ़ने में जबान लड़खड़ाने लगे।

•अंकों को लिखने के मामले में सावधानी रखनी चाहिए। जैसे- एक से दस तक के अंकों को शब्दों में और 11 से 999 तक अंकों में लिखा जाना चाहिए। तीन अंको से अधिक की संख्या को शब्दों में लिखा जाना चाहिए।

•अखबारों में % और $ जैसे संकेत चिह्नों से काम चल जाता है लेकिन रेडियो में यह पूरी तरह से वर्जित है यानी प्रतिशत और डॉलर लिखना बेहतर होगा।

•जहाँ भी संभव और उपयुक्त हो, दशमलव को उसके नजदीकी पूर्णांक में लिखना बेहतर होता है। मुद्रास्फीति के आँकड़े नजदीकी पूर्णांक में नहीं बल्कि दशमलव में ही लिखे जाने चाहिए।

•रेडियो समाचार में अत्यधिक आँकड़ों और संख्या का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि श्रोताओं के लिए उन्हें समझ पाना काफी कठिन होता है। आँकड़े तुलनात्मक हों तो बेहतर होगा।

•रेडियो में डेड लाइन अलग से नहीं बल्कि समाचार से ही गुँथी होती है।

•तिथियों को उसी तरह लिखना चाहिए जैसे हम बोलचाल में इस्तेमाल करते हैं- 15 अगस्त उन्नीस सौ पचासी न कि अगस्त 15, 1985 ।

•बेहतर होगा कि संक्षिप्ताक्षरों के इस्तेमाल / प्रयोग से बचा जाए और अगर जरूरी हो तो समाचार के शुरू में पहले उसे पूरा दिया जाए, फिर संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग किया जाए। संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग के दौरान यह देखा जाना चाहिए कि वह कितना लोकप्रिय है।

टेलीविज़न की ख़ूबियाँ

•यह श्रव्य-दृश्य अर्थात सुनने और देखने का माध्यम है। यह आकर्षक माध्यम भी है।

•समाचार अधिक सटीक और प्रामाणिक होते हैं। इसमें ब्रेकिंग न्यूज की व्यवस्था होती है।

टेलीविज़न की खामियाँ

•कई बार छोटी बात को बहुत उछाल दिया जाता है।

•व्यावसायिकता के आगमन से निष्पक्षता प्रभावित होने लगी है।

•किसी की छबि बिगाड़ सकता है।

टी.वी. खबरों के विभिन्न चरण

•फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज- बड़ी खबरों को तत्काल दर्शकों तक पहुँचना।

•ड्राई एंकर- रिपोर्टरों से मिली जानकारियों को एंकर द्वारा सीधे बताना।

•फ़ोन-इन- एंकर द्वारा रिपोर्टर से फ़ोन पर बात करके सूचनाएँ देना।

•एंकर-विजुअल- खबरों के साथ उससे संबंधित दृश्य भी दिखना।

•एंकर-बाइट- खबर की पुष्टि के लिए घटना के प्रत्यक्षदर्शियों या उससे संबंधित व्यक्तियों का कथन सुनाना/दिखना।

•लाइव- किसी घटना का घटना-स्थल से सीधा प्रसारण करना।

•एंकर-पैकेज- संबंधित घटना के दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाइट और ग्राफिक के जरिए जरूरी सूचनाएँ आदि होती हैं।

•टी.वी. में दृश्य और शब्द- यानी विजुअल और वॉयस ओवर (वीओ) के साथ दो तरह की आवाजें और होती हैं। एक तो वे कथन या बाइट जो खबर बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं और दूसरी वे प्राकृतिक आवाजें जो दृश्य के साथ-साथ चली आती हैं- जैसे चिड़ियों का चहचहाना, गाड़ियों के गुजरने की आवाज आदि। टी.वी. में ऐसी ध्वनियों को नेट या नेट साउंड यानी वो प्राकृतिक आवाजें जो शूट करते हुए खुद-ब खुद चली आती हैं।

•रेडियो और टी.वी. में निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए- निम्नलिखित, उपरोक्त, अधोहस्ताक्षरित, क्रमांक, द्वारा, तथा, एवं, अथवा, व, किंतु, परंतु, यथा आदि। (उदाहरण- 'पुलिस द्वारा चोरी करते हुए दो व्यक्तियों को पकड़ लिया गया।' इसके बजाय 'पुलिस ने दो व्यक्तियों को चोरी करते हुए पकड़ लिया।' ज्यादा स्पष्ट है।

•इसी तरह तथा, एवं, अथवा, व. किंतु, परंतु यथा आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए और उनकी जगह और, या, लेकिन आदि का इस्तेमाल करना चाहिए। भाषा को साफ रखने के लिए- वाक्य छोटे हों और एक वाक्य में एक ही बात कहने का धीरज होना चाहिए।

इंटरनेट (अंतरजाल) से संबंधित तथ्य

•इंटरनेट एक साधन है, जिसे मानव सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान–प्रदान के लिये प्रयोग करता है। विज्ञान के इस नवीन आविष्कार का आरम्भ 1960 ई. में हुआ। भारत में इंटरनेट प्रयोग करने वालों की संख्या करोड़ों में है।

•यह एक अंतरक्रियात्मक माध्यम है यानी आप इसमें मूक दर्शक नहीं हैं। आप सवाल-जवाब, बहस आदि में भाग ले सकते हैं।

•इसमें सारे माध्यमों (प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा और पुस्तकालय आदि) का समागम है। नई वेब भाषा को एच॰टी॰एम॰एल॰ (हाइपर टेक्स्ट मार्क्डअप लैंगवेज़) कहते हैं।

•विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है। पहला दौर 1982 से 1992 तक और दूसरा दौर 1993 से 2001 तक रहा।

•सच्चे अर्थों में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरुआत सन् 1983 से 2002 के बीच हुई। भारत के लिए पहला दौर 1993 से शुरू माना जा सकता है, जबकि दूसरा दौर 2003 से शुरू हुआ।

•इंटरनेट पत्रकारिता को आनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता भी कहते हैं।

•बच्चों के मन पर बुरा असर डालने वाले लाखों अश्लील पन्नों का होना तथा इसके दुरुपयोग किए जाने का भय इसकी बुराई है।

•भारत में सच्चे अर्थों में वेब पत्रकारिता करने वाली साइटें हैं- 'रीडिफ़ डॉटकॉम', 'इंडिया इंफोलाइन', 'हिन्दू', 'सीफ़ी', 'तहलका डाटकाम' आदि।

•भारत की पहली साइट जो गंभीरता के साथ इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है- 'रीडिफ़ डाटकाम'।

•वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डाटकाम' को जाता है।

•पत्रकारिता के लिहाज से हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ साइट बी॰बी॰सी॰ की है।

•'इंडिया टुडे' जैसी साइटें भुगतान के बाद ही देखी जा सकती हैं।

•हिन्दी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। इंदौर के 'नयी दुनिया समूह' से शुरू हुआ यह पोर्टल हिन्दी का संपूर्ण पोर्टल है।

•'प्रभासाक्षी' नाम से शुरू हुआ अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर उपलब्ध है।

•हिंदी के अखबारों ने भी विश्वजाल में अपनी उपस्थिति दर्ज करानी शुरू की। 'जागरण', 'अमर उजाला', नयी दुनिया', 'हिंदुस्तान', 'भास्कर', 'राजस्थान पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर' व राष्ट्रीय सहारा' के वेब संस्करण शुरू हुए।

•हिंदी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशव काल में ही है। सबसे बड़ी समस्या हिंदी फ़ौंट की है। डायनमिक फ़ौंट की अनुपलब्धता के कारण हिंदी की ज्यादातर साइटें खुलती ही नहीं हैं। जब तक हिंदी की-बोर्ड का मानकीकरण नहीं होगा, तब तक यह समस्या बनी रहेगी।

इंटरनेट की खूबियाँ

•चौबीसों घंटे समाचार एवं सूचनाएँ उपलब्ध रहती हैं।

•आज प्रायः पूरे के पूरे अखबार इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। यह बहुत तेज माध्यम है।

•इसमें सारे माध्यमों का समागम है। इसमें प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविज़न, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के सारे गुण मौजूद हैं।

•यह एक अंतरक्रियात्मक माध्यम है यानी हम इसमें मूक दर्शक नहीं हैं। हम सवाल-जवाब, बहस-मुबाहिसों में भाग लेते हैं, हम चैट कर सकते हैं।

इंटरनेट की खामियाँ

•इसमें लाखों अश्लील पन्ने भर दिए गए हैं, जिसका बच्चों के कोमल मन पर बुरा असर पड़ सकता है।

•इसका दुरुपयोग किया जा सकता है।

•यह बहुत महँगा साधन है।

इंटरनेट पत्रकारिता- इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता है। इसे इंटरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, साइवर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता के नाम से भी जाना जाता है।

पाठ-4 पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

•अखबार पाठकों को सूचना देने, जागरूक और शिक्षित बनाने और उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। लोकत्रांतिक समाजों में वे एक पहरेदार, शिक्षक और जनमत निर्माता के तौर पर बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

•अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

पत्रकार के प्रकार

१)पूर्णकालिक पत्रकार- किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतन भोगी कर्मचारी होता है।

२)अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिगर)- किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार है।

३)फ्रीलान्सर (स्वतंत्र) पत्रकार- इसका संबंध किसी खास अखबार से नहीं होता है बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है।

पत्रकार की वैसाखियाँ

- सच्चाई- तथ्यों की जाँच-परख व पुष्टि करनी चाहिए, बयानों को तोड़ना-मरोड़ना नहीं चाहिए, अफवाहों से बचना चाहिए।
- संतुलन- तथ्यों, बयानों और आँकड़ों के इस्तेमाल में संतुलन बनाए रखना तथा विवादास्पद मुद्दों में दोनों पक्षों की बात सामने रखना चाहिए।
- निष्पक्षता- किसी पत्रकार के लिए 'पक्षपात' अपशब्द की तरह है। पत्रकार को समाचार में निजी राय व्यक्त करने से बचना चाहिए।
- स्पष्टता- समाचार में कोई भ्रम नहीं पैदा होना चाहिए। इसके लिए अनिवार्य है कि समाचार में वाक्य छोटे और सीधे रहें।

पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक-सृजनात्मक लेखन में अंतर

•पत्रकारीय लेखन का संबंध और दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों से है। पत्रकारीय लेखन का संबंध तथ्यों से है न कि कल्पना से। (पत्रकारिता जल्दी में लिखा गया साहित्य है)

•पत्रकारीय लेखन अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और अपने पाठकों की जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है। जबकि साहित्यिक रचनात्मक लेखन में लेखक को काफी छूट होती है।

•पत्रकारीय लेखन में अलंकारिक-संस्कृतनिष्ठ भाषा-शैली के बजाय आम बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल किया जाता है।

समाचार लेखन

•पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-पहचाना रूप समाचार लेखन है। आमतौर पर अखबारों में समाचार पूर्णकालिक और अंशकालिक पत्रकार लिखते हैं, जिन्हें संवाददाता या रिपोर्टर भी कहते हैं।

•अखबारों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक खास शैली में लिखे जाते हैं। समाचारों में किसी भी घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी को सबसे पहले पैराग्राफ में लिखा जाता है। उसके बाद के पैराग्राफ में उससे कम महत्त्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी जाती है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक समाचार खत्म नहीं हो जाता।

समाचार लेखन और छह (6) ककार

•किसी समाचार को लिखते हुए मुख्यत: छह सवालों के जवाब देने की कोशिश की जाती है- क्या हुआ ?, किसके साथ हुआ ?, कहाँ हुआ ?, कब हुआ ?, कैसे और क्यों हुआ ?

•इस- क्या, किसके (या कौन), कहाँ, कब, क्यों और कैसे- को छह ककारों के रूप में भी जाना जाता है।

समाचार लेखन की शैली

•समाचार लेखन की शैली को उल्टा पिरामिड शैली (इंवर्टेड पिरामिड स्टाइल) के नाम से जाना जाता है। यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। उल्टा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता है।

•यह शैली कहानी या कथा लेखन की शैली के ठीक उलटी है, जिसमें क्लाइमेक्स बिलकुल आखिर में आता है।

•उल्टा पिरामिड शैली इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना (यानी क्लाइमेक्स) पिरामिड के सबसे निचले हिस्से में नहीं होती बल्कि इस शैली में पिरामिड को उलट दिया जाता है।

उल्टा पिरामिड शैली- उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा जाता है। इस शैली में किसी घटना, विचार या समस्या का ब्यौरा कालक्रमानुसार के बजाय सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है।

•इस शैली का प्रयोग 19वीं सदी के मध्य से ही शुरू हो गया था लेकिन इसका विकास अमेरिका में गृहयुद्ध के दौरान हुआ। उस समय संवाददाताओं को अपनी खबरें टेलीग्राम से भेजनी पड़ती थीं किंतु टेलीग्राम के सेवाएँ महँगी, अनियमित और दुर्लभ थीं। अंत: खबरें कहानी की तरह विस्तार से लिखने की बजाय संक्षेप में देनी होती थीं।

•उल्टा पिरामिड शैली के तहत समाचार को तीन हिस्सों में विभाजित किया जाता है- इंट्रो (मुखड़ा), बाडी और समापन।

•समाचार के इंट्रो को हिन्दी में मुखड़ा कहा जाता है। इसमें खबर के तत्त्व को दो या तीन पंक्तियों में बताया जाता है तथा बाडी में समाचार के विस्तृत व्यौरे को घटते महत्त्वक्रम में लिखा जाता है।

•समाचार के मुखड़े (इंट्रो) यानी पहले पैराग्राफ या शुरुआती दो तीन पंक्तियों में आमतौर पर तीन या चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार हैं- क्या, कौन, कब और कहाँ। समाचार की बाडी में और समापन के पहले बाकी दो ककारों- कैसे और क्यों का जवाब दिया जाता है। इस तरह छह ककारों के आधार पर समाचार तैयार होता है।

•इनमें से पहले चार ककार- क्या, कौन, कब और कहाँ- सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि बाकी दो ककारों- कैसे और क्यों- में विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है।

"फीचर क्या है?"

•रोचक विषयों की विस्तृत एवं मनोरम प्रस्तुति ही फीचर है।

•फीचर में किसी व्यक्ति, विषय, घटना या समाचार का खुला वर्णन होता है।

•'क्या हुआ', 'कैसे हुआ' और 'क्यों हुआ' के साथ जब घटना सुदूर अतीत और भविष्य से जुड़ जाती है तो लेख पूर्णता को प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे लेखों को फीचर कहते हैं।

•समकालीन घटना तथा किसी क्षेत्र विशेष की विशिष्ट जानकारी के सचित्र तथा मोहक विवरण को फीचर कहा जाता है।

•सरसता व मनोरंजन इसकी पहचान है।

•मानवीय रुचि के विषयों के साथ सीमित समाचार जब चटपटा लेख बन जाता है, तो वह फीचर की संज्ञा ले लेता है।

फीचर लेखन-शैली

•फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।

•इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना है।

•फीचर लेखन का कोई तय ढाँचा या फार्मूला नहीं है।

•फीचर समाचार की भाँति तत्कालीन घटनाक्रम से अवगत नहीं कराता है।

•हल्के-फुल्के विषयों से लेकर गंभीर विषयों और मुद्दों पर भी फीचर लिखा जाता है।

•फीचर लेखन की शैली समाचार लेखन से सर्वथा भिन्न होती है।

•फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है।

•फीचर को रोचक बनाने के लिए फीचर के साथ फोटो, रेखांकन और ग्राफिक्स का प्रयोग किया जाता है।

•प्रत्येक अनुच्छेद व वाक्य में कथन का तारतम्य होना चाहिए।

•मुहावरों, लोकोक्तियों व सूक्तियों का सही व सार्थक प्रयोग होना चाहिए।

•फीचर लेखन की शैली काफी हद तक कथात्मक होती है।

फीचर लेखन और समाचार लेखन में अंतर

•समाचार में उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग किया जाता है जबकि फीचर में कथात्मक शैली होती है।

•फीचर समाचार की तरह पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत नहीं कराता।

•फीचर में समाचार की तरह शब्दों की कोई अधिकतम सीमा नहीं होती। फीचर आमतौर पर समाचार से बड़े होते हैं।

•फीचर में भावनाओं और विचारों की अधिकता होती है जबकि समाचार में वस्तुनिष्ठता तथा शुद्धता पर ज़ोर दिया जाता है।

•फीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है जबकि समाचार में नहीं।

•फीचर लेखन की भाषा सरल रूपात्मक एवं आकर्षक और मन को छूने वाली होती है जबकि समाचार की भाषा में सपाट बयानी होती है।

•फीचर का विषय कुछ भी हो सकता है समाचार का नहीं।

•फीचर तथ्यों, आँकड़ों की बजाय- 'आगे क्या होगा' के चिंतन और कल्पना पर आधारित होते हैं।

फीचर की विशेषता/गुण

•फीचर सच्ची घटना पर लिखा जाता है जो पाठक के सामने उस घटना का चित्र खींचकर रख देता है।

•फीचर लेखन का अतीत, वर्तमान और भविष्य से संबंध हो सकता है।

•इसकी भाषा सरल, आसानी से समझ में आने वाली तथा रोचक होती है।

•फीचर में हास्य, कल्पना और चिंतन का पुट होता है।

•फीचर सारगर्भित होते हुए भी बोझिल नहीं होता है।

•फीचर किसी बात को थोड़े से शब्दों में रोचकता और प्रभावशाली ढंग से कहता है।

•फीचर का प्रारम्भ सरस, संक्षिप्त, आकर्षक और उत्सुकता पैदा करने वाला होता है।

• फीचर लेखन की राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक प्रासंगिकता अनिवार्य है।

•फीचर से जिज्ञासा, सहानुभूति, आलोचना, संवेदनशीलता आदि भाव उद्दीप्त होते हैं।

फीचर के प्रमुख प्रकार

1) समाचार बैकग्राउंडर 2) खोजपरक फीचर 3) साक्षात्कार फीचर 4) जीवनशैली फीचर 5) व्यक्तिचित्र फीचर 6) यात्रा फीचर 7) विशेष रुचि के फीचर आदि।

विशेष रिपोर्ट कैसे लिखें?

•अखबारों और पत्रिकाओं में सामान्य समाचारों के अलावा गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर विशेष रिपोर्टें भी प्रकाशित होती हैं। ऐसी रिपोर्टों को तैयार करने के लिए किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन की जाती है। उससे संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्यों को इकट्ठा किया जाता है। तथ्यों के विश्लेषण के जरिये उसके नतीजे, प्रभाव और कारणों को स्पष्ट किया जाता है।

•इसे उल्टा पिरामिड शैली या फीचर शैली या दोनों शैलियों को मिलाकर लिखा जाता है। भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार

•खोजी (इंवेस्टिगेटिव) रिपोर्ट- खोजी रिपोर्ट में रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के जरिए ऐसी सूचनाओं या तथ्यों को सामने लाता है जो सार्वजनिक तौर पर पहले से उपलब्ध नहीं थे। इसका इस्तेमाल आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितता और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

•विश्लेषणात्मक रिपोर्ट- इसमें किसी घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों के विश्लेषण एवं व्याख्या पर जोर दिया जाता है।

•इनडेप्थ रिपोर्ट- इन डेप्थ रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है और उसके आधार पर किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।

•विवरणात्मक रिपोर्ट- इसमें किसी घटना या समस्या का विस्तृत और बारीक विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

विचारपरक लेखन

•अखबारों में समाचार और फीचर के अलावा विचारपरक सामग्री का भी प्रकाशन होता है। अखबारों में संपादकीय पृष्ट पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय अग्रलेख, लेख और टिप्पणियाँ विचारपरक पत्रकारीय लेखन की श्रेणी में आते हैं। इसके अलावा विभिन्न विषय के विशेषज्ञों या वरिष्ठ पत्रकारों के स्तंभ (कॉलम) भी विचारपरक लेखन के तहत आते हैं। कुछ अखबारों में संपादकीय पृष्ट के सामने ऑप-एड पृष्ठ पर भी विचारपरक लेख, टिप्पणियाँ और स्तंभ प्रकाशित होते हैं।

संपादकीय लेखन

•संपादकीय पृष्ट पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिये अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं।

•संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष का विचार नहीं होता इसलिए उसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता।

•संपादकीय लिखने का दायित्व उस अखबार में काम करने वाले संपादक और उनके सहयोगियों पर होता है। आमतौर पर अखबारों में सहायक संपादक, संपादकीय लिखते हैं। कोई बाहर का लेखक या पत्रकार संपादकीय नहीं लिख सकता है।

•हिंदी के अखबारों में कुछ में तीन, कुछ में दो और कुछ में केवल एक संपादकीय प्रकाशित होती है। संपादकीय का उदाहरण प्रस्तुत है-

स्तंभ लेखन

•स्तंभ लेखन विचार परक लेखन का एक प्रमुख रूप है। प्रसिद्ध लेखकों द्वारा लिखे गये लेख अखबार में नियमित रूप से निश्चित स्तंभ में छापे जाते है। स्तंभ में लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं।

संपादक के नाम पत्र

•संपादक के नाम पत्र एक स्थायी स्तम्भ होता है यह पाठको का अपना स्तंभ होता है**I** इस स्तम्भ के जरिये अखबार के पाठक न सिर्फ विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते है बल्कि जन समस्याओं को भी उठाते है**I** एक तरफ से यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिम्बित करता है**I**

लेख

•सभी अखबार संपादकीय पृष्ठ पर समसामयिक मुद्दों पर वरिष्ठ पत्रकारों और उन विषयों के विशेषज्ञों के लेख प्रकाशित करते हैं**I** इन लेखों में किसी विषय या मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की जाती है**I** लेख विशेष रिपोर्ट और फ़ीचर से इस मामले में अलग है कि उसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है। लेकिन ये विचार तथ्यों और सूचनाओं पर आधारित होते हैं।

•लेख लिखने के लिए विषय से जुड़े सभी तथ्यों और सूचनाओं के अलावा पृष्ठभूमि सामग्री भी जुटानी पड़ती है।

•लेख की कोई एक निश्चित लेखन शैली नहीं होती और हर लेखक की अपनी शैली होती है। लेख का भी एक प्रारंभ, मध्य और अंत होता है।

•लेख की शुरुआत में अगर उस विषय के सबसे ताजा प्रसंग या घटनाक्रम का विवरण दिया जाए और फिर उससे जुड़े अन्य तथ्यों को सामने लाया जाए, तो लेख का प्रारंभ आकर्षक बन सकता है। इसके बाद तथ्यों की मदद से विश्लेषण करते हुए आखिर में अपना निष्कर्ष या मत प्रकट कर सकते हैं।

•साक्षात्कार/इंटरव्यू- समाचार माध्यमों में साक्षात्कार का बहुत महत्व है। पत्रकार एक तरह से साक्षात्कार के जरिये ही समाचार, फीचर, विशेष रिपोर्ट और अन्य कई तरह के पत्रकारीय लेखन के लिए कच्चा माल इक्ठ्ठा करते हैं। पत्रकारीय साक्षात्कार और सामान्य बातचीत में यह फर्क होता है कि साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति के तथ्य, उसकी राय और भावनाएँ जानने के लिए सवाल पूछता है।

•कार्टून कोना- कार्टून कोना लगभग हर समाचार पत्र में होता है और उनके माध्यम से की गयी सटीक टिप्पणियाँ पाठक को छूती है एक तरह से कार्टून पहले पन्ने पर प्रकाशित होने वाली हस्ताक्षरित सम्पादकीय है**I** इनकी चुटीली टिप्पणियाँ कई बार कड़े और धारदार सम्पादकीय से भी अधिक प्रभावी होती है**I**

पाठ-5 विशेष लेखन- स्वरूप और प्रकार

•विशेष लेखन से तात्पर्य है- किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन।

•विशेष लेखन के तहत रिपोर्टिंग के अलावा उस विषय या क्षेत्र विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ लेखन भी आता है।

•इस तरह का विशेष लेखन समाचार-पत्र या पत्रिका में काम करने वाले पत्रकार से लेकर फ्रीलान्सर पत्रकार या लेखक तक सभी कर सकते हैं। विशेष लेखन के लिए पत्रकार या स्वतंत्र लेखक को उस विषय में माहिर होना चाहिए।

•विशेष लेखन के लिए अलग 'डेस्क' होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है। डेस्कों पर काम करने वाले उपसंपादकों और संपाददाताओं से अपेक्षा की जाती है कि संबंधित विषय या क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता होगी।

•विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग ही नहीं है। यह बीट रिपोर्टिंग से आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है। इसमें न सिर्फ विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा-शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए।

•खबरें कई तरह की होती हैं- राजनीतिक, आर्थिक, अपराध, खेल, फिल्म, कृषि, कानून, विज्ञान या किसी भी और विषय से जुड़ी हुई।

•संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।

•एक संवाददाताओं की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करना है। अखबार की ओर से वह इनकी रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह भी है।

विशेष लेखन की भाषा-शैली

➢ विशेष लेखन की भाषा और शैली कई मामलों में सामान्य लेखन से अलग है। सरल और समझ में आने वाली भाषा का नियम विशेष लेखन पर भी लागू होता है।

➢ हर क्षेत्र विशेष की अपनी विशेष तकनीकी शब्दावली होती है जो उस विषय से संबंधित लेखन में आती है।

➢ विशेष लेखन का संबंध उन विषयों और क्षेत्रों से होता है जो तकनीकी रूप से जटिल माने जाते हैं।

➢ विशेष तकनीकी शब्दावली से परिचित होने के बावजूद उससे पाठकों को भी इस तरह परिचित कराएँ कि उसे समझने में कोई दिक्कत न हो। विशेष लेखन का पाठक वर्ग अलग होता है जो उस विषय या क्षेत्र में ज्यादा विस्तार और गहराई से जानना चाहता है।

➢ विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। लेकिन अगर आप बीट से जुड़ा कोई समाचार लिख रहे हैं तो उसकी शैली की उल्टा पिरामिड शैली ही होगी। लेकिन अगर आप समाचार फीचर लिख रहे हैं तो उसकी शैली कथात्मक हो सकती है।

➢ यदि लेख या टिप्पणी लिख रहे हों तो इसकी शुरुआत भी फीचर की तरह हो सकती है। जैसे किसी केस स्टडी से उसकी शुरुआत कर सकते हैं, उसे किसी खबर से जोड़कर यानी न्यूजपेग के जरिये भी शुरू किया जा सकता है।

➢ विशेष लेखन के कई क्षेत्र हैं- अर्थ-व्यापार, खेल, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, फिल्म-मनोरंजन, अपराध, सामाजिक मुद्दे, कानून आदि।

➢ आमतौर पर रोजमर्रा की रिपोर्टिंग और बीट को छोड़कर वैसे सभी क्षेत्र, विशेष लेखन के दायरे में आते हैं जिनमें अलग से विशेषज्ञता की जरूरत होती है।

विशेष तकनीकी शब्दावली

❖ कारोबारऔरव्यापारसंबंधी- ब्याजदर, तेजड़िए, मंदड़िए, व्यापार घाटा, बिकवाली, मुद्रास्फीति, राजकोषीय घाटा, राजस्व घाटा, वार्षिक योजना, निवेश, विदेशी संस्थागत निवेशक, एफ.डी.आई., आवक, निवेश, आयात, निर्यात, सोने में भारी उछाल, चाँदी लुढ़की, सेंसेक्स आसमान पर, आवक बढ़ने से लाल मिर्च की कड़वाहट घटी, शेयर बाजार ने सारे रिकार्ड तोड़े आदि।

➢ आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में काफ़ी जटिल होती है क्योंकि आप लोगों को इसकी शब्दावली का पता नहीं होता है। कारोबार और अर्थ जगत से जुड़ी रोजमर्रा की खबरें उल्टा पिरामिड शैली में लिखी जाती हैं।

❖ खेलसंबंधी- भारतनेपाकिस्तानकोचारविकेटसेपीटा, चैम्पियंस कप में मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके आदि।

➢ पत्र-पत्रिकाओं में खेल के बारे में लिखने वालों के लिए जरूरी है कि वे खेल की तकनीक, उसके नियमों, उसकी बारीकियों और उससे जुड़ी तमाम बातों से भलीभाँति परिचित हों।

➢ खेल की खबर या रिपोर्ट उल्टा पिरामिड शैली में शुरू होती है लेकिन दूसरे पैराग्राफ़ से वह कथात्मक यानी घटनानुक्रम शैली में चली जाती है।

❖ पर्यावरणऔरमौसमसंबंधी- पश्चिमीहवाएँ, आर्द्रता, ग्लोबल वार्मिंग, तूफान का केंद्र या रुख, टाक्सिक कचरा आदि।

विशेषज्ञता

•पत्रकारीय विशेषज्ञता का अर्थ यह है कि व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि उस विषय या क्षेत्र में घटने वाली घटनाओं और मुद्दों की आप सहजता से व्याख्या कर सकें और पाठकों के लिए उनके मायने स्पष्ट कर सकें।

•आजकल पत्रकारिता में 'जैक ऑफ ऑल ट्रेड्स, बट मास्टर ऑफ नन' (सभी विषयों के जानकार लेकिन किसी खास विषय में विशेषज्ञता नहीं) की बजाय 'मास्टर ऑफ वन' (यानी किसी एक विषय में विशेषज्ञता जरूरी है) की माँग की जा रही है।

कैसे हासिल करें विशेषज्ञता?

1) आप जिस विषय में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते हैं, उसमें आपकी वास्तविक रुचि होनी चाहिए।
2) बेहतर होगा कि आप उच्चतर माध्यमिक (+2) और स्नातक स्तर पर उसी या उससे जुड़े विषय में पढ़ाई करें।
3) इसके अलावा अपनी रुचि के विषय में पत्रकारीय विशेषज्ञता हासिल करने के लिए आपको उन विषयों से संबंधित पुस्तकें खूब पढ़नी चाहिए।
4) विशेष लेखन के क्षेत्र में खुद को अपडेट रखने के लिए उस विषय से जुड़ी खबरों और रिपोर्टों की कटिंग करके फ़ाइल बनानी चाहिए। साथ ही उस विषय के प्रोफ़ेशनल विशेषज्ञों के लेख और विश्लेषणों की कटिंग सहेजकर रखनी चाहिए।
5) जिस विषय में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते है, उससे जुड़े सरकारी और गैरसरकारी संगठनों और संस्थानों की सूची, उनकी वेबसाइट का पता, टेलीफ़ोन नंबर और उसमें काम करने वाले विशेषज्ञों के नाम और फ़ोन नंबर अपनी डायरी में जरूर रखिए। दरअसल, एक पत्रकार की विशेषज्ञता कुछ हद तक उसके अपने सूत्रों और स्रोतों पर निर्भर करती है।
6) विशेषज्ञता एक दिन में नहीं आती है। विशेषज्ञता एक तरह से अनुभव का पर्याय है। उस विषय में निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता ही आपको विशेषज्ञ बना सकती है।
7) विशेष लेखन के इच्छुक पत्रकार या स्वतंत्र लेखक को उस विषय में माहिर होना चाहिए। मतलब यह है कि किसी भी क्षेत्र पर विशेष लेखन करने के लिए जरूरी है कि उस क्षेत्र के बारे में आपको ज्यादा से ज्यादा पता हो, उसकी ताजा से ताजा सूचना आपके पास हो, आप उसके बारे में लगातार पढ़ते हों, जानकारियाँ और तथ्य इकट्ठे करते हों और उस क्षेत्र से जुड़े लोगों से लगातार मिलते रहते हों।
8) इसी तरह अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में किसी खास विषय पर लेख या स्तंभ लिखने वाले कई बार पेशेवर पत्रकार न होकर उस विषय के जानकार या विशेषज्ञ होते हैं।

सूचनाओं के स्रोत

•मंत्रालय के सूत्र

•प्रेस कांफ्रेंस और विज्ञप्तियाँ
•साक्षात्कार
•सर्वे और जाँच समितियों की रिपोर्ट्स
•उस क्षेत्र में सक्रिय संस्थाएँ और व्यक्ति
•संबंधित विभागों और संगठनों से जुड़े व्यक्ति
•इंटरनेट और दूसरे संचार माध्यम
•स्थायी अध्ययन प्रक्रिया

बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर

बीट रिपोर्टिंग	विशेषीकृत रिपोर्टिंग
1) अपनी बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और दिलचस्पी का होना पर्याप्त है।	1) विशेषीकृत रिपोर्टिंग में न सिर्फ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए।
2) एक बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती है।	2) इसमें सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण कर उसका अर्थ स्पष्ट किया जाता है।
3) बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं।	3) विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता का दर्जा दिया जाता हैं।
4) उदाहरण-अगर शेयर बाजार में भारी गिरावट आती है तो उस बीट पर रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता उसकी एक तथ्यात्मक रिपोर्ट तैयार करेगा जिसमें सभी जरूरी सूचनाएँ और तथ्य शामिल होंगे।	4) उदाहरण-शेयर बाजार में आई भारी गिरावट पर विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाला संवाददाता इसका विश्लेषण कर यह स्पष्ट करने की कोशिश करेगा कि बाजार में गिरावट क्यों और किन कारणों से आई और इसका आम निवेशकों पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

काव्य खंड पर आधारित 60 / 40 शब्दों में लिखे जाने वाले प्रश्नोत्तर , पाठ की मुख्य बातें एवं प्रश्न- कोष

- काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) – 3 अंक x 2= 6
- काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) – 2 अंक x 2= 4

आत्मपरिचय

हरिवंश राय बच्चन

-मुख्य बातें

कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित कविता ' आत्मपरिचय पाठ गीत संग्रह 'बुद्ध और नाचघर' से लिया गया है | इस पाठ के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से भी अधिक कठिन है |व्यक्ति का समाज से अत्यंत ही घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, इसलिए स्वयं को समाज से बिल्कुल अलग रखना संभव भी नहीं है | इस दुनिया में रहकर भले ही कितना ही कष्ट क्यों न हो , हम इस संसार से कटकर रह नहीं सकते हैं | इसके पीछे कारण यह भी है कि हमारा अस्तित्व और हमारी पहचान दुनिया से ही है | इस पाठ में कवि अपना परिचय देते हुए बताने का प्रयास किया है कि दुनिया से उनका सम्बन्ध दुविधापूर्ण और द्वंद्वात्मक है | दुनिया से उनका संबंध प्रीतिकलह का है | कवि कहता है कि वह इस दुनिया से प्यार भी करता है और इसे वह अपना भार भी समझता है | वे अपने जीवन में दो विरोधी बातों में सामंजस्य स्थापित करते हुए चलते हैं , जैसे उन्मादों में अवसाद , रोदन में राग , शीतल वाणी में आग अदि | कवि अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है | कवि उन व्यक्तियों को नादान कहता है जो धन और वैभव के पीछे भागते है | यह संसार उन्हीं लोगों को पूछता है जो उसकी इच्छनुसार चलते हैं | कवि अपनी वाणी के जारी ऐसी दुनिया के प्रति आक्रोश प्रकट करता है |

प्रश्न -1 'आत्म-परिचय' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - श्री हरिवंश राय बच्चन' द्वारा रचित कविता 'आत्म-परिचय' 'बुद्ध और नाचघर' संग्रह से संकलित है जिसमें कवि ने यह चित्रण किया है कि मनुष्य द्वारा अपने को जानना या आत्मबोध दुनिया को जानने से अत्यंत कठिन है। समाज से मनुष्य का नाता खट्टा-मीठा होता है। इस संसार से निरपेक्ष(बिल्कुलअलग) रहना असंभव है। मनुष्य चाहकर भी जग से विमुख नहीं हो सकता। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अतः मनुष्य का इस जग से अटूट संबंध है।

संसार अपने व्यंग्य-बाणों तथा शासन-प्रशासन से उसे चाहे कितने ही कष्ट एवं पीड़ाएँ क्यों न दे, पर मनुष्य इस जगह से अलग नहीं रह सकता। ये दुनिया ही उसकी पहचान है। जहाँ पर वह अपना परिचय देते हुए इस संसार से द्विविधात्मक एवं द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता हुआ जीवन जीता है। इस दुनिया में मनुष्य का जीवन द्वंद्व एवं विरुधों का सामंजस्य है। सुख-दुख का समन्वय है।

प्रश्न - 2 कविता एक ओर जग-जीवन का मार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ'-विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय हैं?

उत्तर - जग-जीवन का भार लेने से कवि का अभिप्राय यह है कि वह सांसारिक दायित्वों का निर्वाह कर रहा है। आम व्यक्ति से वह अलग नहीं है तथा सुख-दुख, हानि-लाभ आदि को झेलते हुए अपनी यात्रा पूरी कर रहा है। दूसरी तरफ कवि कहता है कि वह कभी संसार की तरफ ध्यान नहीं देता। यहाँ कवि सांसारिक दायित्वों की अनदेखी की बात नहीं करता। वह संसार की निरर्थक बातों पर ध्यान न देकर केवल प्रेम पर केंद्रित रहता है। आम व्यक्ति सामाजिक बाधाओं से डरकर कुछ नहीं कर पाता। कवि सांसारिक बाधाओं की परवाह नहीं करता। अत: इन दोनों पंक्तियों के अपने निहितार्थ हैं। ये एक-दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं।

प्रश्न -3 जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं-कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर - नादान यानी मूर्ख व्यक्ति सांसारिक मायाजाल में उलझ जाता है। मनुष्य इस मायाजाल को निरर्थक मानते हुए भी इसी के चक्कर में फैसा रहता है। संसार असत्य है। मनुष्य इसे सत्य मानने की नादानी कर बैठता है और मोक्ष के लक्ष्य को भूलकर संग्रहवृत्ति में पड़ जाता है। इसके विपरीत, कुछ ज्ञानी लोग भी समाज में रहते हैं जो मोक्ष के लक्ष्य को नहीं भूलते। अर्थात संसार में हर तरह के लोग रहते हैं।

प्रश्न 4 -मैं और, और जग और कहाँ का नाता- पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर - यहाँ 'और' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। अत: यहाँ यमक अलंकार है। पहले 'और' में कवि स्वयं को आम व्यक्ति से अलग बताता है। वह आम आदमी की तरह भौतिक चीजों के संग्रह के चक्कर में नहीं पड़ता। दूसरे 'और' के प्रयोग में संसार की विशिष्टता को बताया गया है। संसार में आम व्यक्ति सांसारिक सुख-सुविधाओं को अंतिम लक्ष्य मानता है। यह प्रवृत्ति कवि की विचारधारा से अलग है। तीसरे 'और' का प्रयोग 'संसार और कवि में किसी तरह का संबंध नहीं' दर्शाने के लिए किया गया है।

प्रश्न -5 ' शीतल वाणी में आग' के होने का क्या अभिप्राय हैं?

उत्तर -कवि ने यहाँ विरोधाभास अलंकार का प्रयोग किया है। कवि की वाणी यद्यपि शीतल है, परंतु उसके मन में विद्रोह, असंतोष का भाव प्रबल है। वह समाज की व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है। वह प्रेम-रहित संसार को अस्वीकार करता है। अत: अपनी वाणी के माध्यम से अपनी असंतुष्टि को व्यक्त करता है। वह अपने कवित्व धर्म को ईमानदारी से निभाते हुए लोगों को जाग्रत कर रहा है।

प्रश्न 6 आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवश राय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के किन पक्षों को उभारा है?

उत्तर - 'आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के निम्नलिखित पक्षों को उभारा है-

* कवि अपने जीवन में मिली आशाओं-निराशाओं से संतुष्ट है।
* वह (कवि) अपनी धुन में मस्त रहने वाला व्यक्ति है।
* कवि संसार को मिथ्या समझते हुए हानि-लाभ, यश-अपयश, सुख-दुख को समान समझता है।
* कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह वाणी के माध्यम से अपना आक्रोश प्रकट करता है।

प्रश्न 7- आत्मपरिचय' कविता पर प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर -'आत्मपरिचय' कविता के रचयिता का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा तो होता ही है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं। दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता क्योंकि उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है। वह अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्रविधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है। वह पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीतिकलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है।

आत्मपरिचय

(हरिवंश राय बच्चन)

आत्मपरिचय

प्रश्न कोष

1.कवि का कहना है कि उसने स्नेह-सुरा का पान किया है। इस पान का उस पर क्या प्रभाव पड़ा है?

2.कवि बच्चन को कैसा संसार अच्छा नहीं लगता, और क्यों?

3.'सत्य किसी ने नहीं जाना'-कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

4.कवि ने किस पृथ्वी को ठुकराने की बात कही है? कवि के कथन से आप कितना सहमत हैं और क्यों?

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'- हरिवंश राय बच्चन

प्रश्नोत्तर (60/40 शब्द)

प्रश्न- 1) दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता का सारांश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस कविता में कवि हरिवंशराय बच्चन ने जीने की इच्छा और समय की कमी का सुंदर वर्णन किया है। कवि कहता है कि यद्यपि राहगीर थक जाता है, हार जाता है लेकिन वह फिर भी अपनी मंजिल की ओर बढ़ता ही जाता है। उसे इस बात का भय रहता है कि कहीं दिन न ढल जाए। इसी प्रकार चिड़ियों के माध्यम से भी कवि ने जीने की लालसा का अद्भुत वर्णन किया है। चिड़ियाँ जब अपने बच्चों के लिए तिनके, दाने आदि लेने बाहर जाती हैं तो दिन के ढलते ही वे भी अपने बच्चों की देखभाल के बारे में सोचती रहती हैं। वास्तव में हरिवंश राय बच्चन ने इस कविता में जीवन की क्षण भंगुरता और मानव के जीने की इच्छा का रोचक चित्रण किया है।

प्रश्न- 2) दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में जल्दी-जल्दी शब्दों की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर- 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'- वाक्य की कई बार आवृत्ति कवि ने की है। इससे यह विशेषता पता चलती है कि जीवन बहुत छोटा है। जिस प्रकार सूर्य उदय होने के बाद अस्त हो जाता है, ठीक वैसे ही मानव जीवन है। यह जीवन प्रतिक्षण कम होता जाता है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन एक न एक दिन समाप्त हो जाएगा। हर वस्तु नश्वर है। कविता की विशेषता इसी बात में है कि इस वाक्य के माध्यम से कवि ने जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत किया है। चाहे राहगीर को अपनी मंजिल पर पहुँचना हो या चिड़ियों को अपने बच्चों के पास। सभी जल्दी से जल्दी पहुँचना चाहते हैं। उन्हें डर है कि यदि दिन ढल गया तो अपनी मंजिल तक पहुँचना असंभव हो जाएगा।

प्रश्न- 3) कौन-सा विचार दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदमों को धीमा कर देता हैं? 'बच्चन' के गीत के आधार पर उत्तर दीजिए|

उत्तर- - कवि एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा है। शाम के समय उसके मन में विचार उठता है कि उसके आने के इंतजार में घर पर व्याकुल होने वाला कोई नहीं है। अत: वह किसके लिए तेजी से घर जाने की कोशिश करे। शाम होते ही रात हो जाएगी और कवि की विरह-व्यथा बढ़ने से उसका हृदय बेचैन हो जाएगा। इस प्रकार के विचार आते ही दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदम धीमे हो जाते हैं।

प्रश्न- 4) यदि मंजिल दूर हो तो लोगों की वहाँ पहुँचने की मानसिकता कैसी होती हैं?

उत्तर- मंजिल दूर होने पर लोगों में उदासीनता व नीरसता का भाव आ जाता है। कभी-कभी उनके मन में निराशा भी आ जाती है। मंजिल की दूरी के कारण कुछ लोग घबराकर प्रयास करना छोड़ देते हैं। कुछ व्यर्थ के तर्क-वितर्क में उलझकर रह जाते हैं। मनुष्य आशा व निराशा के बीच झूलता रहता है।

प्रश्न- 5) दिन जल्दी-जल्दी ढलता है, में पक्षी तो लौटने को विकल है, पर कवि में उत्साह नहीं है। ऐसा क्यों?

उत्तर- इस कविता में पक्षी अपने घरों में लौटने को व्याकुल है, परंतु कवि में उत्साह नहीं है। इसका कारण यह है कि पक्षियों के बच्चे उसका इंतज़ार कर रहे हैं। जबकि कवि अकेला है। उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं है। इसलिए उसके मन में घर जाने का कोई उत्साह नहीं है।

प्रश्न- 6) दिन का थका पंथी कैसे जल्दी-जल्दी चलता है?

उत्तर- रास्ते पर चलते-चलते हांलकी पंथी (राहगीर) थक जाता है, लेकिन वह फिर भी चलते रहना चाहता है। उसे डर है कि यदि वह रुक गया तो रात ढल जाएगी अर्थात् रात के होते ही मुझे रास्ते में रुकना पड़ेगा। इसलिए दिन का थका पंथी जल्दी-जल्दी चलता है।

दिन जल्दी- जल्दी ढलता है- (मुख्य बातें)

यह कविता एक गीत है, जिसके रचनाकार कवि हरिवंश राय बच्चन जी है| इस कविता में कहा गया है कि जो व्यक्ति अपना लक्ष्य निर्धारित करके जीवन पथ पर अग्रसर है, वे अपने कदम तेजी से बढ़ाते हुए लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बेचैन रहते हैं| इसी बात को कुछ उदाहरणों के माध्यम से स्पस्ट करने के कोशिश के गई है| एक थका हुआ पथिक भी घर पास होने पर दिन ढल जाने के आशंका में अपने कदम तेजी से बढ़ाते हैं| एक चिड़िया जो खाना खोजकर अपने घोसले की ओर बढ़ती है, यह सोचकर अपने पंख अधिक हिलाती है कि उसके बच्चे उसकी राह देख रहे होंगे और उसकी आशा में होंगे| उस चिड़िया को यह भी आशंका होती है कि कहीं रात न हो जाए| अंत में कवि ने यह स्पष्ट किया है कि ऐसे व्यक्ति जो लक्ष्यविहीन है, जिसका घर में कोई इंतजार नहीं करता, उसके कदम शिथिल पड़ जाते है अर्थात उसे समय के बीत जाने की कोई चिंता नहीं रहती है|

पतंग

(कवि – आलोक धन्वा)

(प्रश्नोत्तर 60/40 शब्दों में)

प्रश्न -1 **'सबसे तेज बौछारें गयीं, भादो गया ' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है , उसका वर्णन अपने शब्दों में करें | (60 शब्द)**

अथवा

सबसे तेज बौछारों के साथ भादों के बीत जाने के बाद प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण 'पतंग ' कविता के आधार पर अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर – प्रस्तुत प्रश्न कवि आलोक धन्वा द्वारा रचित ' पतंग ' पाठ से लिया गया है | इस कविता में कवि ने प्राकृतिक सुन्दरता का मनोरम चित्रण किया है | भादो माह में काले – काले बादल आकाश में घुमड़ते रहते हैं और तेज बारिश होती है | इस मौसम में अत्यधिक बारिश के कारण लोगों का जीवन स्थिर –सा हो जाता है | इसके विपरीत शरद ऋतु में मौसम साफ़ हो जाता है और रोशनी बढ़ जाती है | धूप चमकीली होती है | प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन होने लगते हैं –

- प्रात:काल सूरज की रोशनी खरगोश की आँखों के समान लाल दिखाई देता है |
- आकाश साफ़ , स्वच्छ , निर्मल और चमकीला दिखाई देता है |
- बच्चे दौड़ते –भागते , पतंग उड़ाते और तितलियों के पीछे –पीछे भागते दिखाई देते है |

प्रश्न – 2 सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए सबसे हल्की और रंगीन चीज, सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी विशेषणों का प्रयोग क्यों किया गया है ? (60 शब्द)

उत्तर – प्रस्तुत पाठ ' पतंग ' में कवि आलोक धन्वा जी ने पतंग के लिए सबसे हल्की और रंगीन चीज , सबसे पतला कागज़,सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है | कवि इसके माध्यम से बालसुलभ चंचलताओं और क्रियाकलापों को पतंग की विशेषताओं से जोड़ना चाहते हैं | जिस तरह पतंग बाँस की पतली कमानी और रंगीन कागज़ से निर्मित होकर रंग – बिरंगे रूप को धारण कर धागों के सहारे आकाश में उड़ते हैं , उसी तरह बच्चे भी हल्के होते हैं , उनकी कल्पनाएँ भी पतंगों के समान आसमान को छूती हैं | उनका मन पवित्र, निश्छल, कोमल होते हैं |

प्रश्न-3 जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास – कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या सम्बन्ध बन सकता है ? (60/40 शब्द)

उत्तर – कवि आलोक धन्वा द्वारा रचित पाठ पतंग में बच्चों को कपास के समान कोमल बताया गया है | जिस तरह कपास हल्की , मुलायम , गद्देदार , शुद्ध और सफ़ेद होती है , उसी तरह बच्चों के मन भी कोमल ,स्वच्छ , पवित्र होते हैं | कपास की तरह उनका शरीर भी कोमल और मुलायम होते हैं | बच्चे ये सारे गुण अपने जन्म से ही लाते हैं | यहाँ कपास बच्चों की मासूमियत और निष्कपट भावनाओं का प्रतीक है |

प्रश्न- 4 पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं – बच्चों का उड़ान से कैसा सम्बन्ध बनता है?

उत्तर – कवि आलोक धन्वा द्वारा रचित पतंग पाठ में बच्चों की उड़ान और पतंग की उड़ान में एक विशेष संबंध दिखाया गया है | जब आकाश में रंग – बिरंगे पतंग उड़ती है तब बच्चों का चंचल मन भी उड़ता है | बच्चे पतंग उड़ाते समय अत्यंत आनंदित , उत्साहित और रोमांचित मन वाले होते हैं | पतंग को देखकर ऐसा लगता है मानो वे भी अपनी कल्पनाओं के सहारे उड़ान भर रहे हैं | आकाश में उड़ते पतंग को देखकर बच्चे खतरों की परवाह किए बिना आकाश की उचाईयों को छू लेना चाहते हैं |

प्रश्न-5 पतंग नामक कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए |

उत्तर – कवि आलोक धन्वा द्वारा रचित कविता पतंग पाठ में बच्चों की दुनिया का रंगीन चित्रण किया गया है | पतंग उड़ने के मौसम में वे खुशी और उमंग से भर जाते हैं| भादो माह के बाद शरद ऋतु आते ही आकाश साफ़ हो जाता है | खरगोश की आँखों के समान धूप लाल और चमकीली हो जाती है | आकाश में उड़ती हुई को पतंगों को देखकर बच्चों के मन उस ऊँचाई तक जाना चाहते हैं | वे खतरों से खेल –खेल कर अपने भय पर विजय प्राप्त करते जाते हैं | प्रकृति भी बच्चों के इस हाव-भाव में सहायता करती है| कभी वे पतंगों के पीछे तो कभी रंगीन तितलियों के पीछे भाग- भागकर प्रकृति का भरपूर आनंद उठाते हैं |

प्रश्न-6 शरद ऋतु की विशेषताओं का वर्णन कीजिए |

उत्तर - कवि आलोक धन्वा द्वारा रचित कविता पतंग पाठ में शरद ऋतु का अत्यंत ही मनोहारी चित्रण किया गया है | कवि ने अपनी कविता में शरद ऋतु का मानवीकरण करते हुए निम्नलिखित उनकी निम्नलिखित विशेषताएँ बताई है –

- इस ऋतु में प्रात:काल में सूरज की रोशनी खरगोश की आँखों के समान लाल दिखाई देता है |
- आकाश साफ़ , स्वच्छ , निर्मल और चमकीला दिखाई देता है |
- बच्चे दौड़ते –भागते , पतंग उड़ाते और तितलियों के पीछे –पीछे भागते दिखाई देते है

- शरद ऋतु भादो माह के बाद इस तरह आता है जैसे वह अपनी नई साइकिल को चलाते हुए, जोर –जोर से घंटी बजाते हुए, पुलों को पार करते हुए और अपने चमकीले
  इशारे से पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को बुला रहा है |

प्रश्न-7 " रोमांचित शरीर का संगति" का जीवन के लय से क्या संबंध है ?

उत्तर – प्रस्तुत प्रश्न कवि आलोक धन्वा द्वारा लिखित कविता पतंग के सन्दर्भ में आया है | इस कविता में कहा गया है कि जब बच्चे किसी कार्य में पूरी तरह तल्लीन हो जाते हैं उसके मन और शरीर में खुशी और उमंग से एक अद्भुत रोमांच और संगीत उत्पन्न होता है | ऐसी स्थिति में मन एक निश्चित दिशा में लयबद्ध होकर गति करने लगता है | मन के अनुसार कार्य होने से बच्चों के शरीर भी उसी लय में कार्य करता है | इसी तन्मयता के कारण वे खतरों की परवाह किए बिना भय पर विजय पाना भी सीखते जाते हैं |

प्रश्न- 8 ' महज एक धागे के सहारे , पतंगों की धड़कती ऊँचाईयाँ ' उन्हें (बच्चों को) कैसे थाम लेती है ? अपने शब्दों में लिखें |

उत्तर – कवि आलोक धन्वा द्वारा लिखित कविता पतंग में बच्चों के बालमन और पतंगों की उड़ान का बहुत ही सुंदर चित्रण किया गया है | शरद ऋतु के आते ही पतंगों से बच्चों की कोमल भावनाएँ जुड़ जाती है | बच्चे अपने पतंग को आकाश में उड़ाना चाहते हैं | पतंग आकाश में उड़ती है , लेकिन पतंग की ऊँचाई का नियंत्रण उनके हाथ की डोर में होती है | यह एक ऐसा क्षण होता है जब वे अपनी खुशियों और उमंगों में बेसुध हो जाते हैं | बच्चों के कोमल और मुलायम बालमन पतंगों की ऊँचाईयों के साथ उड़ रहे होते है | ऐसा लगता है मानो पतंग का धागा पतंग के साथ –साथ बालमन को भी थाम रहा हो |

प्रश्न-9 दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर - प्रस्तुत प्रश्न कवि आलोक धन्वा द्वारा लिखित कविता पतंग के सन्दर्भ में आया है | इस कविता में कहा गया है कि जब बच्चे पतंग उड़ाने में पूरी तरह तल्लीन हो जाते हैं , उसके मन और शरीर में खुशी और उमंग से एक अद्भुत रोमांच और संगीत उत्पन्न होता है | उनका ध्यान आकाश में उड़ रहे पतंगों पर होता है | इस दिशा में पतंगें उड़ती हैं , बच्चे भी उसी दिशा में भागने लगते हैं | बेसुध होकर भागने के दरम्यान वे छतों के दीवारों पर भी कूदते हैं और उसके पदचाप से छतों के खतरनाक कोने भी मुलायम होकर सुन्दर ध्वनि उत्पन्न करते हैं | बच्चों की किलकारियों और पदचाप से एक प्रकार का संगीत उत्पन्न होता है और ऐसा लगता है मानो बच्चे दिशाओं को मृदंग की तरह बजा रहे हैं |

प्रश्न-10 पतंग पाठ के भाव सौन्दर्य को स्पष्ट करें |

उत्तर – कविता का भाव सौन्दर्य - कवि आलोक धन्वा द्वारा रचित कविता पतंग पाठ में बच्चों की दुनिया का रंगीन चित्रण किया गया है | पतंग उड़ने के मौसम में वे खुशी और उमंग से भर जाते हैं| भादो माह के बाद शरद ऋतु आते ही आकाश साफ़ हो जाता है | खरगोश की आँखों के समान धूप लाल और चमकीली हो जाती है | आकाश में उड़ती हुई को पतंगों को देखकर बच्चों के मन उस ऊँचाई तक जाना चाहते हैं | वे खतरों से खेल –खेल कर अपने भय पर विजय प्राप्त करते जाते हैं | प्रकृति भी बच्चों के इस हाव-भाव में सहायता करती है| कभी वे पतंगों के पीछे तो कभी रंगीन तितलियों के पीछे भाग भागकर प्रकृति का भरपूर आनंद उठाते हैं |

प्रश्न-11 पतंग पाठ के शिल्प सौन्दर्य को स्पष्ट करें |

उत्तर - आलोक धन्वा द्वारा लिखित कविता पतंग में बच्चों के बालमन और पतंगों की उड़ान का बहुत ही सुंदर चित्रण किया गया है | इस कविता में कवि ने निम्नलिखित शिल्प सौन्दर्य का प्रदर्शन किया है –

- बिंबात्मक शैली में शरद ऋतु का सुंदर चित्रण किया है।
- बालमन और उनकी बाल-सुलभ चंचलाताओं का मनोहर चित्रण किया गया है
- कविता में शरद ऋतु का मानवीकरण किया गया है |
- पाठ में मानवीकरण अलंकार , उपमा अलंकार , अनुप्रास अलंकार , पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का मनोहर चित्रण किया गया है |
- कविता की भाषा खडी बोली है, जिससे भावों की सहज अभिव्यक्ति हुई है |
- कवि ने अपनी कविता में लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग किया है |
- कवि ने कविता में मिश्रित शब्दावलियों को प्रयोग किया है |
- मुक्त छंद का प्रयोग किया किया गया है |

कविता के बहाने
(कुँवर नारायण)

प्रश्न 1 - इस कविता के बहाने बताएँ कि ' सब घर एक कर देने के माने ' क्या है ?

उत्तर - प्रस्तुत प्रश्न कवि कुँवर नारायण द्वारा रचित ' कविता के बहाने ' पाठ से लिया गया है | कवि को आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे संशय हो रहा है | इस पाठ में कविता को यांत्रिकता से मुक्त करने और इसकी अपार सम्भावनाओं बताने का प्रयास किया गया है | इसी क्रम में वे कहते कि जिस प्रकार बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का ध्यान नहीं रखा जाता , उसी प्रकार कविता में स्थान की कोई सीमा नहीं होती है | कविता एक शब्दों का खेल है | कवि कविता लिखते समय अपने मन में बच्चों की तरह अपने – पराये के बोध से ऊपर उठाकर लोकहित की कामना से बंधन रहित होकर कविता की रचना करता है | उनके मन में सीमाओं का बंधन नहीं रहता है |

प्रश्न 2- 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है ?

उत्तर – कवि कुँवर नारायण ने अपनी कविता ' कविता के बहाने ' पाठ में कविता के 'उड़ने' और 'खिलने' को चिड़िया और फूल के माध्यम से स्पष्ट करने की कोशिश की है | वे कहते है कि चिड़िया एक स्थान से दूसरे स्थान उड़कर जाती है , परन्तु कविता अपनी कल्पानाओं के पंख लगाकर सीमाओं के बंधन से मुक्त होकर बहुत ही ऊँची उड़ान भरती है | तात्पर्य यह है कि कविता की उड़ान असीमित है , जबकि चिड़ियों की उड़ान सीमित है | उसी तरह फूल भी खिलते है और कविताएँ भी खिलती है | फूल के खिलने की एक सीमा है, लेकिन कविता बिना मुरझाए सदैव खिलती रहती है |

प्रश्न 3- कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं ?

अथवा – कविता को बच्चों के समान क्यों कहा गया है ? तर्क सहित उत्तर दें |

उत्तर - कवि कुँवर नारायण ने अपनी कविता ' कविता के बहाने ' पाठ में कविता और बच्चे को समानांतर रखा है | बच्चों के खेल में नयापन , रचनात्मकता और क्रियाशीलता होती है | बच्चों के मन पवित्र , निश्छल और भेदभाव रहित होते हैं | बच्चों के मन में सबके लिए समान भाव होते हैं | बच्चे किसी भी प्रकार की सीमाओं के बंधन से मुक्त होते है |

उसी प्रकार कविता भी शब्दों का एक खेल है , जिसमें सृजनशीलता और नयापन के भाव छिपे होते हैं | कविताएँ भी बच्चों की तरह सीमारहित और भेदभावरहित होकर लोकहित का भावना से ओतप्रोत होते है | यही कारण है कि कविता को बच्चों के समान बताया गया है |

प्रश्न 4 - कविता के सन्दर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं ?

उत्तर - कवि कुँवर नारायण ने अपनी कविता ' कविता के बहाने ' पाठ में कविता के 'उड़ने' और 'खिलने' को चिड़िया और फूल के माध्यम से स्पष्ट करने की कोशिश की है |

कविता और फूल में संबंध स्थापित करने के क्रम में वे कहते हैं कि फूल खिलने के एक निश्चित समय बाद मुरझा जाते हैं, लेकिन कविता अपने लोकहित भावों के कारण हमेशा ताजगी और खुशबू से भरपूर रहती है | कविता फूल की तरह कभी मुरझाती नहीं , बल्कि सदैव समाज को जागरुक और प्रसन्नचित्त बनाए रखती है |

प्रश्न 5 -'कविता के बहाने' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर - कवि कुँवर नारायण ने अपनी रचना ' कविता के बहाने ' पाठ के माध्यम से आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे संशय प्रकट कर रहे है | इस पाठ में कविता को यांत्रिकता से मुक्त करने और इसकी अपार सम्भावनाओं बताने का प्रयास किया गया है | वे कहते है कि कविता एक यात्रा है जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की है। एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसका अंत निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन स्वयं ही टूट जाएँगे। वह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

प्रश्न 6 – "कविता के बहाने' कविता के कवि की क्या आशंका है और क्यों?

उत्तर - कवि कुँवर नारायण ने अपनी रचना ' कविता के बहाने ' पाठ के माध्यम से आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे संशय प्रकट कर रहे है | उसे आशंका है कि आज का मानव अत्यधिक भागमभाग के कारण यांत्रिक होता जा रहा है। उसके पास भावनाओं को समझाने, व्यक्त करने या सुनने का समय नहीं है। विकास की इस आंधी से मानव की कोमल भावनाएँ समाप्त होती जा रही हैं। अत: कवि को कविता का अस्तित्व खतरे में दिखाई दे रहा है।

प्रश्न 7 - फूल और चिड़िया को कविता की क्या-क्या जानकारियाँ नहीं हैं? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर बताइए |

उत्तर - कवि कुँवर नारायण ने अपनी कविता ' कविता के बहाने ' पाठ में कविता के 'उड़ने' और 'खिलने' को चिड़िया और फूल के माध्यम से स्पष्ट करने की कोशिश की है | वे अपनी कविता इस बात को स्पष्ट करते है कि कविता चिड़िया की तरह उड़ान भरती है और फूल की तरह खिलती है , लेकिन फूल और चिड़िया को कविता की निम्नलिखित जानकारियाँ नहीं हैं-

- फूल को स्वयं खिलने , खुशबू विखेरने , मुरझाने और कविता के असीमित काल तक खिले रहने की जानकारी नहीं हैं |
- चिड़िया को यह पता नहीं है कि उसके बहाने कविताएँ जरुर लिखी जाती है और उसकी उड़ान से कविता के उड़ान की तुलना की जाती है , परन्तु उसकी उड़ान सीमित है और कविता की उड़ान असीमित |

प्रश्न 8 – ' कविता के बहाने ' पाठ में निहित सौन्दर्य बोध को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर - ' कविता के बहाने ' पाठ में निहित सौन्दर्य बोध कुछ इस प्रकार है –

- कविता की रचनात्मक व्यापकता को प्रकट किया गया है।
- सरल एवं सहज खड़ी बोली में सशक्त अभिव्यक्ति है।
- कविता का मानवीकरण किया गया है।
- कविता में लाक्षणिकता है।
- 'चिड़िया क्या जाने" और '' फूल क्या जाने '' में प्रश्न अलंकार है ।
- कविता से चिड़िया और फूल की तुलना सुंदर है।
- 'मुरझाए महकने' और ' बच्चों के बहाने' में अनुप्रास अलंकार है |
- मुक्त छंद और शांत रस है |

बात सीधी थी पर

(कुँवर नारायण)

60 शब्दों वाले प्रश्न और उत्तर

प्रश्न 1. भाषा को सहूलियत से बरतना से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर- सहूलियत शब्द का सामान्य अर्थ आसानी यासहज होता है।इस हिसाब से भाषा को सहूलियत से बरतना अर्थात् उसकी सरलता, सादगी और सहजता से प्रयोग करना है। जिससे भाषा का भाव आसानी से समझ में आ जाए। बनावटी शब्दों के आडंबर से भाषा सहज होने के बजाय कठिन होती चली जाती है और वह आसानी से समझ में नहीं आती।इसीलिए भाषा को सरलता से प्रयोग करना चाहिए और यह सरलव सहज भाषा का प्रयोग ही भाषा को सहूलियत से बरतने से संबंधित है।

प्रश्न 2.बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं किन्तु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है कैसे?

उत्तर – बात, भाषा के रूप में ही व्यक्त होती है। इसीलिए भाषा और बात का अभेद्य संबंध है। मनुष्य के मन में आने वाली भावनाएं शब्दों के माध्यम से बाहर प्रकट होती हैं। हम जैसा सोचते हैं वैसा ही कह दें तो कोई दिक्कत नहीं है,परंतु कविजैसेलोग अपनी बात को कहने के लिए कई बार भाषा को सजाने, संवारने या प्रभावी बनाने के चक्कर में पड़ जातेहैं, तो बहुत कठिनाई हो जाती है। दरअसल भाषा के मोह में पड़ा हुआ व्यक्ति मूल बात कहनेकेबजाय कुछ और ही कह जाता है। इसलिएवास्तविक यानी जो वह बताना चाहता है वह वो कहनहीं पाता है और भाषा के चक्कर में चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।

प्रश्न 3. बात (कथ्य) के लिए दी गई विशेषताओं का उचित बिंबों और मुहावरों से मिलान करें।

(क) बात का चूड़ी मरजाना -बात का प्रभावहीन हो जाना।

(ख) बात कीपेंचखोलना-बात को सहज और स्पष्ट करना।

(ग) बात का शरारती बच्चों की तरह खेलना - बात का पकड़ में न आना।

(घ) बात को कील की तरह ठोक देना - बात में कसावट के न (अर्थहीन) होने पर भी जबरदस्ती थोंपना।

(ड) बात का बन जाना –कथन और भाषाका सही सामंजस्य बैठ जाना।

40 शब्दों वाले प्रश्न और उत्तर

प्रश्न 1.सारी मुश्किल को धैर्य से समझने के बजाय कवि क्या किए जा रहा था ?

उत्तर -कवि को अपनी बात को कहने की जल्दबाजी थी और वह हड़बड़ी तथाखीझ में बिना सोचे समझे हीअभिव्यक्ति की जटिलता को और अधिक बढ़ाता जा रहा था ।जिससे बात सुलझने के बजाय उलझती चली जा रही थी। अगर कवि ने धैर्य का साथ लिया होता तो बात आसानी से समझाई जा सकती थी।

प्रश्न 2. बात पेचीदा कब हो जाती हैं और इससे बचने का क्या उपाय है ?

उत्तर –बात पेचीदातब हो जाती है जब कहने वाला अपना ध्यान मूल बात पर केंद्रित न करके उसेआडंबरों द्वारा ढकना चाहता है। बात को प्रभावशाली बनाने के चक्कर में उसकी बात और अधिक जटिल हो जाती है । इससे बचने के लिए हमें बात सीधी तथा सरल और सहज रूप से कहनी चाहिए।

प्रश्न 3. बात सीधी होने पर भी भाषा के चक्कर में कैसे फंस गई ?

उत्तर - बात सीधी होने पर उसे सहज रूप में व्यक्त किया जा सकता था , किंतु कवि ने बात को पाने के चक्कर में भाषा को घुमाया-फिराया,तोड़ा- मरोड़ा ,उल्टा- पुल्टा पर इससे बात स्पष्ट होने के बजाय और अधिक पेचीदा,जटिल तथा दुरुह हो गई और भाषा का जंजाल खड़ा हो गया तथा अर्थ पीछे छूट गया।

कैमरे में बंद अपाहिज

(60शब्दों वाले प्रश्न – उत्तर)

प्रश्न 1.कवितामें कुछ पंक्तियां कोष्ठकों में रखी गई हैं , आपकी समझसेइसका क्या औचित्य है ?

उत्तर -कवि ने अपने विचार संप्रेषण के लिए एक अनूठा प्रयोग किया है कोष्ठक में रखी गई पंक्तियों से अलग-अलग लोगों केप्रति जो संबोधन है उसे बहुत ही स्पष्ट कर दिया गया है। इससे कवितामेंएकनाटकीयरूपआगया है और भावभीस्पष्टहोरहा हैजैसे (कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा) यह पंक्ति केवल कैमरामैन के लिए नहीं है बल्कि उस अपाहिज के लिए भी है जिसको अवसर मिला है और दूरदर्शन वालों का अहम भाव भी समेटे हुए है। इसी प्रकार

(हम खुद इशारे से बताएंगे किक्याऐसा)

(यह अवसर खो देंगे)

कोष्टक में लिखितये पंक्तियां कविता के उद्देश्य को व्यक्त करने में सफल हुई हैं और कवि ने इसी हेतु से इसका प्रयोग भी किया है।

प्रश्न 2.'कैमरे में बंद अपाहिज'कविता करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता है। विचार कीजिए -

अथवा

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता आज के व्यावसायिकताकेकारण होने वाली संवेदनहीनता को प्रकट करतीहै कैसे ?स्पषकीजिए।

उत्तर -कैमरे में बंद अपाहिज कविता करुणा जैसेविषयको लेकरएकव्यंग्यपरकरचनाहै। जिसमें मीडिया कर्मियों कीहृदय हीनता को उजागर किया गया है। मीडिया कर्मी अपने चैनल को लोकप्रिय बनाने के लिए जानबूझकर लोगों के जख्मों कोकुरेदते हैं ।वे अपाहिजकी मजबूरी को, उसकी दीनता को और दुख को जानबूझकर प्रकट कराना चाहते हैं । ताकि लोग उन्हें देखने के लिए चैनल से चिपके रहें । वास्तव में वे किसी अपाहिज के दर्द के प्रकटीकरण से अपना धंधा चलाना चाहते हैं और यही कार्य उनकी हृदय हीनता तथा संवेदनशून्यता को दर्शाता है। जिसे हम करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता कह सकते हैं।

प्रश्न 3. हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएंगे पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग किया है ?

उत्तर – 'हम समर्थ शक्तिवान'सेकविद्वारा मीडिया वालों परव्यंग्य किया गया हैकि मीडिया वाले स्वयं को बहुत शक्तिशाली माननेलगेहैं।मीडिया वाले स्वयं को दूसरों का भाग्य विधाता भी मानते हैं। जिसे चाहे दूरदर्शन पर लाकर ऊंचा उठा दें, नीचा गिरा दें। वोस्वयं में समर्थहैं।

इसी प्रकार 'हम एक दुर्बल को लाएंगे'मेंदया, लाचारी और प्रदर्शन का भाव है। जिससे यह ध्वनित होता है कि मीडिया वाले किसी अपाहिज को लाकर सबके सामने उसका तमाशा बनाने के लिए स्वतंत्र हैं ।वो उस पर टीका टिप्पणी करने के लिए, विश्लेषण करने के लिए उसका मजाक बनाने के लिए भी तैयार हैं।मानो शक्ति शालीलोगों के बीच एक अपाहिज का खड़ा होना कोई तमाशा हो जाता है । उसका अपनी भावनाओं के लिए वहां कोई जगह नहीं है।

40 शब्दों वाले प्रश्न और उत्तर

प्रश्न 1.यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे, तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन सा उद्देश्य पूरा होगा ?

उत्तर -यदि कोई अपंग और दर्शक दोनों साथ-साथ रोने लगें तो प्रश्नकर्ता को लगेगा कि उसने कार्यक्रम को बहुत भावनापूर्ण और करुणापूर्ण बना लिया है। वह उस कार्यक्रम के माध्यम से अपाहिजों के जिस दुःख- दर्द को दिखाना चाहता था उसमें वह पूरी तरह से सफल हो गया है ।यहां तक कि दर्शकों की आंखों में भी वह दुःख उमड़ पड़ा है ।इस सफल कार्यक्रम का वास्तविक उद्देश्य है जनता का ध्यान खींच पाने में समर्थ होना। जिससे दर्शक कार्यक्रम को देखते रहें और कार्यक्रमनिर्माता की भरपूर कमाई हो सके।

प्रश्न 2. 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है ?

उत्तर – 'परदे पर वक्त की कीमत है' से साक्षात्कारकर्ता की मूल भावना का परिचय मिलता है।साक्षात्कारकर्ता के लिए दूरदर्शन के परदे पर कार्यक्रम दिखाने के बदले जो पैसा मिलता है उसकी कीमत अपंगकेतकलीफसेकहीं ज्यादा है। वास्तव में वह पैसा कमाने के लिए ही अपंगता दिखा रहा है। कवि का व्यंग्य है कि आज के इस व्यावसायिक दौर में दूरदर्शन पर दिखाई जाने वाली करुणा हो या वेदना,सबनिरर्थक हो गए हैं, सार्थकता तो सिर्फ और सिर्फ धन कमाने मेंरहगई है।

प्रश्न 3. अपाहिज से पूछे जाने वाले अधिकतर प्रश्न संवेदना शून्य हैंकैसे ?

उत्तर -अपाहिज से पूछे जाने वाले प्रश्न बिल्कुल निम्न स्तर के हैं जिन्हें हम संवेदना शून्य कह सकते हैं। जैसे–क्या आप अपाहिज हैं?तो
आपक्यों अपाहिज हैं ?

इन दोनों प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं बनता। सबके सामने स्वयं को अपाहिज स्वीकार करना अपमान के सिवाय और क्या है ? किसी से पूछना कि वह अपाहिज क्यों है ? एक क्रूर मजाक है। इसी प्रकार "आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा" जानबूझकर जले पर नमक छिड़कनेजैसा है। फिर यह पूछना कि अपाहिज होकर उसे कैसा लगता है ? उसके मौन रहने पर उसकी नकल करना, भद्दे इशारे करना। वास्तव में ऐसेप्रश्न अपाहिज से पूछे ही नहीं जाने चाहिए।इस तरह के प्रश्न संवेदनशून्य व्यक्ति ही कर सकता है।

उषा (शमशेर बहादुर सिंह)

प्रश्नोत्तर(60 /40 शब्द)

प्रश्न 1- सूर्योदय से पहले आकाश में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं? 'उषा' कविता के आधार पर बताइए।

अथवा

'उषा' कविता के आधार पर सूर्योदय से ठीक पहले के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण कीजिए।

उत्तर -सूर्योदय से पहले उषाकाल (भोरकाल) में आकाश का रंग शंख जैसा स्वेत और नीले रंग का है | इस समय आकाश राख से लीपे चौके के समान गीला प्रतीत होता है। सूर्य की लालिमा (प्रारंभिक किरणें) आकाश में ऐसा लगता है मानो किसी ने काली सिल पर थोड़ा लाल केसर डालकर पीसा हो और उसे धो दिया गया हो या फिर काली स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दी गई हो। सूर्योदय के समय सूर्य का प्रतिबिंब ऐसा लगता है जैसे नीले स्वच्छ जल में किसी गोरी युवती का प्रतिबिंब झिलमिला रहा हो।

प्रश्न 2- 'उषा' कविता के आधार पर उस जादू को स्पष्ट कीजिए जो सूर्योदय के साथ टूट जाता है।

सूर्योदय से पूर्व उषा का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। भोर के समय सूर्य की किरणें जादू के समान लगती हैं। इस समय आकाश का सौंदर्य क्षण-क्षण में परिवर्तित होता रहता है। यह उषा का जादू है। नीले आकाश का शंख-सा पवित्र होना, काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लेट पर लाल खड़िया मल देना, नीले जल में गोरी नायिका का झिलमिलाता प्रतिबिंब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते हैं। सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो ज़ाते हैं।

प्रश्न 3- 'स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने। ' -इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –प्रस्तुत पद्यांश कवि शमशेर बहादुर द्वारा रचित कविता ' उषा ' से लिया गया है |कवि कहता है कि सुबह के समय अँधेरा होने के कारण आकाश स्लेट के समान मटमैला दिखता है। उस समय सूर्य की लालिमा-युक्त किरणें ऐसा दिखता है, जैसे किसी ने काली स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दिया हो औरबाद में उसे मल दिया हो |

प्रश्न 4- भोर के नभ को ' राख से लीपा, गीला चौका ' की संज्ञा दी गई है। क्यों ?

उत्तर-कवि कहता है कि भोर के समय ओस के कारण आकाश नमीयुक्त व धुंधला होता है। राख से लिपा हुआ चौका भी मटमैले रंग का होता है। दोनों का रंग लगभग एक जैसा होने के कारण कवि ने भोर के नभ को 'राख से लीपा, गीला चौका' की संज्ञा दी है। दूसरे, चौके को लीपे जाने से वह स्वच्छ हो जाता है। इसी तरह भोर का नभ भी पवित्र होता है।

प्रश्न 5-सिल और स्लेट का उदाहारण देकर कवि ने आकाश के रंग के बारे में क्या कहा है?

उत्तर -कवि ने अपनी कविता में भोरकालीन आकाशको सिलबट्टे और स्लेट के रंगके सामान बताया है | भोर के समय आकाश का रंग गहरा नीला-काला और मटमैला होता है और उसमें थोड़ी-थोड़ी सूर्योदय की लालिमा मिली हुई होती है।

प्रश्न 6- उषा कविता नवचेतना का संदेश है स्पष्ट करें-

उत्तर-कवि शमशेर बहादुर सिंह ने अपनी कविता 'उषा' में नवचेतना का सन्देश कुछ इस प्रकार दिया है -

* उषा का समय अर्थात् भोरकाल (सूर्योदय से पूर्व का समय) वातावरण स्वच्छ, पवित्र और जीवन के प्रारम्भ का समय है |
* उषाकाल नवीन दिवस की ओरले जाने वाला माध्यम है।
* वह आने वाले दिन का स्वागत है।
* यह वह समय है , जब हम आकाश में विभिन्न रंगों का मेल देख नए जोश के साथ सारी मनोकामनाएँ पूर्ण करने के लिए तत्पर हो जाते है | इसलिए उषा का समय नवचेतना का

संदेश है।

प्रश्न 7- कवि भोरकाल के सूर्योदय के साथ एक आशावादी परिवेश की कल्पना करता है | उदाहरण सहितस्पष्ट करें |

उत्तर -कवि शमशेर बहादुर सिंह जी ने अपनी कविता 'उषा' में विभिन्न उपमानों के माध्यम से भोरकाल के गतिशील ग्रामीण जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया है , जिसमें-

* उशाकालीन ग्रामीण जीवन का सुंदर और मनोहर चित्रण है।
* जहाँ राख से लीपा हुआ गीला चौंका है और जीवन जीने की आशा है |
* स्लेट की कालिमा पर चाक से रंग बिखरते प्यारे बच्चों के सपने हैं |
* कविता में गाँव की सुबह का एक गतिशील जीवनदर्शन है जो नयी आशाओं को प्रदर्शित करता है।

प्रश्न- 8नन्हें बच्चे जिस प्रकार अपनी इच्छा से स्लेट का इस्तेमाल करते है ,क्या प्रकृति भी नन्हें बच्चे के समान मनमौजी है?

उत्तर –हाँ, जिस प्रकार नन्हें बच्चे अपने मन से स्लेट पर कोई एक दिशा न निश्चित करके अपनी मर्जी से स्लेट को रंगीन खड़िया चाक से रंग देते है , ठीक वैसे ही प्रकृति भी मनमौजी जैसा व्यवहार करती है | भोरकाल के समय प्रकृति कहीं केशर सा केशरिया रंग बिखेरती है, तो कही बींच में ही सूरज की लालिमा धुंधली – सी हो जाती है, कहीं गोर देहवाली सुंदरी की भाँति असमान में सफेद रंग हल्का-हल्का प्रदर्शित हो रहा है, तो कहीं अँधेरा अपना अस्तित्व कम कर रहा है | इससे ऐसा मालूम होता है की मानो प्रकृति भी नन्हें बच्चों की तरह मनमौजी बन गई हो |

प्रश्न 9- शमशेर बहादुर सिंह ने अपनी कविता उषा के माध्यम से नवीन कल्पना एवं नवीन उपमानों का प्रयोग किया है स्पष्ट करें?

उत्तर-कवि शमशेर बहादुर सिंह जी ने अपनी कविता में ग्रामीण परिवेश से उषा के समय का संबंध जोड़कर नवीन कल्पनाओं के आधार नवीन ग्रामीण उपमानों के आधार पर उषा का मनोहर चित्र उपस्थित किया है | ये नवीन उपमान है -

क) 'नीला शंख जैसा'
ख) 'राख से लीपा चौका '
ग) "काली सिल सा '
घ़) 'स्लेट पर लाल खडिया चाक मलना '
ङ)'झिलमिल देह'

इसप्रकार,कविता में सरल एवं लघु शब्दों के प्रयोग से एक प्रकार से चित्रात्मकता लाई गई है | इसीलिए कह सकते है कि शमशेर बहादुर सिंह ने अपनी कविता उषा के माध्यम से नवीन कल्पना एवं नवीन उपमानों का प्रयोग किया है।

बादल राग
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
(प्रश्नोत्तर – 60/40 शब्द)

1) बादल को विप्लव का प्रतीक क्यों माना गयाहै?

उत्तर -विप्लव का अर्थ है क्रांति । कवि बादल को एक क्रांतिकारी के रूप में देखते है । बादल गरजते हैं और वर्षा करते हैं। वर्षा से गर्मी से लोगों को राहत मिलती है । तप्त धरती को शीतल व सुहावने रूप में पूर्णरूपेण बदलने की क्षमता रखते है । इसलिए कवि ने इन्हें क्रान्ति के प्रतीक कहा है।

2)रण-तरी किसे कहते हैं? वहाँ रण-तरी को आकांक्षाओं से भरी क्यों कहा है?

उत्तर- रण- तरी बादलों की युद्ध-नौका का कहते हैं। रण- तरी को आकांक्षाओं से भरी कहा गया है क्योंकि बादलों की इस युद्ध-नौका से युद्ध के इस आह्वान से बदलाव की आकांक्षाएं बनी हुई है । बरसात से धरती का रूप पूर्णत: बदलने कि अपेक्षा होती है तो दूसरी ओर क्रांति से निम्न वर्ग के मन में बदलाव व खुशहाली कि आकांक्षाएं तैरने लगती है ।

3) क्रांति के सुप्त अंकुर आकाश की ओर क्यों ताक रहे हैं?

उत्तर- क्रान्ति के सोए हुए अंकुर आकाश की ओर इसलिए ताक रहे हैं कि बादल बरसेंगे तो पल्लवित होंगे। इसलिए वे बादलों की ओर उनके गरजने बरसने की उम्मीद लगाए बैठे हैं।

4)"तिरती है समीर सागर पर,अस्थिर सुख पर दुख की छाया' से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- जैसे क्षणिक सुख पर दुख की छाया मंडराती है उसी तरह वायुरूपी समुद्र पर बादल रूपी नाव तैर रही है। जब पूँजीपति क्रान्ति की सम्भावनाएँ अनुभव करते हैं तो दुःखी हो जाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि बादल क्रान्ति के दूत हैं। आसन्न क्रांति से सुविधासम्पन्न वर्ग अपने अस्तित्व के खतरे में महसूस करता है ।

5) अशनि - पात से शापित उन्नत शत-शत वीर पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है?

उत्तर-'अशानि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' पंक्ति में कवि ने पूंजीपति वर्ग की ओर संकेत किया है। बिजली गिरने का अर्थ क्रांति से है।

6) **भाव स्पष्ट कीजिए- विप्लव रव से छोटे ही है शोभा पाते**

उत्तर- जब बादल की गर्जना से बड़े बड़े पर्वत खंडित हो जाते है ,वहीं छोटे छोटे पौधे अपने हल्केपैन के कारण झूमते और खुश होते है। क्रांति के आने से प्रस्थापित व्यवस्था पूरी तरह से तहस नहस हो जाती है परंतु वंचितों,शोषितों, किसान और श्रमिक जन को नवजीवन प्राप्त होता है वे ही इस क्रांति से शोभा पाते है। क्योंकि इसका उन्हें ही फायदा पहुंचता है।

7) प्रकृति बादलों को किस प्रकार पुकारती है और क्यों ?

उत्तर - प्रकृति (छोटे-छोटे पौधे) बादलों को हाथ हिला-हिलाकर बुलाती है। वस्तुतः बादल ही किसानों की पीड़ा का समाधान कर सकता है। तात्पर्य यह है कि निम्न वर्ग बेसब्री से क्रान्तिदूत को बुला रहा है।

8)'जल विप्लव प्लावन से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- जल विप्लव - प्लावन का अर्थ है-जब क्रान्ति होती है तो इसका सबसे अधिक प्रभाव शोषित वर्ग पर ही पड़ता है। यही वर्ग क्रान्ति आने पर उसी तरह खिल उठता है जिस तरह फूल खिलता है।

(9) आशय स्पष्ट कीजिए

सदा पंक पर ही होता

जल - विप्लव - प्लावन।'

उत्तर-बाढ़ आकर कीचड़ भरी धरती डुबो देती है। ऊँचे स्थानों से जल बह जाता है, परन्तु बारिश से आई बाढ़ का प्रवाह कीचड़ पर पड़ता है। बाढ़ के बाद धरती साफ-सुथरी हो जाती है। इसी प्रकार क्रान्ति के बादल जब बरसते हैं तो मजदूर वर्ग के जीवन में खुशहाली ला देते हैं।

(10)'क्षुद्र प्रफुल्ल जलज' का प्रतीकार्थ समझाइए।

उत्तर-'क्षुद्र प्रफुल्ल जलज' का अर्थ है-खिला हुआ छोटा-सा कमल|

कमल कीचड़ में खिला रहता है। इसी प्रकार गरीब प्रतिकूलपरिस्थितियों में भी मुस्कराते रहते हैं। संतुष्टि के साथ जीवन संघर्ष में रत रहते है

11) शैशव का सुकुमार शरीर' से कवि का क्या तात्पर्य है? रोग-शोक उसको दुखी क्यों नहीं कर पाते हैं?

उत्तर-बालक का शरीर कोमल होता है, वह रोग और दुःख में भी हँसता है। बच्चों में स्वाभाविक रूप से आनन्द की भावना रहती है। अतः उनका रोग या शोक कुछ नहीं बिगाड़ सकते।यहाँ शैशव शब्द छोटे अर्थात सामान्य जन की ओर भी संकेत करता है।

12) कृषक अधीर होकर किसे बुला रहा है और क्यों?

उत्तर - किसान अधीर होकर बादलों को बुला रहा है। इसका कारण यह है कि पूँजीपतियों ने उसका जबरदस्त शोषण किया है। उसका सारा खून निचोड़ लिया है। वह अब भूख से करहा रहा है। इन निर्बल भुजाओं वाला किसान बादलों को आशा के रूप में देख रहा है कि अब यही उसे पूँजीपतियों के शोषण से मुक्ति दिलाएगा।

13) **धनी शोषक वर्ग अपनी विलासिता के बीच भी आतंकित है, ऐसाक्यों? अथवा**

धनी 'अंगना - अंग से लिपटे हुए भी आतंकित क्यों हैं?

उत्तर- पूँजीपति इसलिए भयभीत हैं क्योंकि दुःखी किसान क्रान्तिदूत बादलों को बुला रहे हैं। उन्हें है कि अगर क्रान्ति हुई तो उनका सर्वनाश अवश्यम्भावी है। वे अपनी प्रियाओं के अंकपाश में पड़े हुए भी भयभीत रहते हैं।

14) कवि द्वारा उकेरे गए किसान के बिम्ब को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।

अथवा

बादल राग कविता में किसान को किस रूप में चित्रित किया गया है ?

उत्तर - किसान शोषकों के अत्याचार से व्यथित है। वह त्राहि-त्राहि कर रहा है और हड्डियों का ढाँचा बनकर रह गया है। उसका जीवन प्राणहीन लग रहा है। उसे अब बादलों का आश्रय है। इसलिए अपनी निर्बल भुजाएँ उठाकर क्रान्तिदूत बादल को बुला रहा है। इसलिए कि यही उसकी आकांक्षाओं को पूरा कर सकते हैं।

15) कविता में किसको शोषक कहा गया है?

उत्तर- कवि ने कविता के माध्यम से पूँजी पतियों को संबोधित किया है। ऐसे पूंजीपति जो निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करते हैं, कवि ने उन्हें शोषक कहा है।

****

3 अंक के प्रश्न

प्रश्न 1. कवि ने अट्टालिका को आतंक भवन क्यों कहा है?

उत्तर - कवि के अनुसार अट्टालिका आतंक भवन हैं। पूँजीपति बड़े-बड़े भवनों में रहते हैं तब भी भयभीत रहते हैं। उन्हें आशंका रहती है कि कहीं शोषित विद्रोह कर उनका सर्वनाश न कर दें। इसी कारण उन्हें इन भवनों में सुख की नींद नहीं आती।

दूसरे अर्थों में यह भी प्रतिपादित किया जा सकता है कि यह बड़ी बड़ी अट्टालिकाओं में रहनेवाले लोगों ने युगों-युगों से आम जन पर अन्याय किया है ,उन्हें आतंकित किया है ।इस प्रकार दोनों दृष्टियों से कवि इन्हें आतंभवन कहते है ।

प्रश्न 2. 'विप्लव - रव से छोटे ही हैं शोभा पातें पंक्ति में विप्लव-रव से क्या अभिप्राय है? छोटे ही हैं शोभा पाते- ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर-'विप्लव - रव' का शाब्दिक अर्थ बाढ़ की ध्वनि है, किन्तु प्रस्तुत पंक्ति में 'विप्लव - रव' से अभिप्राय 'क्रांति के आह्वान' के रूप में है, क्योंकि कवि एक साधारण व्यक्ति के दुःख से त्रस्त है और वह बादलों के माध्य से उन लोगों का आह्वान क्रांति के रूप में कर रहा है।'छोटे ही हैं शोभा पाते' के आधार पर कवि स्पष्ट करना चाहता है कि क्रांति हमेशा वंचितों की पक्षधर होती है। इससे आम आदमी की आकांक्षाएँ नव-निर्माण के रूप में परिलक्षित होती हैं।

प्रश्न 3. 'बादल राग' कविता दुःख से त्रस्त किसान मजदूर की नवजीवन की आशा में शान्ति के रूप बादल के आह्वान की कविता है - कविता के आधार पर प्रस्तुत कथन की पुष्टि कीजिए ।

उत्तर- सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की कविता 'बादल राग' में किसान, मजदूर बादलों को आशाभरी नजरों से देखते हैं। वे नए जीवन की उम्मीद में बादलों को क्रान्ति के रूप में देखते हैं। वे जानते हैं कि उन्हें पूँजीपतियों के शोषण से तभी मुक्ति मिलेगी जब क्रान्ति करेंगे। वस्तुतः पूँजीपतियों नेमजदूरों और किसानों का खून चूस लिया है। वे बादलों को विप्लव का वीर मानते हैं।

प्रश्न 4. 'बादल राग' कविता में निराला ने शोषितों की वेदना को स्वर दिया है - टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी ने 'बादल राग' कविता में शोषितों की पीड़ा को सशक्त शब्द दिए हैं। उसने उनकी पीड़ा को कलात्मक और सशक्त बना दिया है। कवि का मानना है कि पूँजीपतियों ने शोषितों का खून चूस लिया है। शोषितों के शरीर में केवल हड्डियाँ शेष रही हैं। अब वे क्रान्ति की आशा कर रहे हैं। उन्हें विदित है कि क्रान्ति के जीवन बाद सुखद होसकता है।

प्रश्न 5. 'बादल राग' के आधार पर धनी शोषकों की जीवन-शैलीपर टिप्पणी कीजिए। वे क्यों त्रस्त हैं?

उत्तर -बादल राग में धनी गरीब मजदूरों और किसानों का शोषण करते हैं। उनकी अट्टालिकाएँ उनके भोग-विलास के साधनों से भरपूर हैं। इन पर गरीबों और किसानों के शोषण से अर्जित धन लगा है। ये अट्टालिकाएँ आतंक भवन हैं। इनमें बैठकर ये धनिक शोषक ऐसी योजनाएँ बनाते हैं जिनसे अधिक-से-अधिक किसानों का शोषण किया जा सके। लेकिन इस वर्ग को सदा शोषितों से खतरा रहता है इसलिए ये अपनी घरों में होटे हुए भी भयभीत रहते हैं।

प्रश्न 6. **'बादल राग' के आधार पर लिखिए कि वज्र गर्जन से कौन त्रस्त होते हैं और क्यों?**

उत्तर -वज्र गर्जन से धनी और शोषक वर्ग त्रस्त होते हैं क्योंकि धनिकों को क्रान्ति के कारण अपनी धन-सम्पत्ति छिन जाने का डर सताता है, वहीं शोषित निर्धनों के जागरूक होने के कारण उनकी सुख-सुविधा छिन जाने का भय रहता है।

(7) 'बादल राग' इस कविता में प्रयुक्त प्रतीक योजना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- प्रस्तुत काव्यांश में प्रतीकात्मक भाषा का प्रभावी रूप से प्रयोग किया गया है। इसमें प्रयुक्त शब्द 'पंक' निम्न वर्ग का, 'जलज' धनी वर्ग के बच्चों का तथा 'जल-विप्लव प्लावन' क्रान्ति की भीषणता का प्रतीक है। प्राकृतिक प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग करते हुए बादल को क्रान्तिकारी योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसी तरह 'पंक' शोषित वर्ग का तथा अट्टालिका' सुविधा सम्पन्न वर्ग का प्रतीक है।

(8) बादल के लिए - विप्लव के वीर और 'जीवन के पारावारसम्बोधनों का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर -बादल के लिए कवि ने विप्लव के बादल और जीवन के पारावार दो विशेषणों का प्रयोग किया है। ये दोनों ही विशेषण बादलों के लिए प्रयुक्त हैं। बादल इस कविता में शोषित वर्ग को समाप्त करने के लिए क्रान्ति के दूत के रूप में वर्णित हैं। कवि को विश्वास है कि बादल क्रान्ति के जरिए शोषण समाप्त करेंगे और शोषित की जीवन रूपी नैया पार लगाएँगे।

9) क्रांति के अग्र दूत से क्या आशय है?

उत्तर- कवि ने बादल की तुलना शोषित वर्ग से की है, वो कहते हैं कि आसमान में जो बादल है, वो क्रान्ति के अग्नि दूत हैं l वो कहते हैं कि जो पूँजी वादी लोग निम्न वर्ग के लोगों का शोषण कर अपने लिए संपत्ति अर्जित करते हैं। ऐसे लोग निम्न आय के लोगों को दबाने की कोशिश करते हैं l लेकिन अब शोषित लोग बादल की तरह अपना गर्जन विरोध करने वाले हैं।

तुलसीदास

(कवितावली/लक्ष्मण – मूर्च्छा और राम का विलाप)

प्रश्नोत्तर (60/40 शब्द)

प्रश्न. 01 - कवितावली में उद्दृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

उत्तर:- कवितावली में उद्दृत छंदों से यह ज्ञात होता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।तुलसी अपने युग के सजग पहरेदार थे | उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। उन्होंने देखा कि उनके समय में बेरोजगारी की समस्या से मजदूर, किसान, नौकर, भिखारी आदि सभीकाम की कमी के कारण परेशान थे। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच रहे थे। सभी ओर भूखमरी और विवशता थी।सब यों कहते थे – कहाँ जाएँ ,क्या करें ?

प्रश्न -02-पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है – तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर:- तुलसी ने स्पष्ट कहा है कि पेट की आग को ईश्वर –भक्ति रूपी मेघ ही बुझा सकते है | यह बात न केवल तुलसी के युग में सत्य थी ,बल्कि आज भी सत्य है |मनुष्य का जन्म, उसका कर्म, कर्म-फल सब ईश्वर के अधीन हैं।समाज में साफ दिखाई देता है कि करोड़ो लोग काम करते है ,उनमें से कुछ ही लोग सफल होते हैं |निष्ठा और पुरुषार्थ से ही मनुष्य के पेट की आग का शमन हो सकता है। फल प्राप्ति के लिए दोनों में संतुलन होना आवश्यक है। पेट की आग बुझाने के लिए मेहनत के साथ-साथ ईश्वर कृपा का होनाभी जरूरी है।

प्रश्न -03- तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत क्यों समझी?

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ / काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।

इस सवैया में काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता?

उत्तर:-तुलसी ने यह कहने की जरूरत इसलिए समझी क्योकि उस समय के लोगों ने उनके कुल – गोत्र और वंश पर प्रश्न चिन्ह लगाए थे | कवि सांसारिक बंधनों के प्रति विरक्ति प्रकट करता है |

तुलसी इस सवैये में यदि अपनी बेटी की शादी की बात करते तो सामाजिक संदर्भ में अंतर आ जाता क्योंकि विवाह के बाद बेटी को अपनी जाति छोड़कर अपनी पति की ही जाति अपनानी पड़ती है। यदि तुलसी अपनी बेटी की शादी न करने का निर्णय लेते तो इसे भी समाज में गलत समझा जाता |यदि किसी अन्य जाति में अपनी बेटी का विवाह संपन्न करवा देते तो इससे भी समाज में एक प्रकार का जातिगत या सामाजिक संघर्ष बढ़ने की संभावना पैदा हो जाती।

प्रश्न -04-धूत कहौ… वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर:- तुलसी एक स्वाभिमानी भक्त हृदय वाले व्यक्ति है, वे किसी भी कीमत पर अपना स्वाभिमान कम नहीं होने देना चाहते | वे अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए कोई भी कीमत चुकाने को तैयार रहते है | समाज के लोगों द्वारा किए गए कटाक्षों की कोई परवाह नही करते | वे स्वयं को राम का समर्पित भक्त कहते है | इसमे भक्तहृदय तुलसी के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण है किया गया है |जात-पाँत व्यवस्था का भी खुलकर विरोध किया है| सामाजिक रीती-रिवाजों पर कड़ा प्रहार किया है, वे कहते है कि उन्हें सांसारिक मर्यादाओं से कुछ लेना देना नहीं हैं |

प्रश्न – 05- भातृशोक में हुई राम कि दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप मे रचा है |क्या आप इससे सहमत है ?तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए |

उत्तर : भ्रातृशोक में प्रभु एक सामान्य व्यक्ति का रूप धारण कर लेते हैं |वे एक सामान्य जन की तरह भाई के लिए विलाप करते हैं | वे प्रभुता को त्याग कर सच्ची मानवीय अनुभूतिओं को अभिव्यक्त करते हैं|कोई भी व्यक्ति चाहे कितना भी बड़ा और महान क्यों न हो , वह एक मानव भी होता है | मानव के हृदय की अपनी अनुभूतियाँ भी होती हैं |वह उनके वशीभूत होकर सामान्य जन की भांति व्यवहार करता है |राम विलाप करते – करते लक्ष्मण के पूर्व व्यवहार का स्मरण करते हैं | शोक में डूबे प्रभु यहाँ तक कह जाते हैं कि यदि उन्हें पता होता कि ऐसा होगा तो वे पिता कि आज्ञा को मानने से इंकार कर देते |

प्रश्न -6 -शोकग्रस्त माहौल में हनुमान जी के अवतरण को करुणरस के बीच वीररस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उत्तर :- हनुमानजी लक्ष्मण के इलाज के लिए संजीवनी बूटी लाने हिमायल पर्वत गए थे| उन्हें आने देर हो रही थी| इधर राम बहुत व्याकुल हो रहे थे | उनके विलाप से वानर सेना में शोक की लहर थी| इसी बीच हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर आ गए| वैद्य ने तुरंत संजीवनी बूटी से दवा तैयार करके लक्ष्मण को पिलाई तथा लक्ष्मण ठीक हो गए | लक्षमण के उठने से राम का शोक समाप्त हो गया | लक्ष्मण स्वयं उत्साहित वीर थे | उनके आ जाने से सेना को खोया मनोबल वापिस आ गया | इस तरह हनुमान जी के आने तथा उनके कार्यों से शोक ग्रस्त माहौल में वीररस आ गया और माहौल में कुछ परिवर्तन दिखाई देने लगा | शोक पूर्ण वातावरन हर्ष और वीरता में बदल जाता है |

प्रश्न – 7-'बोले बचन मनुज अनुसारी'- का तात्पर्य क्या है ?

उत्तर- भाई के शोक में विगलित राम का विलाप धीरे –धीरे प्रलाप में बदल जाता है ,जिसमें लक्ष्मण के प्रति राम के अंतर में छिपे प्रेम के कई कोण सहसा अनावृत हो जाते हैं। यह प्रसंग ईश्वर राम में मानव सुलभ गुणों का समन्वय कर देता है| वे मनुष्य की भांति विचलित हो कर ऐसे वचन कहते हैं जो मानवीय प्रकृति को ही शोभा देते हैं |तुलसीदास की मानवीय भावों पर सशक्त पकड़ है।दैवीय व्यक्तित्व का लीला रूप ईश्वर राम को मानवीय भावों से समन्वित कर देता है।

प्रश्न- 8 - राम ने लक्ष्मण के किन गुणों का वर्णन किया है?

उत्तर :-राम ने लक्ष्मण के निम्नलिखित गुणों का वर्णन किया है-

- लक्ष्मण राम से बहुत स्नेह करते हैं |
- वे कभी भी अपने बड़े भाई को दुखी नहीं देख सकते थे |
- उन्होंने भाई के लिए अपने माता –पिता का भी त्याग कर दिया |
- वे वन में रहकर वर्षा ,हिम, धूप आदि कष्टों को सहन कर रहे थे |
- उनका स्वभाव बहुत मृदुल था |

प्रश्न - 9 - राम के अनुसार कौन सी वस्तुओं की हानि बड़ी हानि नहीं है और क्यों ?

उत्तर :-राम के अनुसार धन ,पुत्र एवं नारी की हानि बड़ी हानि नहीं है क्योंकि ये सब खो जाने पर पुन: प्राप्त किये जा सकते हैं पर एक बार सगे भाई के खो जाने पर उसे पुन: प्राप्त नहीं किया जा सकता | हृदय में ऐसा विचार करके हे तात ,जागो तुम्हारे जैसा भाई इस जगत में नहीं मिल सकता है |

प्रश्न– 10 - पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी की क्या दशा होती है काव्य प्रसंग में इनका उल्लेख क्यों किया गया है ?

उत्तर :- राम विलाप करते हुए अपनी भावी स्थिति का वर्णन कर रहे हैं कि जैसे पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी पीड़ित हो जाता है ,उनका अस्तित्व नगण्य हो जाता है वैसा ही असहनीय कष्ट राम को लक्ष्मण के न होने से होगा |

प्रश्न– 10 - लक्ष्मण के मुर्च्छित होने पर राम क्या सोचने लगे?

उत्तर - लक्ष्मण को निहारते हुए श्री राम द्वारा सामान्य आदमी के समान विलाप करना।
हनुमान जी के आने का इंतजार करना। लक्ष्मण के कोमल स्वभाव व विनम्रता का बखान करना।

प्रश्न–11 -कुम्भकरण ने रावण को किस सच्चाई का आईना दिखाया?

उत्तर :- कुम्भकरण रावण का भाई था, वह लम्बे समय तक सोता रहता था। उसका शरीर विशाल था। देखने में ऐसा लगता था मानो काल आकर बैठ गया हो। वह मुंहफट तथा स्पष्ट वक्ता था वह रावण से पूछता है की तुम्हारे मुँह क्यों सूखे हुए है ? रावण की बात सुनने पर वह रावण को फटकार लगता है तथा उससे कहता है की अब तुम्हे कोई नहीं बचा सकता। इस प्रकार उसने रावण को उसके विनाश संबंधी सच्चाई का आइना दिखाया।

प्रश्न–12 -कुम्भकरण के द्वारा पूछे जाने पर रावण ने अपनी व्याकुलता के बारे में क्या कहा और कुम्भकरण से क्या सुनना पड़ा?

उत्तर :- कुम्भकरण के पूछने पर रावण ने उसे अपनी व्याकुलता के बारे में विस्तार पूर्वक बताया की किस तरह उसने माता सीता का हरण किया। फिर उसने बताया की हनुमान ने सब राक्षस मार डाले और महान योद्धाओ का संहार कर दिया है। ऐसी बाते सुनकर कुम्भकरण ने उससे कहा की अरे मुर्ख जगत जननी को चुराकर अब तू कल्याण चाहता है। ये संभव नहीं है।

प्रश्न – 13- हनुमान जी ने भरत से क्या कहा ?

उत्तर हनुमान जी भरत से कहा कि हे नाथ! मैं आपके प्रताप को मन में धारणकर तुरंत जाऊंगा | ऐसा कहकर और उनकी आज्ञा पाकर और भरत जी की चरणों की वंदना करके हनुमान जी चल दिए | भरत जी की भुजाओं के बल ,शील ,गुण और प्रभु के चरणों के अपार प्रेम की मन ही मन सराहना करते हुए पवनसुत हनुमान जी चले जा रहे थे |

प्रश्न -14- 'पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी' तुलसी के युग का ही नहीं आज के युग का भी सत्य हैं/ भुखमरी में किसानों की आत्महत्या और संतानों (खासकर बेटियों) को भी बेच डालने की हृदय-विदारक घटनाएँ हमारे देश में घटती रही हैं। वर्तमान परिस्थितियों और तुलसी के युग की तुलना करें।

उत्तर-

1.गरीबी के कारण तुलसीदास के युग में लोग अपने बेटा-बेटी को बेच देते थे। आज के युग में भी ऐसी घटनाएँ घटित होती है।

2.किसान आत्महत्या कर लेते हैं तो कुछ लोग अपनी बेटियों को भी बेच देते हैं। अत्यधिक गरीब व पिछड़े क्षेत्रों में यह स्थिति आज भी यथावत है।

3. तुलसी तथा आज के समय में अंतर यह है कि पहले आम व्यक्ति मुख्यतया कृषि पर निर्भर था, आज आजीविका के लिए अनेक रास्ते खुल गए हैं। आज गरीब उद्योग-धंधों में मजदूरी करके जीवन चल सकता है |

प्रश्न -15-तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना किससे की है तथा क्यों तथा मुक्ति का क्या उपाय बताया है ?

उत्तर:-

1तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना रावण से की है।

2.दरिद्रतारूपी रावण ने पूरी दुनिया को दबोच लिया है तथा इसके कारण पाप बढ़ गया है|

3.वेदों और पुराणों में कहा गया है कि जब-जब संकट आता है तब-तब प्रभु राम सभी पर कृपा करते हैं तथा सबका कष्ट दूर करते हैं।

प्रश्न 16 - उन कर्मों का उल्लेख कीजिए जिन्हें लोग पेट की आग बुझाने के लिए करते हैं?

उत्तर:- कुछ लोग पेट की आग बुझाने के लिए पढ़ते हैं तो कुछ अनेक तरह की कलाएँ सीखते हैं। कोई पर्वत पर चढ़ता है तो कोई घने जंगल में शिकार के पीछे भागता है। इस तरह वे अनेक छोटे-बड़े काम करते हैं।पेट भरने के लिए लोग धर्म-अधर्म व ऊंचे-नीचे सभी प्रकार के कार्य करते है | विवशता के कारण वे अपनी संतानों को भी बेच देते हैं।

रुबाईयाँ
(फिराक गोरखपुरी)
प्रश्नोत्तर (60/40 शब्द)

प्रश्न 1- शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता हैं?

उत्तर - रक्षाबंधन एक मीठा और पवित्र बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। वास्तव में सावन का संबंध घटा से होता है। घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से है। शायर यही भाव व्यंजित करना चाहता है कि यह बंधन पवित्र और बिजली की तरह चमकता रहे।

प्रश्न 2- ' रुबाइयाँ ' पाठ के आधार पर घर-आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य -बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।

उत्तर - कवि दीपावली के त्योहार के बारे में बताते हुए कहता है कि इस अवसर पर घर में पुताई की जाती है तथा उसे सजाया जाता है। घरों में मिठाई के नाम पर चीनी के बने खिलौने आते हैं। रोशनी भी की जाती है। बच्चे के छोटे-से घर में दिए के जलाने से माँ के मुखड़े की चमक में नयी आभा आ जाती है। रक्षाबंधन का त्योहार सावन के महीने में आता है। इस त्योहार पर आकाश में हल्की घटाएँ छाई होती हैं। राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते हुए प्रतीत होते हैं।

प्रश्न 3- 'फिराक' की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - 'फिराक' की रुबाइयों में घरेलू जीवन का चित्रण हुआ है। पाठ में कई बिंब उकेरे गए हैं। एक बिंब में माँ छोटे बच्चे को अपने हाथ में झुला रही है। बच्चे की तुलना चाँद से की गई है। दूसरे बिंब में माँ बच्चे को नहलाकर कपड़े पहनाती है तथा बच्चा उसे प्यार से देखता है। तीसरे बिंब में बच्चे द्वारा चाँद लेने की जिद करना तथा माँ द्वारा दर्पण में चाँद दिखाना आदि घरेलू जीवन के उदाहरण हैं |

प्रश्न-4 फिराक की रुबाई में भाषा के विलक्षण प्रयोग किए गए हैं-स्पष्ट करें।

उत्तर - कवि की भाषा उर्दू है, परंतु उन्होंने हिंदी और लोकभाषा का भी प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में हिंदी, उर्दू और लोकभाषा के अनूठे गठबंधन के विलक्षण प्रयोग हैं, जिसे गाँधी जी हिंदुस्तानी के रूप में पल्लवित करना चाहते थे। ये विलक्षण प्रयोग हैं-लोका देना, घुटनियों में लेकर कपड़े पिन्हाना, गेसुओं में कंघी करना, रूपवती मुखड़ा, नर्म दमक, जिदयाया बालक, रस की पुतली। माँ हाथ में आईना देकर बच्चे को बहला रही है-

देख , आईने में चाँद उतर आया है। चाँद की परछाई भी चाँद ही है।

प्रश्न 5- फिराक गोरखपुरी की रुबाइयां मां और बेटे के स्वाभाविक वात्सल्य का श्रेष्ठ उदाहरण है, स्पष्ट करें?

उत्तर– प्राकृतिक रूप से माता और पुत्र के बीच का रिश्ता वात्सल्य प्रेम का होता है | जिसके कई उदाहरण यहाँ देखे जा सकते हैं। जैसे अपने बेटे को हाथों के झूले में झूलाना, रह– रह कर हवा में उछाल देना और आंगन में बेटे को गोद में लेकर खिलाना जिससे बच्चे की हँसी गूंज उठती है | बच्चे को नहलाना , कपड़े पहनाना , उलझे हुए बालों में कंघी करना आदि माँ और बेटे के इन क्रियाओं से यह स्पष्ट होता है कि माँ और बेटे की स्वाभाविक चेष्टाओं का वर्णन है।

छोटा मेरा खेत, कवि का नाम- उमाशंकर जोशी-

(उत्तर शब्द सीमा - 60/40 शब्द)

प्रश्न-1 कविता लुटने पर भी क्यों नहीं खत्म होती?

उत्तर- जब कवि की कविता पाठकों तक पहुँचती है, तो वह खत्म नहीं हो जाती, बल्कि उसका महत्त्व और अधिक बढ़ता जाता है। ज्यों-ज्यों वह पाठकों के पास पहुँचती जाती है, वह और अधिक विकसित होती जाती है। यहाँ 'लुटने' का आशय बाँटने से है।

प्रश्न-2 'छोटा मेरा खेत' कविता के रूपक को स्पष्ट कीजिए-

उत्तर- प्रस्तुत कविता में कवि उमाशंकर जोशी जी ने कवि कर्म की तुलना कृषक के कार्य के साथ की है। किसान खेत में बीज बोता है, वह बीज अंकुरित होकर फसल बनता है और मनुष्य के पेट भरने के काम आता है। इसी तरह कवि भी कागज़ रूपी खेत पर अपने विचारों के बीज बोता जो विकसित होकर रचना का रूप धारण करते हैं। इस रचना के रस से मनुष्य की मानसिक जरूरत पूरी होती है।

प्रश्न-3 'छोटा मेरा खेत' कविता में प्रयुक्त वाक्यांश 'रोपाई क्षण की कटाई अनंतता की" को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कवि उमाशंकर जोशी जी ने छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहा है। कवि के अनुसार कवि का कर्म भी खेती की तरह ही है। परंतु खेती की फ़सल का समय निश्चित होता है। कविता का रस अनंत काल तक आनंद देता है। पकने पर फ़सल काट ली जाती है, परंतु कविता का रस कभी समाप्त नहीं होता।

प्रश्न-4 छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

उत्तर- 'छोटा मेरा खेत, कविता की प्रस्तुत पंक्तियों में कवि उमाशंकर जोशी जी ने कविता की तुलना कृषि के खेत से की है, अर्थात वे कृषि जीवन एवं कवि जीवन की एक साथ यहाँ पर तुलना करते हैं। कवि बताते हैं कि जिस तरीके से एक किसान अपने खेत में खेती करता है, बीजरोपण करता है और फिर फसल उगाता है, ठीक उसी तरह ही एक कवि भी खेती के आकार की भाँति चौकोर सफेद पेज में कविता लिखता है, उसमें अपनी कल्पना रूपी बीज बोता है एवं कविता रूपी फसल उगाता है। इस प्रकार से खेती और कवि कर्म दोनों एक समान हैं।

प्रश्न-5. 'छोटा मेरा खेत' रचना के संदर्भ में 'अंधड़' और 'बीज' क्या हैं?

उत्तर- इस कविता में कवि ने ये कहा है कि जिस तरीके से आंधी तूफान, हवा, गर्मी, वर्षा सभी कृषि के खेत को उपजाऊ बनने में, बीज को रोपित होने में मदद करते हैं। ठीक उसी तरीके से जब तक एक कवि अपनी कल्पना से, भावों से एवं विचारों से कविता नहीं लिखेगा, तब तक वह कविता जनमानस तक नहीं पहुँचेगी। लोग उस कविता को भलीभाँति समझ नहीं पाएंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि कविता का बीज बोने के लिए विचारों की आँधी आवश्यक होती है।

प्रश्न 6. 'रस का अक्षय पात्र' से कवि ने रचनाकर्म की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर- यहां अक्षय पात्र से तात्पर्य उस पात्र से है, जो कभी भी खाली नहीं हो सकता है। ठीक उसी प्रकार कविता का बीज अगर एक बार रोपित कर दिया जाता है और जब वह बीज फसल बनकर कविता का रूप धारण कर लेता है, तो उस कविता और अक्षयपात्र में कोई अंतर नहीं रहता है।

युगों-युगों तक कवि की कविता को पढ़ा जाता है, समझा जाता है एवं वह कविता लोगों के बीच हमेशा बहुचर्चित बन कर रह जाती है। यानी की कविता का रस उस अक्षयपात्र के अमृत के समान है, जो कभी भी घटता नहीं है, बढ़ता चला जाता है, क्योंकि यह साहित्य का रस है।

बगुलों के पंख
(उमाशंकर जोशी)
प्रश्नोत्तर (60/40 शब्द)

प्रश्न 1- ***'बगुलों के पंख ' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।***

उत्तर - यह सुंदर दृश्य कविता है। कवि आकाश में उड़ते हुए बगुलों की पंक्ति को देखकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करता है। ये बगुले कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की सफेद काया के समान लगते हैं। कवि को यह दृश्य अत्यंत सुंदर लगता है। वह इस दृश्य में अटककर रह जाता है। एक तरफ वह इस सौंदर्य से बचना चाहता है तथा दूसरी तरफ वह इसमें बँधकर रहना चाहता है।

प्रश्न -2- *'पाँती-बँधी' से कवि का आवश्य स्पष्ट कीजिए।*

उत्तर - इसका अर्थ है-एकता। जिस प्रकार ऊँचे आकाश में बगुले पंक्ति बाँधकर एक साथ चलते हैं। उसी प्रकार मनुष्यों को एकता के साथ रहना चाहिए। एक होकर चलने से मनुष्य अद्भुत विकास करेगा तथा उसे किसी का भय भी नहीं रहेगा।

प्रश्न 3- कवि किसे रोककर रखना चाहता है और क्यों ?

उत्तर - कवि साँझ के समय कजरारे बादलों के बीच आकाश में उड़ते बगुलों की पंक्तियों को रोकने को कहा है। इस दृश्य को देखकर उसका मन अभी नहीं भरा है। वह इस दृश्य को और देखना चाहता है। इसलिए उनको रोक कर रखने को कहता है।

प्रश्न -4 इस कविता में किस समय का वर्णन किया गया है ?

उत्तर - इस कविता में सायंकाल का मनोरम चित्रण प्रस्तुत किया गया है |

कवि साँझ के समय कजरारे बादलों के बीच आकाश में उड़ते बगुलों की पंक्तियों को रोकने को कहा है। इस दृश्य को देखकर उसका मन अभी नहीं भरा है। वह इस दृश्य को और देखना चाहता है। इसलिए उनको रोक कर रखने को कहता है।

कक्षा बारहवीं (हिंदी आधार) गद्य खंड पर आधारित 60 / 40 शब्दों में लिखे जाने प्रश्नोत्तर , पाठ की मुख्य बातें एवं प्रश्न-कोष

- **गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) – 3 अंक x 2= 6**
- **गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) – 2 अंक x 2= 4**

भक्तिन- महादेवी वर्मा

3 अंक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1:भक्तिन पाठ के आधार पर भक्तिन का चरित्र–चित्रण कीजिए।

उत्तर –'भक्तिन' लेखिका की सेविका है। लेखिका ने उसके जीवन-संघर्ष का वर्णन किया है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. परिश्रमी-भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं आदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।
2. स्वाभिमानिनी-भक्तिन बेहद स्वाभिमानिनी है। पिता की मृत्यु पर विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वारा अपमानित किए जाने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।
3. सच्ची सेविका-भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण हैं। लेखिका ने उसकी स्वामी-भक्ति देखकर उसे हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली बताया है। वह छाया की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के लिए भी तैयार है।

प्रश्न 2: भक्तिन की पारिवारिक पृष्ठभूमि पर अपने विचार प्रकट कीजिए I

उत्तर –भक्तिन झूंसी गाँव के एक गोपालक की इकलौती संतान थी। इसकी माता का देहांत हो गया था। फलत: भक्तिन की देखभाल विमाता ने की । पिता का उस पर अगाध स्नेह था। पाँच वर्ष की आयु में ही उसका विवाह हँड़िया गाँव के एक ग्वाले के सबसे छोटे पुत्र के साथ कर दिया गया। नौ वर्ष की आयु में उसका गौना हो गया। विमाता उससे ईर्ष्या रखती थी। उसने उसके पिता की बीमारी तथा मृत्यु का समाचार भी उसे समय पर नहीं भेजा।

प्रश्न 3:भक्तिन के ससुराल वालों का व्यवहार कैसा था ?

उत्तर –भक्तिन के ससुराल वालों का व्यवहार उसके प्रति अच्छा नहीं था। घर की महिलाएँ चाहती थीं कि भक्तिन का पति उसकी पिटाई करे। वे उस पर रौब जमाना चाहती थीं। इसके अतिरिक्त, भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया, जबकि उसकी सास व जेठानियों ने लड़के पैदा किए थे। इस कारण उसे सदैव प्रताड़ित किया जाता था। पति की मृत्यु के बाद उन्होंने भक्तिन पर पुनर्विवाह के लिए दबाव डाला। उसकी विधवा लड़की के साथ ज़बरदस्ती की। अंत में, भक्तिन को गाँव छोडना पडा।

प्रश्न 4: भक्तिन का जीवन सदैव दुखों से भरा रहा स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर –भक्तिन का जीवन प्रारंभ से ही दुखमय रहा। बचपन में ही माँ गुज़र गई। विमाता से हमेशा भेदभावपूर्ण व्यवहार मिला। विवाह के बाद तीन लड़कियाँ उत्पन्न करने के कारण उसे सास व जेठानियों का दुर्व्यवहार सहना पड़ा। किसी तरह परिवार से अलग होकर समृद्धि पाई, परंतु

भाग्य ने उसके पति को छीन लिया। ससुराल वालों ने उसकी संपत्ति छीननी चाही, परंतु वह संघर्ष करती रही। उसने बेटियों का विवाह किया तथा बड़े जमाई को घर-जमाई बनाया। शीघ्र ही उसकी बेटी भी विधवा हो गई। इस तरह उसका जीवन शुरू से अंत तक दु:खों से भरा रहा।

प्रश्न 5:लछमिन के पैरों के पंख गाँव की सीमा में आते ही क्यों झड़ गए ?

उत्तर –लछमिन की सास का व्यवहार सदैव कटु रहा। जब उसने लछमिन को मायके यह कहकर भेजा कि "तुम बहुत दिन से मायके नहीं गई हो, जाओ देखकर आ जाओ" तो यह उसके लिए अप्रत्याशित था। उसके पैरों में पंख से लग गए थे। खुशी-खुशी जब वह मायके के गाँव की सीमा में पहुँची तो लोगों ने फुसफुसाना प्रारंभ कर दिया कि 'हाय! बेचारी लछमिन अब आई है।" लोगों की नज़रों से सहानुभूति झलक रही थी। उसे इस बात का अहसास नहीं था कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है या वे गंभीर बीमार थे। विमाता ने उसके साथ अन्याय तो किया ही था साथ ही उसके व्यवहार में शिष्टता नहीं थी। अत: उसकी सारी खुशी समाप्त हो गई।

प्रश्न 6 : लछमिन ससुराल वालों से अलग क्यों हई ? इसका क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर –लछमिन मेहनती थी। तीन लड़कियों को जन्म देने के कारण सास व जेठानियाँ उसे सदैव प्रताड़ित करती रहती थीं। वह खुद और उसकी बेटियाँ घर, खेत व पशुओं का सारा काम करती थीं, परंतु उन्हें खाने में भेदभावपूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़ता था। जेठानियों के बेटों को दूध-घी मिलता और भक्तिन की बेटियों को चना-चबेना ही नसीब होता था I उनकी दशा नौकरों जैसी थी। अत: उसने ससुराल वालों से अलग होकर रहने का फैसला किया। अलग होते समय उसने अपने ज्ञान के कारण खेत, पशु घर आदि अच्छी चीज़ें ले लीं। परिश्रम के बलबूते पर उसका घर समृद्ध हो गया।

प्रश्न 7:भक्तिन व लेखिका के बीच कैसा संबंध था?

उत्तर –लेखिका व भक्तिन के बीच बाहरी तौर पर सेवक-स्वामी का संबंध था, परंतु व्यवहार में यह लागू नहीं होता था। महादेवी उसकी कुछ आदतों से परेशान थीं, जिसकी वजह से यदा-कदा उसे घर चले जाने को कह देती थीं। इस आदेश को भक्तिन हँसकर टाल देती थी। दूसरे, वह नौकरानी कम, जीवन की धूप-छाँव अधिक थी। वह लेखिका की छाया बनकर घूमती थी। उसका अस्तित्व घर में आने-जाने वाले, अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब व आम की तरह था तथा वह हर सुख-दुख में लेखिका के साथ रहती थी।

प्रश्न 8:लेखिका के परिचितों के साथ भक्तिन कैसा व्यवहार करती थी?

उत्तर –लेखिका के पास अनेक साहित्यिक बंधु आते रहते थे, परंतु भक्तिन के मन में उनके लिए कोई विशेष सम्मान नहीं था। वह उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती थी जैसा लेखिका करती थी। उसके सम्मान की भाषा, लेखिका के प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर होती थी और सद्भाव उनके प्रति लेखिका के सद्भाव से निश्चित होता था। भक्तिन उन्हें आकार-प्रकार व वेश-भूषा से स्मरण रखती थी या किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा।

प्रश्न 9:भक्तिन के आने से लेखिका अपनी असुविधाएँ क्यों छिपाने लगीं?

उत्तर –भक्तिन के आने से लेखिका के खान-पान में बहुत परिवर्तन आ गए। उसे मीठे और घी आदि से विरक्ति थी I उसके स्वास्थ्य को लेकर उसके परिवार वाले भी चिंतित रहते थे। घर वालों ने उसके लिए अलग खाने की व्यवस्था कर दी थी। भक्तिन जो कुछ बनाती थी उससे लेखिका को यदि कोई असुविधा होती भी थी, तो वह उसे भक्तिन को नहीं बताती थी। भक्तिन ने उसे जीवन की सरलता का पाठ पढ़ा दिया।

प्रश्न 10:लछमिन को शहर क्यों जाना पड़ा?

उत्तर –लछमिन के बड़े दामाद की मृत्यु हो गई। उसके स्थान पर परिवार वालों ने जिठौत के साले को जबरदस्ती विधवा लड़की का पति बनवा दिया। पारिवारिक द्वेष बढ़ने से खेती-बाड़ी चौपट हो गई। स्थिति यहाँ तक आ गई कि लगान भी नहीं चुकाया गया। जब जमींदार ने लगान न पहुँचाने पर भक्तिन को दिनभर कड़ी धूप में खड़ा रखा तो उसके स्वाभिमानी हृदय को गहरा आघात लगा। यह उसकी कर्मठता के लिए सबसे बड़ा कलंक बन गया। इस अपमान के कारण वह दूसरे ही दिन कमाई के विचार से शहर आ गई।

बाजार दर्शन - जैनेन्द्र कुमार

लघुउत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक)

प्रश्न 1)-बाज़ारुपन से क्या तात्पर्य है ? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं ?

उत्तर1) बाजारुपन से तात्पर्य है जरूरत कम और दिखावा ज्यादा होना | इससे बाजार में कपट बढ़ता है ,लोगों में अपनापन नहीं रहता फलस्वरूप आपस में उचित व्यवहार में कमी आ जाती है । ग्राहक और विक्रेता के संबंध सिर्फ व्यावसायिक होते हैं ,और इस तरह से एक को हानि पहुंचा कर दूसरा अपना लाभ उसमें देखता है । वही व्यक्ति बाजार को सार्थकता दे सकते हैं , जो अपनी आवश्यकताओं को ठीक- ठीक समझते हैं और बाजार का सही उपयोग करते हैं ।यदि हम बाजार की चमक -दमक में फंस कर रह गए तो वह हमे असंतोष ,तृष्णा , घृणा एवं ईर्ष्या से घायल कर बेकार बना डालता है।

प्रश्न 2) "जहां तृष्णा, है बटोर रखने की स्पृहा है वहां उस बल का बीज नहीं है ।"यहां लेखक ने किस बल की चर्चा की है ?

उत्तर2) लेखक ने संतोषी स्वभाव के व्यक्ति के आत्मबल की चर्चा की है। दूसरे शब्दों में कहा जाए कि मन में संतोष है तो व्यक्ति दिखावे और ईर्ष्या से दूर रहता है।उसमे संचय करने की प्रवृत्ति देखने को नहीं मिलती।

प्रश्न 3) लेखक ने बाजार का जादू किसे कहा है ? इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर 3)बाजार की चमक- दमक के चुंबकीय आकर्षण को बाजार का जादू कहा गया है । यह जादू आंखों की राह कार्य करता है । बाजार के इसी आकर्षण के कारण ग्राहक सजी-धजी चीजों को आवश्यकता न होने पर भी खरीदने को विवश हो जाता है।

प्रश्न 4) किस प्रकार के लोग बाजार को सार्थकता देते हैं?

उत्तर :बाजार को सार्थकता वही व्यक्ति देते हैं जो अपनी आवश्यकता को जानते हैं। वे बाजार की चीजें खरीदने हैं जो बाजार का दायित्व है । ऐसे व्यक्ति बाजार के जादू में नहीं फंसते

प्रश्न 5): परचेज़िंग पॉवर का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर परचेजिग पॉवर का तात्पर्य है खरीदने की शक्ति | यह लोग बाजार को विनाशक शक्ति प्रदान करते हैं। वह निरर्थक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाते हैं। ऐसे व्यक्ति बाजार की जादुई आकर्षण से बच नहीं पाते।

प्रश्न 6) बाज़ारवाद परस्पर सद्भाव में कमी कैसे लाता है?

उत्तर :बाजारवाद परस्पर सद्भाव में उस समय कमी लाता है जब व्यापार में कपट आ जाता है। कपट मनुष्य के अंतर्गत तब उत्पन्न होता है जब दिखावे के लिए निरर्थक वस्तुएं खरीदी जाती है। और एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखाई देता है।

प्रश्न 7):चाह का मतलब अभाव क्यों कहा गया है?

उत्तर :चाह मायने इच्छा ,जो बाजार के मूक आमंत्रण से हमें अपनी ओर आकर्षित करती है, तब हमें या लगने लगता है कि हमारे पास इस चीज का अभाव है। व्यक्ति सोचता है यहां कितना अतुलित है और मेरे यहां कितना परिमित | वास्तव मे चाह का उत्पन्न होना ही इस बात को स्पष्ट करता है कि हमारे पास अभाव है।

प्रश्न 8) संयमी लोग किसे कहा जाता है ?

उत्तर : जो लोग अपने मन पर संयम रखते हैं और बाजार के मोह जाल में नहीं फंसते । वे केवल उन्हीं वस्तुओं को खरीदते हैं जो वास्तविक रूप से आवश्यक है । ऐसे लोग फिजूल खर्च नहीं करते।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 3 अंक)

प्रश्न1) भगतजी बाजार और समाज को किस प्रकार सार्थकता प्रदान कर रहे हैं ?

उत्तर 1) भगतजी के मन में सांसारिक आकर्षणों के लिए कोई तृष्णा नहीं है। वे संचय, लालच और दिखावे से दूर रहते हैं ।बाजार और व्यापार उनके लिए आवश्यकताओं की पूर्ति का एकमात्र साधन है भगत जी के मन का संतोष और निस्पृह भाव उनके श्रेष्ठ उपभोक्ता और विक्रेता होने के स्वभाव को दर्शाता है।

निम्नलिखित बिंदु उनके व्यक्तित्व के सशक्त पहलू को उजागर करते हैं

1) पंसारी की दुकान से केवल जीरा और नमक खरीदना

2)निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिए निकलना।

3) छह आने की कमाई होते ही चूरन बेचना बंद कर देना

4)बचे हुए चूरन को बच्चों को मुफ्त बांट देना।

5) सभी का जय - जय राम कहकर स्वागत करना।

6)बाजार की चमक-दमक से आकर्षित ना होना।

7) समाज को संतोषी जीवन की शिक्षा देना।

प्रश्न 2)निम्नलिखित के आशय स्पष्ट करें -

मन खाली होना ,मन भरा होना, मन बंद होना

उत्तर 2) मन खाली होना - मन में कोई निश्चित वस्तु खरीदने का लक्ष्य ना होना निरुद्देश्य बाजार जाना और व्यर्थ की चीजों को खरीद कर लाना।

मन भरा होना,- मन लक्ष्य से भरा होना। जिसका मन भरा हो वही भली- भांति जानता है कि उसे बाजार से कौन सी वस्तु खरीदनी है, वह अपनी आवश्यकता की चीज खरीद कर बाजार को सार्थकता प्रदान करता है।

मन बंद होना- मन में किसी भी प्रकार की इच्छा को ना आने देना, मन को बलपूर्वक बंद करना अर्थात अपनी इच्छाओं को दबा देना ।

प्रश्न 3) बाजार को जादू क्यों कहा गया है? इसकी क्या मर्यादा है?

उत्तर 3) जिस प्रकार जादू हमको अपने नियंत्रण में कर लेता है उसी प्रकार बाजार के रूप का भी जादू हमारे ऊपर अपना नियंत्रण जमा ही लेता है। जैसे लोहे पर चुंबक का जादू चलता है ,वैसे ही खरीददार पर बाजार का जादू चलता है मगर इस जादू की भी कुछ मर्यादा है ।यह

उन्हीं लोगों पर असर करता है जिनका मन खाली हो और जेब भरी हो । जिस प्रकार चुंबक किसी अन्य धातु पर अपना जादू नहीं दिखाता उसी प्रकार बाजार भी असंतुष्ट धनिक वर्ग को ही अपने वश में कर पाता है ,यही इसकी मर्यादा है।

प्रश्न4) स्त्री की आड़ में किस सच को छुपाया जाता है?

उत्तर :स्त्री की आड़ में यह सच छुपाया जाता है कि महाशय के पास भरा हुआ मनीबैग है अतः पैसे की गर्मी स्वाभाविक है। पैसे की यही गर्मी जिससे वे अपनी एनर्जी साबित करने के लिए स्त्री को अनाप-शनाप खरीदने देते हैं।

प्रश्न 5) किस हठ को अकारथ कहा गया है?

उत्तर :आंख फोड़कर लोभनीय के दर्शन से बचना एक प्रकार का अकारथ उपाय है ।इसमें केवल हठ है इसलिए ऐसी दशा अकारथ है ।सार्थकता तो तब है जब सुख के साधन सामने हो, पर हम उनकी उपेक्षा कर सकें।

प्रश्न 6) पैसे की व्यंग्य शक्ति को किस उदाहरण से स्पष्ट किया गया है ?

उत्तर :पैसे की व्यंग्य शक्ति को स्पष्ट करते हुए लेखक लिखते हैं कि मैं पैदल चल रहा हूं ।मेरे पास से धूल उड़ाती एक मोटर गुजरती है, मुझे लगता है कोई मुझे आंखों में उंगली देकर दिखा रहा है, देखो उसके पास वह मोटर है और तुम उससे वंचित हो। ऐसा भाव मन में आते ही हम स्वयं की किस्मत और मां-बाप को कोसने लग जाते हैं। कृतघ्नता का भाव उत्पन्न हो जाता है |

प्रश्न 7) :भूमंडलीकरण के इस दौर में भगत जी जैसे लोग क्या प्रेरणा देते हैं ?

उत्तर: भूमंडलीकरण के इस दौर में भगत जी जैसे लोग समाज को प्रेरणा देते हैं कि बाजार के जादू से हमें प्रभावित नहीं रहना चाहिए। व्यर्थ की प्रतिस्पर्धा में पड़कर अनावश्यक वस्तुओं की खरीददारी नहीं करना चाहिए। हमें सिर्फ वही चीजें खरीदनी चाहिए जो वास्तव में हमारी जरूरत है और जब हम ऐसा करते हैं तो वास्तव में हम बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं।

काले मेघा पानी दे- धर्मवीर भारती

प्रश्न 1- लोगों ने लड़कों की टोली को मेंढक-मंडली नाम किस आधार पर दिया ? यह टोली अपने आपको इंद्र सेना कहकर क्यों बुलाती थी?

उत्तर: बारिश न होने से सूखते गांवों में त्राहि-त्राहि करते लोगों और पशु-पक्षियों की पुकार को सुन कर बादलों से पानी मांगने निकल पड़ती है बच्चों की मंडली जो स्वयं को वर्षा के देवता 'इन्द्र' की सेना मानकर 'इंदर सेना के नाम से निकलती है | बच्चों का मानना था कि वे इंद्र की सेना के सैनिक थे और वे इन्द्र देवता से पानी माँगते है । इसलिए उन्हें लगता था कि इंद्र सारा पानी उन्हें देंगे।

यह किशोरावस्था के बच्चों की मंडली महिलाओं द्वारा फेंके गए पानी के कीचड़ में सारा शरीर लपेट लेती है | इनके इसी रूप को देख कर कुछ लोगों ने इन्हें 'मेढक-मंडली' का नाम दे दिया है |

प्रश्न 2- "पानी दे, गुड़धानी दे"- मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है ?

उत्तर: गुड़धानी एक खाद्य पदार्थ है , जिसको गुड़ और अनाज के मिश्रण से बनाया जाता है। गली के बच्चें बादलों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी भी माँगते हैं। यहाँ 'गुड़धानी' का मतलब गन्ना और अनाज है। पानी प्यास बुझाता है व अच्छी बारिश से ईख और धान पैदा होता है। गाँव की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित होती है, जो वर्षा पर निर्भर है। जब अच्छी बारिश होगी , तभी अच्छी फ़सल होगी और फिर लोग झूमेंगे इसलिए बच्चें पानी के साथ साथ गुड़धानी भी माँग रहे है।

प्रश्न 3: त्याग तो वह होता..... उसी का फल मिलता है। अपने जीवन के किसी प्रसंग से इस सूक्ति की सार्थकता समझाइए।

उत्तर: त्याग का भाव सर्वोपरि होता है। त्याग कहता है कि दूसरों की भलाई के लिए अपना स्वार्थ छोड़कर किसी और की मदद करो। त्याग से बढ़कर कोई सुख नहीं , कोरोना काल में हमने ऐसे कई दंपतियों को देखा और सुना जिन्होंने अपनी गाढ़ी मेहनत की कमाई को जरूरतमंदों के पेट की आग बुझाने में स्वाहा कर दिया और अपने भविष्य के बारे में एक बार भी नहीं सोचा | कई ऐसे लोग थे जो लोगों के आने जाने की व्यवस्था में लगे रहे और राह चलते लोगों को उनके गंतव्य तक पहुँचने में उनकी भरपूर सहायता की |

प्रश्न 4 ' गगरी फूटी बैल पियासा' इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है?

उत्तर: 'गगरी फूटी बैल पियासा' इंद्र सेना के खेलगीत में ख़ासकर इस पंक्ति में बैल को प्रमुखता दी गयी है। बैल हमारी कृषि संस्कृति का प्रमुख हिस्सा है। बैल भारतीय कृषि प्रणाली और संस्कृति की रीढ़ हैं। बैल खेतों की जुताई कर के उपज को फलदायी बनाता है। यदि वे प्यासे रहेंगे तो कृषि नहीं हो सकती।

प्रश्न 5 जीजी ने इंद्र सेना पर पानी फैंके जाने को किस तरह सही ठहराया ?

उत्तर: जीजी ने इंद्र सेना पर पानी फेंके जाने के निम्नलिखित तर्क दिए -

(क) जीजी ने कहा कि कुछ पाने के लिए पहले कुछ चढ़ावा देना पड़ता है। उन्होंने कहा इंद्र देव को पानी का अर्घ्य चढ़ाने से जब वे प्रसन्न होंगे तभी वे वर्षा के माध्यम से पानी देंगे।

(ख) केवल उसी दान का फल प्राप्त होता है जो त्याग भावना से दिया गया हो। जिस वस्तु की सबसे ज़्यादा आवश्यकता होती है उसी को दान में देने से फल की प्राप्ति होती है।

(ग) जिस प्रकार किसान फ़सल उगाने के लिए धरती में सबसे अच्छे बीजों का दान देकर बुआई करता है उसी प्रकार पानी वाले बादलों से पानी पाने के लिए इंद्र सेना पर पानी डालकर पानी की बुआई की जाती है।

प्रश्न 6 इंद्र सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है?

उत्तर: भारतीय समाज में गंगा को माँ की तरह पूजा जाता है। भारत के इतिहास में गंगा का धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व है। गंगा के अंदर पानी नहीं अमृत जल बहता है और गंगा ने तो न जाने कितनी सभ्यताओं और संस्कृतियो को अपने आगे गिरते और उभरते देखा है। सभी जलों में गंगा के जल को सपसे पवित्र व सर्वोतम माना जाता है। इसीलिए इंद्र सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है।

पहलवान की ढोलक – फणीश्वर नाथ रेणु

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 3 अंक)

प्रश्न) लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा कोई गुरु नहीं, यही ढोल है?

उत्तर 1) जिस दिन लुट्टन पहलवान ने पहली बार शेर के बच्चे नामक नामी पहलवान को हराया था , उसी दिन से सभी लोगों ने उसके पक्ष में बोलना प्रारंभ कर दिया था | लुट्टन को संबल एकमात्र ढोल की थाप से मिल रहा था, उसी के सहारे उसने उस दिन मैदान में जीत हासिल की थी | ढोल की हर थाप उसका मार्गदर्शन करती प्रतीत हो रही थी | इस आधार पर वह दाँव लगाता रहा और विजयी हुआ और विजय प्राप्ति के बाद उसने दौड़कर सबसे पहले ढोल को प्रणाम किया था | उसी दिन से ढोल उसका मार्गदर्शक साथी बन गया था, इसी के बल पर वह सारी कुश्तियाँ जीतता और उसे अपना गुरु मानता था|

प्रश्न 2) पहलवान की ढोलक कहानी के किस - किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर 2) ' पहलवान की ढोलक ' कहानी लुट्टन के इर्द-गिर्द घूमती है | सबसे पहले बचपन में उनके माता - पिता की मृत्यु हो गई , सास ने उनका पालन पोषण किया | शेर के बच्चे नामक पहलवान चाँद सिंह से कुश्ती जीतने के बाद राज दरबार में राज पहलवान पद पर घोषित किया गया | जिंदगी आराम से कटती रही| दो बेटे हुए ,लेकिन अल्पायु में ही पत्नी स्वर्ग सिधार गई| उसने अपने बेटों को भी अपने जैसा पहलवान बनाया| जीवन के 15 वर्ष राजा की छत्रछाया में सुखपूर्वक भोगते हुए बिताएं | दुर्भाग्य से राजा का निधन हो गया, उनके पुत्र ने उन पर होने वाले खर्च को फ़िज़ूलखर्ची माना और अखाड़े बंद करा दिए| राज पहलवान की ख़ुराक पर उसे खर्चे ज्यादा लगा। महामारी की चपेट मे आने पर उसके दोनों बेटों की मृत्यु हो गई |चार-पांच दिन बाद उसने भी अपने ढोल के साथ इस संसार से विदा ले ली |

प्रश्न :3) पहलवान की ढोलक की आवाज़ का पूरे गांव पर क्या असर होता था?

उत्तर:3) पहलवान की ढोलक की आवाज़ गांव भर के लोगों को , जो भयंकर कष्ट और पीड़ा झेल रहे थे, ललकारती और चुनौती देती थी। संध्या समय से प्रातः काल तक ढोल पर बजते - " चट , गिड धा 'यानि आ जा भिड़ जा , उठा पटक दे - के स्वर सूनी परेशान रातों में सन्नाटे को चीरते रहते। ये स्वर मृतप्राय गाँव के लिए संजीवनी शक्ति का संचार करते थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक)

प्रश्न 1) पहलवान की ढोलक के आधार पर लुट्टन सिंह को उसकी पहलवानी के लिए कहां तक जाना जाता था ?

उत्तर 1) लुट्टन सिंह पहलवान ने पंजाब के पहलवान चांद सिंह को हराकर राजा के यहां अपना स्थान सुनिश्चित कर लिया था। पहलवान चांद सिंह "शेर के बच्चे" के नाम से प्रसिद्ध था। अतः वह कहता था कि उसे ऑल ऑल इंडिया के लोग जानते हैं ,परंतु वास्तव में उसके जिले की सीमा के अतिरिक्त उसका ऑल इंडिया और कहीं नहीं था।

प्रश्न 2) कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था पहलवानों को राजा लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था -ऐसी स्थिति अब क्यों नही है?

उत्तर 2) पहले कुश्ती या दंगल राजाओं के प्रिय शौक हुआ करते थे। राजा लोक कलाकारों को सम्मान देते थे और वही मनोरंजन के साधन भी हुआ करते थे ,परंतु आज स्थिति बदल गई है। मनोरंजन के अन्य अनेक साधन प्रचलित हो गए हैं |

प्रश्न 3) :महामारी से ग्रस्त गांव की रात्रि की विभीषिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर : गाँव में गरीबी थी। मलेरिया और हैजे से लोग मौत के मुंह में जा रहे थे। रोज दो - तीन लाशें उठती थीं ।रात को सन्नाटा रहता था ,जिसे सियारो और उल्लूओ की आवाजें और भी भयानक बना देती थी । बीमार लोगों के कराहने, उल्टी करने और बच्चों के कमजोर कंठ से निकली मां की करुण पुकार रात्रि की विभीषिका को और बढ़ा देती थीं।

शिरीष के फूल - हजारी प्रसाद द्विवेदी

3 अंक के प्रश्न

प्रश्न 1) लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत क्यों कहा है ?

उत्तर : काल पर विजय प्राप्त करनेवाले को कालजयी कहा जाता है I शिरीष का वृक्ष अवधूत की भांति वसंत के आने से लेकर भाद्रपद मास तक बिना किसी परेशानी के पुष्पित होता रहता है I जब ग्रीष्म ऋतु में पूरी पृथ्वी अग्निकुंड की तरह जलने लगती है, लू के कारण हृदय सूखने

लगता है, उस समय भी शिरीष का वृक्ष कालजयी अवधूत की तरह जीवन में विजेता होने का प्रमाण दे रहा होता है I वह संसार के सभी प्राणियों को धैर्यशील, चिंता रहित व कर्त्तव्यशील बने रहने की प्रेरणा देता है I यही कारण है कि लेखक इसे संन्यासी की तरह मानता है I

प्रश्न 2)"हाय वह अवधूत आज कहाँ है ?"- ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है, कैसे ?

उत्तर : "हाय वह अवधूत आज कहाँ है"- लेखक ने यह कथन निबंध के अंत में कहा है I इस पंक्ति के माध्यम से लेखक कहता है कि महात्मा गांधी शिरीष के फूल की भाँति थे I लेखक के अनुसार, प्रेरणादायी और आत्मविश्वास रखने वाले लोग अब नहीं रहे हैं I अब केवल शरीर यानि भौतिकता को प्राथमिकता देने लगे हैं। ऐसे लोगों में आत्मविश्वास बिलकुल नहीं होता I ऐसे लोग मन की सुंदरता पर ध्यान नहीं देते I लेखक ने शिरीष के फूल के माध्यम से वर्तमान सभ्यता के यथार्थ का चित्रण किया है I

प्रश्न 3) लेखक अधिकार-लिप्सा के विषय में क्या बताना चाहता है ?

उत्तर : लेखक के अनुसार भारत में अधिकार-लिप्सा की भावना बहुत प्रबल है I यहाँ के लोग तब ही अपनी जगह छोड़ते हैं , जब उन्हें दूसरों के द्वारा धक्का दिया जाता है I यह स्थिति राजनीति, साहित्य तथा अन्य संस्थानों में पूर्णतः दिखाई देती है I पुराने लोग अधिकार-लिप्सा में नयी पीढ़ी को उनका अधिकार तब तक नहीं सौंपते , जब तक नयी पीढ़ी ज़बरदस्ती अपना अधिकार और स्थान पाने की चेष्टा नहीं करती I

प्रश्न4) कालिदास ने शिरीष की कोमलता और द्विवेदी जी ने उसकी कठोरता के विषय में क्या कहा है ?

उत्तर : कालिदास कहते हैं कि शिरीष का पुष्प केवल भौरों के पदों का कोमल दबाव ही सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं I लेकिन द्विवेदी जी इससे सहमत नहीं हैं I उनके विचार से इन्हें शिरीष को इतना कोमल मानना भूल है I इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी अपना स्थान नहीं छोड़ते I जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं करते, तब तक ये डटे रहते हैं I

प्रश्न 5) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के संदर्भ में महात्मा गांधी का स्मरण क्यों किया ?

उत्तर : शिरीष के संदर्भ में गांधी जी की कुछ विशेषताओं में समानता दिखने के कारण लेखक को गांधी जी की याद आई I शिरीष के समान ही गांधी जी में भी कठोरता से साथ-साथ कोमलता का गुण विद्यमान है I जिस प्रकार शिरीष वायुमंडल से रस खींचता है उसी तरह गांधी जी भी अपने परिवेश से रस खींचकर कोमल और कठोर बने I जन-सामान्य के साथ कोमलता का व्यवहार करने वाले गांधी जी कभी-कभी देश व समाज के हित में अत्यधिक कठोर भी बन जाते थे I

समय के अनुरूप, परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेते हुए गांधीजी को भी स्वतन्त्रता आंदोलन को सही ढंग से आगे बढ़ाने के लिए अपने व्यवहार में कोमलता और कठोरता दोनों को अपनाना पड़ता था I शिरीष लू, धूप और गर्मी को सहता हुआ फलता - फूलता है , इसी तरह गांधी जी भी स्वाधीनता आंदोलन के दौरान होने वाली हिंसा, खून-खराबा, अग्निदाह आदि हिंसात्मक गतिविधियों के बीच अटल और स्थिर बने रहे I

प्रश्न 6) शिरीष आज के संदर्भ में हमें क्या सीख देता है ? सोचकर लिखिए I

उत्तर : 'शिरीष के फूल' निबंध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने परोक्ष रूप में हमें यह संदेश दिया है कि जिस प्रकार शिरीष का फूल लू, भीषण गर्मी, आँधी और शुष्क मौसम में भी खिलकर अपना सौन्दर्य बिखेरता है, उसी तरह हमें भी जीवन के संघर्षों, विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन जीना चाहिए I हमारी जिजीविषा ऐसी होनी चाहिए कि जब हमें कहीं से भी पोषण न मिल पाये, सांत्वना और सौहार्द की नमी न मिल पाये, तब हम अपने आत्मबल से पोषण पा सकें ताकि हम विकट समय में भी हृदय में कोमल भावनाओं और जीवन के सौंदर्य को बनाए रखने में सक्षम हो सकें I

प्रश्न 7) 'शिरीष के फूल' पाठ का उद्देश्य स्पष्ट करें I

उत्तर : पाठ के माध्यम से लेखक ने मानव की अजेय जिजीविषा और कलह के बीच धैर्यपूर्वक, लोक के साथ चिंतारत, कर्त्तव्यशील बने रहने के महान जीवन-मूल्यों को स्थापित किया है I साथ ही लेखक ने पुराने लोगों की अधिकार-लिप्सा को शिरीष के फूलों के साथ जोड़कर बताना चाहा है कि समय रहते इस अधिकार लिप्सा का त्याग कर नयी पीढ़ी को आगे आने देना चाहिए I इस अधिकार-लिप्सा के क्षेत्र में राजनीति, साहित्य तथा अन्य संस्थानों की वास्तविकता को भी उजागर किया गया है I पुरानी और नयी पीढ़ी के बीच के द्वंद्व को इस निबंध में लेखक ने बड़ी सहजता से पाठकों तक पहुँचाया है I

2 अंक के प्रश्न

1) लेखक के मन में शिरीष किस तरह की हिलोर पैदा करता है ?

उत्तर : लेखक का मानना है कि शिरीष के पेड़ बड़े छायादार और बड़े होते हैं I इनकी डाल बकुल की डाल से भी कमज़ोर होती है I संस्कृत साहित्य में इनके फूलों को बहुत कोमल माना गया है I ये फूल सौंदर्य वृद्धि करते हैं और नयेपन के स्वागत का आमंत्रण देने वाले फूल हैं I शिरीष के सुंदर, रेशेदार कोमल पुष्प लेखक के हृदय में हिलोर पैदा करते हैं I

2) लेखक के अनुसार कवि में किन-किन विशेषताओं का होना अनिवार्य है ?

उत्तर : लेखक ने कवि की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं –

- लेखक के अनुसार अवधूत वज्र से भी कठोर तथा फूलों से भी कोमल होते हैं I कवि को भी अवधूत की भाँति अनासक्त होना चाहिए I
- कवि का दृष्टिकोण समदर्शी होना चाहिए I
- उसकी जीवन शैली फक्कड़ जीवन शैली हो I
- कवि में समरसता व मस्ती का गुण होना चाहिए ताकि वह जनकल्याण के कार्यों को सम्पन्न कर सके I
- निज स्वार्थ का न सोचकर वह परमार्थ का सोचे I

प्रश्न 3) शिरीष के फूलों की क्या विशेषताएँ लेखक ने बताई हैं ?

उत्तर : शिरीष के फूलों की विशेषताएँ :

- शिरीष के फूल जेठ मास की भयंकर गर्मी में भी फूलने की हिम्मत करते हैं I
- आँधी, तूफान तथा लू भी इन फूलों की जिजीविषा का लोहा मानते हैं I
- अमलतास कनेर की तरह कुछ दिन खिलते हैं जबकि शिरीष के फूल भाद्रपद मास तक अपना सौंदर्य बिखरते रहते हैं I

प्रश्न 4) लेखक पाठ में किस बात से विस्मय-विमूढ़ हो जाता है ?

उत्तर : लेखक ने पाठ में कालिदास का प्रसंग लिया है कि कवि कालिदास ने शिरीष के फूलों की महिमा का वर्णन किस तरह किया है I लेखक कालिदास के एक –एक श्लोक को पढ़कर विस्मित हो जाता है I शिरीष के फूल के प्रसंग में एक उदाहरण लिया गया है – शकुंतला कालिदास के सुंदर हृदय से निकली थी I कवि ने उसके सौंदर्य-वर्णन में कोई कंजूसी नहीं की I राजा दुष्यंत भी भले लगते थे I उन्होने शकुंतला का चित्र बनाया और चित्र को बार-बार देखकर उन्हें लगता कि चित्र में कोई कमी रह गई है I बाद में उन्हें समझ में आया कि वे शकुंतला के कानों में शिरीष के फूल को चित्रित करना भूल गए थे , जिसके केसर गंडस्थल तक लटके हुए थे I

प्रश्न 5) हजारी प्रसाद द्विवेदी के द्वारा नेताओं और कुछ पुराने व्यक्तियों की अधिकार-लिप्सा पर किए गए व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए I

उत्तर : लेखक को शिरीष के नए फूल-पत्तों और पुराने फूलों को देखकर उन नेताओं की याद आती है, जो बदले हुए समय को नहीं पहचानते हैं तथा जब तक नई पीढ़ी उन्हें धक्का नहीं मारती तब तक वे अपने स्थान पर जमे ही रहते हैं I नेताओं को स्वयं ही समय की गति को देखते हुए अपने स्थान को रिक्त कर देना चाहिए, परंतु ऐसा होता नहीं है I

श्रम विभाजन और जाति - प्रथा/ मेरी कल्पना का आदर्श समाज

प्रश्न 1- जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आम्बेडकर के क्या तर्क है?

उत्तर - लेखक जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप नहीं मानता क्योंकि यह विभाजन अस्वाभाविक है । यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें व्यक्ति की क्षमता की उपेक्षा की जाती है । यह केवल माता - पिता के सामाजिक स्तर का ध्यान रखती है । व्यक्ति के जन्म से पहले ही श्रम विभाजन होना अनुचित है। जाति प्रथा व्यक्ति को जीवन भर के लिए एक ही व्यवसाय से बाँध देती है । पेशा उपयुक्त या अनुपयुक्त कैसा भी हो , करने के लिए व्यक्ति बाध्य होता है । संकट के समय भी पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती, भले ही मनुष्य को भूखा मरना पड़े।

प्रश्न 2- जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोज़गारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती है ? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर - जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती, जो उसका पैतृक पेशा न हो , भले ही वह उस पेशे में पारंगत हो । उद्योग धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी - कभी अकस्मात् ऐसे परिवर्तन होते हैं कि व्यक्ति पेशा बदलने को बाध्य होता है । ऐसे में यदि जाति प्रथा पेशा न बदलने दे तो भुखमरी और बेरोज़गारी आएगी ही ।

आज भयंकर जाति प्रथा के बाद भी ऐसी बाध्यता नहीं है। लोग पैतृक व्यवसाय त्याग कर नए पेशे में जा रहे हैं । जो लोग पैतृक व्यवसाय से ही जुड़े हैं , वे या तो स्वेच्छा से हैं अथवा अन्य क्षेत्र की दक्षता के अभाव के कारण कार्य कर रहे हैं ।

प्रश्न 3- लेखक के मत से दासता की व्यापक परिभाषा क्या है?

उत्तर - लेखक के अनुसार दासता केवल क़ानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता । दासता में वह स्थिति भी सम्मिलित हैं जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यही स्थिति क़ानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती हैं । उदाहरणार्थ जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग का होना संभव है यहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं ।

प्रश्न 4- शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता सम्भावित रहने के बावजूद आम्बेडकर समता को ही एक व्यवहार्य सिद्धान्त मानने का आग्रह क्यों करते हैं ? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं ?

उत्तर- डॉक्टर अंबेडकर यह जानते हुए भी कि शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक परंपरा की दृष्टि से मनुष्य में असमानता का होना संभव है ,समता के व्यवहार्य सिद्धांत को मानने का आग्रह करते हैं । इसके पीछे लेखक का तर्क है कि समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम

उपयोगिता प्राप्त करनी है , तो समाज के सभी सदस्यों को आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएँ। राजनीतिज्ञों को भी सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने के लिए बराबर अवसर देने चाहिए। उनका तर्क है कि वंश में जन्म लेना या सामाजिक परंपरा व्यक्ति के वश में नहीं है अतः उस आधार पर निर्णय लेना उचित नहीं है।

प्रश्न 5- सही में आम्बेडकर ने भावात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर - हम लेखक से पूरी तरह सहमत हैं। सहमति का कारण यह है कि कुछ लोग किसी वंश में पैदा होने के कारण ही उत्तम व्यवहार के हक़दार बन जाते हैं। तनिक विचार करें, उसमें उनका अपना क्या योगदान है। सामाजिक परिवेश भी व्यक्ति को सम्मान दिला देता है, उसमें भी व्यक्ति की क्षमता का मूल्यांकन नहीं होता। मनुष्य की महानता उसके प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप तय होनी चाहिए। मनुष्य के प्रयत्नों का भी सही मूल्यांकन तभी हो सकता है, जब सभी को समान अवसर मिले। उदाहरण के लिए , गाँव के अथवा नगरपालिकाओं के विद्यालयों में पढ़ने वाले बालक महंगे स्कूलों में पढ़ने वालों का मुक़ाबला कैसे कर सकते हैं ? अतः पहले जातिवाद का उन्मूलन हो और फिर भौतिक स्थितियां व जीवन सुविधाएँ समान हों। तब जो श्रेष्ठ सिद्ध हो , वही उत्तम व्यवहार के हक़दार हों।

प्रश्न 6- जाति प्रथा और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर बताइए।

उत्तर - जाति प्रथा और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर यह है कि श्रम विभाजन श्रमिकों के विभिन्न वर्गों में स्वाभाविक रूप से विभाजन करता है ,जबकि जाति प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन करने के साथ - साथ उन्हें एक - दूसरे की तुलना में ऊँचा- नीच भी क़रार देती है।

प्रश्न 7- जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक अंग न मानने के पीछे अंबेडकर का क्या तर्क था ?

उत्तर- जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक अंग न मानने के पीछे डॉक्टर अंबेडकर के निम्नलिखित तर्क थे -

1. जाति - प्रथा श्रम - विभाजन के साथ - साथ श्रमिक विभाजन का रूप लिए हुए है।
2. श्रम विभाजन निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है , परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती।
3. भारत की जाति प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती , बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को दूसरे की अपेक्षा ऊँचा नीचा भी क़रार देती है , जो विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।
4. जाति प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए तो यह सामाजिक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है

प्रश्न 8- आदर्श समाज के तीन तत्वों से एक भ्रातृता को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं ? आप इस भ्रातृता शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे / समझेंगी?

उत्तर - आदर्श समाज के तीसरे तत्व भ्रातृता पर विचार करते समय लेखक ने भले ही स्त्रियों का अलग से उल्लेख नहीं किया है किन्तु वह समाज की बात कर रहा है। समाज तो स्त्री- पुरुष दोनों से ही बनता है , अतः सम्मिलित करने या न करने की बात व्यर्थ है।

भ्रातृता शब्द व्यवहार में प्रचलित नहीं है। यह संस्कृतनिष्ठ शब्द है, अतः इसके स्थान पर भाईचारा शब्द उचित रहेगा।

प्रश्न 9- आम्बेडकर की कल्पना की आदर्श समाज की तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर - डॉक्टर आम्बेडकर की कल्पना का आदर्श समाज स्वतंत्रता , समता और भ्रातृता अर्थात् भाईचारे पर आधारित है। उनके अनुसार ऐसे समाज में सभी के लिए एक जैसा मानदंड तथा उसकी रुचि के अनुसार कार्यों की उपलब्धता होनी चाहिए। सभी व्यक्तियों को समान अवसर व समान व्यवहार उपलब्ध होना चाहिए। उनके आदर्श समाज में जाति भेदभाव का तो नामोनिशान ही नहीं है। इस समाज में करनी पर बल दिया गया है , कथनी पर नहीं।

प्रश्न 10- आदर्श समाज की स्थापना में डॉक्टर आम्बेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर - लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित है। लेखक के आदर्श समाज में परिवर्तन का लाभ सभी को मिलेगा। ऐसे समाज में बहुविधि हितों में सबकी सहभागिता होगी। समाज के हित के लिए सभी सजग होंगे। सामाजिक जीवन में सबके लिए अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर मिलेंगे। समाज में भाईचारा दूध और पानी के मिश्रण के समान होगा। हर कोई अपने साथियों के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना रखेगा।

वितान

वर्णनात्मक प्रश्न (40 शब्दों में) 2 प्रश्न x 2 अंक = 4 अंक

प्रश्न 1: - यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

अथवा

'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए कि यशोधर बाबू समय के अनुसार क्यों नहीं ढल सके?

उत्तर : - यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं , इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं -

- यशोधर बाबू की पत्नी समय को अच्छी तरह पहचानती हैं। वह जानती है कि बच्चों की सहानुभूति तभी प्राप्त की जा सकेगी जब बच्चों की सोच के अनुसार चला जाए।
- यशोधर बाबू स्वयं को बदल नहीं पाते। वे सदैव किसी-न-किसी उलझन के शिकार हैं। वे सिद्धांतवादी हैं।
- वे संयुक्त परिवार, भारतीय परंपराओं को बनाए रखना चाहते हैं, परंतु परिवार उन्हें निरर्थक मानता है।
- वे आधुनिक भौतिक वस्तुओं को बंधन मानते हैं। फलतः वे अलग-थलग हो जाते हैं।

प्रश्न 2 :- पाठ में 'जो हुआ होगा ' वाक्य की आप कितनी अर्थ छवियाँ खोज सकते / सकती हैं ? (या) जो हुआ होगा ' की दो अर्थ छवियाँ लिखिए।

उत्तर :- पाठ में 'जो हुआ होगा ' वाक्य की आप निम्नलिखित अर्थ छवियाँ खोज सकते हैं -

- पाठ में जो हुआ होगा ' वाक्य पहली बार तब आता है जब यशोधर किशन दा के किसी जाति-भाई से उनकी मौत का कारण पूछते हैं तो उत्तर मिलता है-जो हुआ होगा अर्थात पता नहीं, क्या हुआ। इसका अर्थ यह है कि किशन दा की मृत्यु का कारण जानने की इच्छा भी किसी में नहीं थी। इससे उनकी हीन दशा का पता चलता है।
- दूसरा अर्थ किशन दा ही उपयोग करते हैं। वे इसे अपनों से मिली उपेक्षा के लिए करते हैं। वे कहते हैं- "भाऊ सभी जन इसी 'जो हुआ होगा' से मरते हैं- गृहस्थ हों, ब्रहमचारी हों, अमीर हों, गरीब हों, मरते ' जो हुआ होगा ' से ही हैं । हाँ -हाँ, शुरू में और आखिर में, सब अकेले ही होते हैं। अपना कोई नहीं ठहरा दुनिया में, बस अपना नियम अपना हुआ " |

प्रश्न 3 :- 'समहाउ इप्रॉपर' वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं। इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या सबध बनता है ?

उत्तर :- **समहाउ इंप्रापर** का अर्थ है – कुछ-न-कुछ गलत जरूर है । यशोधर बाबू द्वारा इस वाक्यांश का प्रयोग करना वास्तव में आज की स्थिति का सच्चा वर्णन करना है। आज परिवार, समाज और राष्ट्र में कहीं-कहीं कुछ-न-कुछ गलत ज़रूर हो रहा है। फिर यशोधर बाबू जैसे सिद्धांतवादी लोगों के लिए ऐसी स्थिति को स्वीकारना सहज नहीं है। उनका तकियाकलाम निम्न संदर्भो में प्रयुक्त हुआ है|

* साधारण पुत्र को असाधारण वेतन मिलना
* दफ्तर में सिल्वर वैडिंग
* स्कूटर की सवारी पर
* अपनों से परायेपन का व्यवहार मिलने पर
* डीडीए फ्लैट का पैसा न भरने पर
* छोटे साले के ओछेपन पर
* शादी के संबंध में बेटी द्वारा स्वयं निर्णय लेने पर
* खुशहाली में रिश्तेदारों की उपेक्षा करने पर
* केक काटने की विदेशी परंपरा पर आदि।

इन संदर्भो से स्पष्ट होता है कि यशोधर बाबू समय के हिसाब से अप्रासंगिक हो गए

हैं, इस कारण वे उपेक्षित रह गए।

प्रश्न 4 :- वर्तमान समय में परिवार की सरंचना, स्वरूप से जुड़ आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामजस्य बैठा पाते है?

उत्तर :- यह कहानी आज के समय की पारिवारिक संरचना और उसके स्वरूप का सही अंकन करती है। आज की परिस्थितियाँ इस कहानी की मूल्य संवेदना को प्रस्तुत करती हैं। आज के परिवारों में सिद्धांत और व्यवहार का अंतर दिखाई देता है। आज के परिवारों में भी यशोधर बाबू जैसे लोग मिल जाते हैं जो चाहकर भी स्वयं को बदल नहीं सकते। दूसरे को बदलता देख कर वे क्रोधित हो जाते हैं। उनका क्रोध स्वाभाविक है क्योंकि समय और समाज का बदलना जरूरी है। समय परिवर्तनशील है और व्यक्ति को उसके अनुसार ढल जाना चाहिए। यह कहानी वर्तमान समय की पारिवारिक संरचना और स्वरूप को अच्छे ढंग से प्रस्तुत करती है।

प्रश्न 5: 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर यशोधर बाबू के अंतर्द्वंद्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं। वे आधुनिकता व प्राचीनता में समन्वय स्थापित नहीं कर पाते। नए विचारों को संशय की दृष्टि से देखते हैं। इस तरह वे ऑफ़िस व घर-दोनों से बेगाने हो जाते हैं। वे मंदिर जाते हैं। रिश्तेदारी निभाना चाहते हैं, परंतु अपना मकान खरीदना नहीं चाहते। वे अच्छे मकान में जाने को तैयार नहीं होते। वे बच्चों की प्रगति से प्रसन्न हैं, परंतु कुछ निर्णयों से असहमत हैं। वे सिल्वर वैडिंग के अयोजन से बचना चाहते हैं।

प्रश्न 6 :- "सिल्यर वेडिंग' कहानी के माध्यम से लेखक ने क्या सन्देश देने का प्रयास किया हैं ?

उत्तर :- इस कहानी में 'पीढी का अंतराल' सबसे प्रमुख है। यही मूल संवेदना है क्योंकि कहानी में प्रत्येक कठिनाई इसलिए आ रही है क्योंकि यशोधर बाबू अपने पुराने संस्कारों, नियमों और कायदों से बंधे रहना चाहते है और उनका परिवार, उनके बच्चे वर्तमान में जी रहे है जो ऐसा कुछ गलत भी नहीं है। यदि यशोधर बाबू थोड़े–से लचीले स्वभाव के हो जाते, तो उन्हें बहुत सुख मिलता और जीवन भी खुशी से व्यतीत करते ।
आती थी।

प्रश्न 7 :- यशोधर बाबू अपने रोल मॉडल किशन दा से क्यों प्रभावित हैं?

उत्तर :- यशोधर बाबू पर किशन दा का पूर्ण प्रभाव था, क्योंकि उन्होंने यशोधर बाबू को कठिन समय में सहारा दिया था। यशोधर पन्त भी उनकी हर बात का अनुकरण करते थे।चाहे ऑफ़िस का कार्य हो, सहयोगियों के साथ संबंध हों, सुबह की सैर हो, शाम को मंदिर जाना हो, पहनने-ओढ़ने का तरीका हो, किराए के मकान में रहना हो, रिटायरमेंट के बाद गाँव जाने की बात हो आदि- इन सब पर किशन दा का प्रभाव है। बेटे द्वारा ऊनी गाउन उपहार में देने पर उन्हें लगता है कि उनके अंगों में किशन दा उतर आए हैं।

प्रश्न 8 :- यशोधर पंत जी की तीन चारित्रिक विशेषताएँ सोदाहरण समझाड़ए ।

उत्तर :- यशोधर बाबू के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ है –

- **परम्परावादी** :- यशोधर बाबू परंपरावादी हैं। उन्हें पुराने रीति–रिवाज अच्छे लगते हैं। वे संयुक्त परिवार के समर्थक हैं। उन्हें पत्नी और बेटी का सँवरना अच्छा नहीं लगता। घर में भौतिक चीजों से उन्हें चिढ है ।

- **असंतुष्ट –** यशोधर असंतुष्ट प्रकृति के व्यक्ति हैं । उन्हें अपनी संतानों की विचारधारा पसंद नहीं। वे घर से बाहर जान...बूझकर रहते हैं। उन्हें बेटों का व्यवहार और बेटी का पहनावा अच्छा नहीं लगता। हँलाकि घर में उनसे कोई राय नहीं लेता।
- **रूढिवादी-** यशोधर पन्त जी कहानी के नायक हैं। वे सेक्शन अस्किसर हैं, परंतु नियमो से बँधे हुए। वे नए को ले नहीं सकते तथा पुराने को छोड़ नहीं सकते।

जूझ (आनंद यादव)

पाठ पर आधारित प्रश्न-

प्रश्न 1) जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

प्रश्न 2) स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

प्रश्न 3) श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रूचि जगाई।

प्रश्न 4) कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?

प्रश्न. 5) आपके खयाल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? तर्क सहित उत्तर दें।

प्रश्न. 6) दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेना पड़ता तो आगे का घटनाक्रम क्या होता? अनुमान लगाएँ।

पाठ पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1: जूझ का अर्थ है – संघर्ष। यह कथानायक के जीवन भर के संघर्ष को दर्शाती है। बचपन से अभावों में पला बालक, विपरीत परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सका। लगन,लक्ष्य प्राप्ति की इच्छा और मानसिक दृढ़ता से किसी भी परिस्थिति से जूझा जा सकता है।

कथानायक की चारित्रिक विशेषताएँ-

दृढ़ इच्छाशक्ति -- एक ओर पढ़ने के लिए पिता को दत्ता जी के माध्यम से मनाना तो दूसरी ओर पढने के साथ कविता रचने का भी साहस पा लेना कथानायक की दृढ़ इच्छाशक्ति को दर्शाता है।

पढ़ने की लगन- पुन पाठशाला जाने पर सहपाठियों के द्वारा परेशान किए जाने के बावजूद कक्षा के सबसे अच्छे छात्र बसंत पाटिल से प्रेरणा लेना उसकी पढ़ने की लगन को उजागर करता है।

उत्तर 2: स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में इस तरह पैदा हुआ कि उसे पढ़ाने वाले मराठी साहित्य के अध्यापक सौंदलगेकर जी कविता के ज्ञाता, रसिक व मर्मज्ञ थे।

वे कक्षा में गाकर कविता-पाठ करते थे तथा लय, छंद गति, आरोह-अवरोह आदि का ज्ञान कराते थे। कविता में आये भावों का अभिनय के द्वारा प्रस्तुतिकरण भी करते थे। उनसे प्रेरित होकर लेखक पहले तो कुछ तुकबंदी करने लगा। पर बाद में उसे प्रेरणा हुई कि वह अपने आस-पास के दृश्यों को देखकर, उन पर कविता बना सकता है। इस तरह धीरे-धीरे उनमें कविता रचने का आत्मविश्वास बढ़ने लगा। उसने एक कविता लिखकर उसे अपनी तरह से गाया और भाव भी प्रस्तुत किया। मास्टर जी उससे बहुत प्रभावित हुए और पूरे स्कूल के सामने उससे वह कविता प्रस्तुत करायी। इससे लेखक यानी आनंदा का हौसला बढ़ा। वह और गंभीरता से कविता रचने के काम में जुट गया।

उत्तर 3: श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की विशेषताओं इस प्रकार हैं, जिन्हों , जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रूचि जगाई-

1. मास्टर सौंदलगेकर कुशल अध्यापक, मराठी साहित्य के ज्ञाता व कवि थे।

2. वे सुरीले ढंग से स्वयं की व दूसरों की कविताएँ गाते थे।

3. पुरानी-नयी मराठी कविताओं के साथ-साथ उन्हें अनेक अंग्रेजी कविताएँ भी कंठस्थ थीं।

4. पहले वे कविता को गाकर सुनाते थे। फिर बैठे-बैठे अभिनय के साथ कविता का भाव ग्रहण कराते थे।

5. आनन्दा को कविता लिखने के प्रारम्भिक काल में उन्होंने उसका मार्गदर्शन किया। कविता में सुधार किया। उसका आत्मविश्वास बढ़ाया। इससे वह धीरे-धीरे कविताएँ लिखने में कुशल होकर प्रतिष्ठित कवि बन गया।

उत्तर 4: कविता के प्रति लगाव से पहले लेखक ढोर ले जाते समय, खेत में पानी डालते और अन्य काम करते समय अकेलापन बुरा लगता था। कविता के प्रति लगाव हो जाने के बाद वह खेतों में पानी देते समय, भैंस चराते समय कविताओं में खोया रहता और चाहता कि वह अकेला ही रहे। अकेलेपन से उसे ऊब न होती। अब उसे अकेलापन अच्छा लगने लगा था। वह अकेले में कविता गाता, अभिनय व नृत्य करता था।

उत्तर 5: मेरे खयाल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया ही सही था। लेखक के पिता तो शिक्षा के विरोधी थे। इस संबंध में मैं ये तर्क देना चाहता हूं-लेखक का मत है कि जीवन भर खेतों में काम करके कुछ भी हाथ आने वाला नहीं है। अगर मैं पढ़-लिख गया, तो कहीं मेरी नौकरी लग जाएगी या कोई व्यापार ही करके अपने जीवन को सफल बनाया जा सकता है। दत्ता जी को जब पता चलता है लेखक के पिता उसे पढ़ने से मना करते हैं, तो राव पिता जी को बुलाकर खूब डाँटते हैं। उनकी आवारगी पर फटकार भी लगाते हैं।फीस के पैसों के लिये अपने यहां आनंदा को कुछ काम करने का प्रस्ताव भी देते हैं।

उत्तर 6: दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को झूठ का सहारा लेना पड़ा। कभी-कभी अच्छे काम के लिये झूठ का भी सहारा लेना पड़ता है। अगर वे झूठ का सहारा न लेते और सच बता देते कि उन्होंने दत्ता जी राव से पिता को बुलाकर लेखक को स्कूल भेजने के लिए कहा है, तो लेखक के पिता दत्ता राव के घर कभी न जाते।संभव है कि वे माँ-बेटे की पिटाई भी कर देते। लेखक को खेती में ही झोंके रखते और लेखक का जीवन बरबाद हो जाता।

3. ओम थानवी (अतीत में दबे पाँव)

प्रश्न 1.'सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य-बोध है जो राज पोषित या धर्म पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया?

उत्तर. उस काल के लोगो मे कला के प्रति सुरुचि बहुत अधिक थी | जो उस काल के मनुष्यों की दैनिक प्रयोग की वस्तुओं में स्पष्ट दिखाई देती है | यथा वहाँ की वास्तु कला तथा नियोजन धातु व पत्थर की मूर्तियाँ ,मिट्टी के बरतन और उन पर बने चित्र, वनस्पति और पशु -पक्षियो की छवियाँ , मोहरे उन पर उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश - विन्यास, आभूषण, सुघड़ लिपियाँ इस सभ्यता के सौंदर्य बोध को प्रदर्शित करती है जो पूरी तरह राज पोषित ,धर्म पोषित न हो कर समाज पोषित है | मुअनजोदड़ो की खुदाई में एक दाढ़ी वाले नरेश की छोटी मूर्ति मिली है परन्तु यह मूर्ति किसी राजतन्त्र या धर्मतंत्र का प्रमाण नहीं कही जा सकती | सिन्धु सभ्यता की यही खूबी है की उसका सौन्दर्यबोध समाज पोषित है न की धर्मपोषित |

प्रश्न 2. टूटे फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज़ होते हैं -इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए |

उत्तर.i. पूरा अवशेष उस संस्कृति की रहन सहन व्यवस्था के साथ ही उन पूर्वजो के जीवन संदर्भों से परिचित कराती है |
ii. हम कल्पना के सहारे उस समय मे प्रवेश कर उस काल खंड की अनुभूति प्राप्त करते है |
iii. खंडहरों से उस सभ्यता की प्रामाणिकता सिद्ध होती है |

प्रश्न 3. अतीत मे दबे पाँव में वर्णित महाकुंड का वर्णन कीजिए -

उत्तर :- मोहनजोदड़ो मे प्राप्त महाकुंड की लंबाई 40 फुट ,चौड़ाई 25 फुट तथा गहराई 7 फुट है | कुंड मे उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती है |इसमे आठ स्नानागार हैं, यह अदवितीय वास्तु कौशल का अनुपम उदाहरण है | कुंड के तीन तरफ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं | कुंड के तल और दीवारों पर पक्की ईंटों के बीच में चूने और चिरोडी के गारे का इस्तेमाल हुआ है | कुंड में पानी ले जाने और निकालने की व्यवस्था है। इस कुंड को पवित्र मानते हुए आनुष्ठानिक कार्यों में इसके जल का इस्तेमाल होता था।

प्रश्न 4. सिन्धु सभ्यता साधन सम्पन्न थी पर उसमें भव्यता का आडम्बर नहीं था- प्रस्तुत कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उत्तर :- दूसरी सभ्यताएं राजतन्त्र और धर्म तंत्र द्वारा संचालित थी | वहां बड़े-बड़े सुन्दर महल, पूजा स्थल, भव्य मूर्तियाँ, पिरामिड और मंदिर मिलते हैं | राजाओं, धर्मगुरुओं की समाधियाँ भी मिलती हैं | परंतु इस सभ्यता में इस तरह के कोई प्रमाण नहीं मिलते है |यह एक साधन संपन्न सभ्यता थी किन्तु उसमें राजसत्ता या धर्मसत्ता के चिह्न नहीं मिलते | वहाँ की नगर योजना, वास्तुकला, मुहरें, ठप्पों, जल व्यवस्था, साफ़ सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता में अनुशासन देखा जाता है |खुदाई में छोटी छोटी मूर्तियाँ, खिलौने, मृदभांड, नावें आदि मिली हैं इस प्रकार स्पष्ट है कि सिन्धु सभ्यता संपन्न थी परन्तु उसमें भव्यता का आडम्बर नहीं था |

प्रश्न 5. सिन्धु सभ्यता को जल संस्कृति भी कहा जा सकता है ?कारण सहित उत्तर दीजिए |

उत्तर :- सिन्धु सभ्यता एक जल संस्कृति थी |सामूहिक स्नान के लिए बने स्नानागार वास्तुकला के उदाहरण हैं | घर के भीतर का पानी नालियों के माध्यम से हौदी में आता था फिर बड़ी नालियों में जाता था | नालियाँ ऊपर से ढकी रहती थी | जल निकासी का प्रबंध था | नगर में कुओं का भी प्रबंध था | ये कुएँ पक्की ईंट से बने थे | यह सभ्यता विश्व में पहली जल संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँचे | मुअनजोदड़ो में सात-सौ कुएँ थे | यहाँ का महाकुंड लगभग 40 फीट लम्बा 25 फीट चौड़ा था | इस प्रकार पानी की व्यवस्था सभ्य समाज की पहचान है |

प्रश्न 6. मुअनजोदड़ो की गृह निर्माण योजना पर संक्षिप्त में प्रकाश डालिए ?

उत्तर:- नगर की मुख्य सड़क के दोनों ओर घर हैं, परन्तु किसी भी घर का मुख्यद्वार सड़क पर नहीं खुलता | घर में जाने के लिए मुख्य सड़क से गलियों में जाना पड़ता है |सभी घरों में जल निकासी की व्यवस्था है | घर पक्की ईंटों के बने हैं | छोटे घरों में खिड़कियाँ नहीं हैं परन्तु बड़े दुर्गों में खिड़कियाँ एवं रोशनदान बने हुए हैं | सब घर कतार में बने हैं | नगर में बस्तियों की व्यवस्था भी बड़ी ही सुंदर है | छोटे व कामगार लोगों की बस्तियाँ सिन्धु के किनारे पर बनी थी और बड़े लोगों की बस्तियाँ ऊपर के दुर्गों पर बनी हुई थी | देखा जाए तो इस प्रकार की नगर रचना आज के समय में भी दुर्लभ है |